● वर्ष-4
● अंक-48
रायपुर, गुरुवार
03 अक्टूबर 2024
● पृष्ठ-8
● मूल्य-3 रु.
samacharpacheesa@gmail.com

।। संगच्छध्वम् संवदध्वम् ।।

समाचार पचीसा

राजनीति का जनपक्षकार

आज से शारदीय नवरात्र

पश्चिम एशिया में चरम पर तनाव

हिजबुल्ला-ईरान से टकराव के बीच नेतन्याहू की बैठक

तेल अवीव। पश्चिम एशिया में बढ़ते तनाव के बीच इस्राइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने बुधवार को तेल अवीव के किरिया में सुरक्षा प्रतिष्ठान के प्रमुखों के साथ एक बैठक की। यह बैठक ऐसे समय में हुई है, जब ईरान की ओर से करीब 200 बैलिस्टिक मिसाइलें इस्राइल पर दागी गई हैं और क्षेत्र में तनाव चरम पर है।

इस्राइली प्रधानमंत्री कार्यालय ने एक्स एक पोस्ट में कहा कि प्रधानमंत्री नेतन्याहू ने आज दोपहर सुरक्षा प्रतिष्ठान के प्रमुखों के साथ चर्चा की। अमेरिकी नौसेना के विध्वंसक (डेस्ट्रॉयर) इस्राइली वायु सेना के साथ मिलकर इन मिलकर ईरानी मिसाइलों को इंटरसेप्ट करने के लिए सक्रिय हो गए हैं। प्रधानंत्री नेतन्याहू ने ईरान के मिसाइल हमले को लेकर कहा कि उसने बड़ी गलती कर दी है और उसे इसका खामियाजा भुगतना पड़ेगा। इस्राइल रक्षा बल (आईडीएफ) के प्रवक्ता एडमिरल डैनियल हगारी ने ईरान के हमले ने तनाव को गंभीर और खतरनाक स्तर तक बढ़ा दिया है। उन्होंने कहा, इसके परिणाम भुगतने होंगे। हम जब, जहां और जिस तरह से चाहेंगे, प्रतिक्रिया देंगे। अब यह इस्राइल सरकार तय करेगी। वहीं, ईरान की ओर से इस्राइल पर हमले के एक दिन बाद आईडीएफ ने दक्षिण लेबनान के दो दर्जन गांवों के लोगों को तुरंत अपने घरों को छोड़ने का आह्वान किया है। आईडीएफ के अरबी भाषा के प्रवक्ता कर्नल अविचय अद्राई ने एक बयान में कहा, हिजबुल्ला की गतिविधियां आईडीएफ को इसके खिलाफ कार्रवाई करने के लिए मजबूर कर रही हैं। आईडीएफ आपको नुकसान नहीं पहुंचाना चाहती। अपनी सुरक्षा के लिए आपको तुरंत अपने घर खाली करने चाहिए। जो कोई भी हिजबुल्ला के ऑपरेटिव, उनके स्थलों या उनके हथियारों के करीब हैं, वह अपने आपको जोखिम में डाल सकता है। आईडीएफ सेना ने दक्षिण लेबनान के 28 अन्य गांवों के लिए भी इसी तरह के आदेश जारी किए थे।

एक्शन में भारत, अलर्ट मोड पर रहेः भारतीय दूतावास

भारतीयों के लिए विदेश मंत्रालय की तरफ से एडवाइजरी जारी की गई है। एमईए ने ट्वीट करते हुए भारतीयों को ईरान न जाने की सलाह दी है। इससे पहले इजरायल के लिए भारत ने एडवाइजरी जारी की थी। अब ईरान में जो भारतीय रह रहे हैं उनके लिए भी अलर्ट जारी किया गया है। इस एडवाइजरी में उन्होंने कहा है कि भारतीय दूतावास के संपर्क में आप लगातार रहे। इसी के साथ साथ ईरान में जो भारतीय रहे हैं इस वक्त अलर्ट मोड पर रहे। इसके साथ ही कहा गया है कि जो भारतीय ईरान जाना चाहते हैं वो इस वक्त न जाएं। विदेश मंत्रालय द्वारा जारी बयान के अनुसार कहा गया कि हम क्षेत्र में सुरक्षा स्थिति में हालिया वृद्धि पर बारीकी से नजर रख रहे हैं। भारतीय नागरिकों को ईरान की सभी गैर-जरूरी यात्रा से बचने की सलाह दी जाती है।

महात्मा गांधी के सपनों को पूरा कर रहे हैं मोदीः साय

रायपुर। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने कहा है कि महात्मा गांधी का सपना था कि जनजातीय समुदाय विकास की मुख्य धारा में शामिल हो और तरक्की करें। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, महात्मा गांधी के इन्हीं सपनों को पूरा कर रहे हैं। मुख्यमंत्री साय ने उक्त बातें धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान के शुभारंभ अवसर पर वर्चुअली जुड़कर कही।

यहां यह उल्लेखनीय है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा आज महात्मा गांधी की जयंती के अवसर पर झारखण्ड के हजारीबाग से देश के जनजातीय इलाकों एवं जनजातियों के उत्थान के लिए धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान का शुभारंभ किया गया। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय इस कार्यक्रम में बलरामपुर-रामानुजगंज जिले के राजपुर से वर्चुअली शामिल हुए। मुख्यमंत्री ने इस मौके पर उक्त अभियान के देशव्यापी शुभारंभ पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को छत्तीसगढ़ के जनजातीय समुदाय की ओर से धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा कि इससे छत्तीसगढ़ के जनजातीय समुदाय भी लाभान्वित होंगे और उनके जीवन में नया बदलाव आएगा। मुख्यमंत्री साय ने कहा कि धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान के माध्यम से 80 हजार करोड़ रुपए का प्रावधान कर 65 हजार से ज्यादा गाँव और 5 करोड़ से अधिक जनजातीय लोगों के कल्याण के लिए कदम बढ़ाया है। इससे छत्तीसगढ़ के 32 जिलों के 138 विकासखण्ड़ों में स्थित 6691 गाँवों में रहने वाली 47 लाख की आबादी को लाभ मिलेगा। उन्होंने कहा कि आज छत्तीसगढ़ और जशपुर जिले के लिए गौरव का दिन है कि जशपुर जिले के बगीचा ब्लॉक की आदिवासी महिला मानकुंवर बाई को प्रधानमंत्री ने बातचीत के लिए अपने कार्यक्रम में आमंत्रित किया है। मुख्यमंत्री साय ने कहा कि प्रधानमंत्री ने 15 अगस्त 2014 को स्वच्छ भारत मिशन की घोषणा की और घर-घर शौचालय निर्माण कराया। उन्होंने इसे महिलाओं के सम्मान से जोड़ा। इन शौचालयों को कई राज्यों में इज्जत घर के रुप में जाना जाता है। उन्होंने कहा कि देश के पूर्व प्रधानमंत्री अटल विहारी बाजपेयी ने जनजातीय समाज के विकास के लिए अलग राज्य का निर्माण किया और अलग से जनजाति मंत्रालय का गठन और अनुसूचित जनजाति आयोग का गठन किया।

192 करोड़ के विकास कार्यों का लोकार्पण-शिलान्यास

मुख्यमंत्री ने बलरामपुर-रामानुजगंज के राजपुर में आयोजित कार्यक्रम में 192 करोड़ रुपए से अधिक की लागत वाले विकास एवं निर्माण कार्यों का शिलान्यास एवं लोकार्पण किया। इस मौके पर उन्होंने हितग्राहियों को पीएम आवास की चाबी, श्रम पंजीयन कार्ड अंतर्गत हितग्राहियों को चेक, वन अधिकार पट्टा, आपदा पीड़ितों को सहायता राशि, टीबी मुक्त घोषित 3 ग्रामों को प्रमाण पत्र, ट्रैक्टर, पशुधन विकास विभाग अंतर्गत दो हितग्राहियों को चेक प्रदान किया गया।

राजपुर में लिंक कोर्ट सहित कई घोषणाएं

मुख्यमंत्री साय ने सांसद एवं विधायकगणों के आग्रह पर बलरामपुर-रामानुजगंज जिले के लिए अनेक विकास कार्यों की घोषणा की। उन्होंने नरसिंहपुर से मरकाडाड़ के मध्य महान नदी में पुल निर्माण, हायर सेकंडरी स्कूल राजपुर के लिए नवीन भवन का निर्माण, राजपुर ब्लॉक में उफिया में चन्दर मुसखोर नाला में पुलिया निर्माण तथा राजपुर में अपर कलेक्टर लिंक कोर्ट प्रारंभ करने की घोषणा की।

बिलासपुर और सरगुजा संभाग में कर्मा महोत्सव

मुख्यमंत्री ने क्षेत्र में पंडो जनजाति की बहुलता को देखते हुए पंडो जनजाति के लिए 50-50 सीटर बालक-बालिका छात्रावास निर्माण की घोषणा की और बिलासपुर और सरगुजा संभाग में प्रतिवर्ष कर्मा महोत्सव का आयोजन कराए जाने की घोषणा की।

छत्तीसगढ़ में खादी वस्त्रों की खरीद पर मिलेगी 25% की बड़ी छूट

छत्तीसगढ़ में खादी वस्त्रों की खरीद पर 25% की बड़ी छूट मिलेगी। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने आज गांधी जयंती के अवसर पर यह बड़ी घोषणा की। मुख्यमंत्री राजधानी रायपुर के पंडित दीनदयाल उपाध्याय ऑडिटोरियम में आयोजित खादी एवं ग्रामोद्योग विभाग की प्रदर्शनी का अवलोकन करने के बाद पत्रकार वार्ता को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री ने इस दौरान स्थानीय बुनकरों द्वारा तैयार गोदना आर्ट वाली कोसा की साड़ी भी खरीदी। मुख्यमंत्री साय ने कहा की 02 अक्टूबर से लेकर 31 मार्च 2025 तक खादी वस्त्रों की खरीद पर प्रदेशवासियों को 25त्न की बड़ी छूट मिली मिलेगी। उन्होंने प्रदेशवासियों से खादी वस्त्र खरीदने की अपील की और छूट का लाभ लेने को कहा। श्री साय ने कहा कि बुनकर-कलाकार बहुत मेहनत से खादी वस्त्र तैयार करते हैं और उस पर तरह-तरह की कलाकृतियां भी उकेरते हैं। कई मायनों में यह हमें अपनी संस्कृति से भी जोड़े रखता है। उन्होंने कहा कि देश में खादी वस्त्रों के उपयोग की लंबी परंपरा रही है। आजादी की लड़ाई के दौर में हमें खादी वस्त्रों के उपयोग का जिक्र मिलता है। कारीगर बहुत मेहनत से इन वस्त्रों को तैयार करते हैं और गांधी जयंती के खास मौके पर आप सभी के लिए यह बड़ी छूट की घोषणा हुई है, आप सभी इसका लाभ उठाएं।

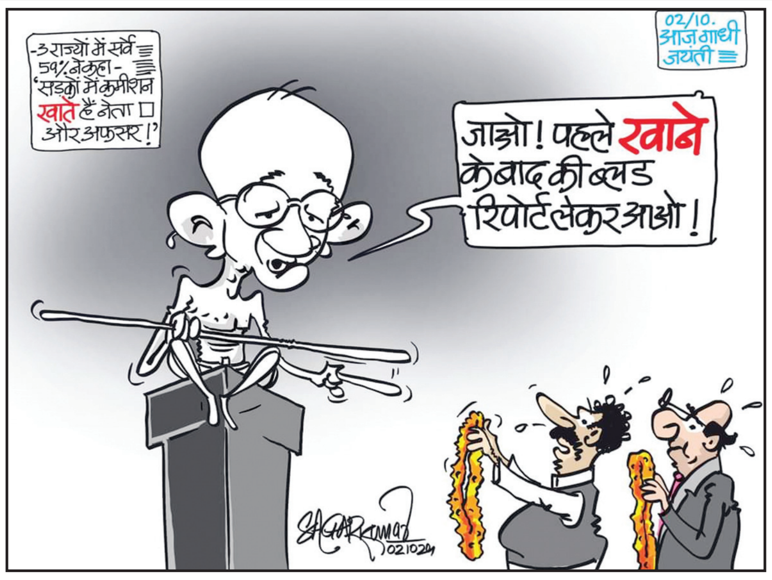

अखबार में रोड पर थूकने वालों की छापनी चाहिए फोटो-नितिन

नागपुर। केंद्रीय सड़क एवं परिवहन मंत्री नितिन गडकरी ने पान मसाला, गुटखा खाने और सड़क पर थूकने वालों से निपटने के लिए एक अनोखा आइडिया दिया। गडकरी ने कहा कि पान, मसाला और गुटखा खाकर सड़क पर थूकने वालों की फोटो खींचकर अखबार में छपवाई जाए। गडकरी गांधी जयंती पर स्वच्छ भारत को लेकर नागपुर नगर निगम द्वारा आयोजित एक कार्यक्रम में बोल रहे थे। इसके अलावा, गडकरी ने सार्वजनिक स्थानों पर गंदगी करने वालों के बारे में भी बात की। उन्होंने कहा कि हमारे देश के लोग बहुत होशियार हैं, चॉकलेट खाते हैं और उसके रैपर सड़कों पर फेंक देते हैं और वही व्यक्ति जब विदेश जाता है तो चॉकलेट का रैपर अपनी जेब में रखता है, विदेश में अच्छा व्यवहार करता है और यहां सड़क पर फेंक देता है। गडकरी ने अपना उदाहरण देते हुए कहा कि वह आजकल जब भी चॉकलेट खाते हैं तो घर पहुंचने के बाद चॉकलेट का रैपर फेंक देते हैं. पहले उसे शराब पीने के बाद उसका रैपर बाहर फेंकने की भी आदत थी।

पीएम मोदी के नेतृत्व वाली सरकार ने गांधी जयंती को स्वच्छ भारत के प्रतीक दिवस के रूप में समर्पित किया है। हर साल, सरकार और अन्य राज्य संस्थान इसके आसपास स्वच्छता अभियान (स्वच्छता अभियान) या कार्यक्रम आयोजित करते हैं। पीएम मोदी आज पंडारा पार्क के एक स्कूल पहुंचे और झाड़ू लगाकर इलाके में सफाई की।

प्रमुख समाचार

एक सप्ताह की देरी से वापस लौटा दक्षिण-पश्चिम मानसून

नई दिल्ली । दक्षिण-पश्चिम मानसून की दिल्ली समेत आठ राज्यों से बुधवार को विदाई हो गई। खास बात यह रही कि इस बार मेघ जमकर बरसे। मौसम विभाग के मुताबिक इस सीजन में सामान्य से अधिक बारिश दर्ज की गई। दिल्ली में सामान्य 640.3 मिमी की तुलना में 1029.9 मिमी वर्षा दर्ज की गई। अमूमन उत्तर पश्चिम भारत से मानसून की वापसी 17 सितंबर से होने लगती है। इसके एक सप्ताह बाद मानसून दिल्ली से विदा होने लगता है। मगर इस बार दिल्ली से मानसून की देरी से वापसी हुई है। मौसम विज्ञान विभाग ने कहा कि दक्षिण पश्चिम मानसून जम्मू-कश्मीर, लद्दाख, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, पंजाब, हरियाणा दिल्ली और राजस्थान से वापस चला गया है। पश्चिमी उत्तर प्रदेश, पश्चिमी मध्य प्रदेश और पूर्वी राजस्थान के कुछ हिस्से और पश्चिमी राजस्थान के कुछ और हिस्से से भी मानसून विदा हो गया। आईएमडी के महानिदेशक मृत्युंजय महापात्रा ने कहा कि अगस्त और सितंबर में गहरे कम दबाव के क्षेत्र बनने के कारण मानसून सत्र में देश में लगभग आठ फीसदी अधिक बारिश हुई है। आधिकारिक तौर पर दक्षिण पश्चिम मानसून सत्र का समापन सोमवार को हो गया।

अजित ने मुस्लिमों को दिया 10 फीसदी टिकिट का आश्वासन

मुंबई। महाराष्ट्र में विधानसभा चुनाव से पहले एनसीपी-एपी प्रमुख अजीत पवार ने महायुति सीट बंटवारे के बाद अल्पसंख्यकों को 10 प्रतिशत टिकट देने की घोषणा की। महाराष्ट्र के बीड में एक सार्वजनिक बैठक को संबोधित करते हुए पवार ने यह घोषणा की। अपने संबोधन के दौरान पवार ने कहा कि इस बार होने वाले चुनाव के संबंध में मैं अपने अल्पसंख्यक समुदाय को बताना चाहता हूं कि महायुति के सीट बंटवारे में एनसीपी को जो भी सीटें मिलेंगी, उनमें से 10 फीसदी मैं अल्पसंख्यक समुदाय को दूंगा। अपना बयान देते हुए उन्होंने बीजेपी विधायक नीतीश राणे पर निशाना साधते हुए कहा कि मैंने यह फैसला लिया है। मैं सभी जातियों और धर्मों को मानने वाले शिव-शाहू फुले का समर्थक हूं। डिप्टी सीएम देवेंद्र फडणवीस ने सोमवार को दावा करते हुए कहा कि हालिया लोकसभा चुनाव में महाराष्ट्र की 48 लोकसभा सीटों में से 14 में वोट जिहाद देखा गया।

स्वच्छ भारत को जनता ने अपना निजी लक्ष्य बना लियाः मोदी

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि आज के इस महत्वपूर्ण पड़ाव पर आज स्वच्छता से जुड़े करीब 10 हजार करोड़ रुपए के प्रोजेक्ट्स की भी शुरुआत हुई है। मिशन अमृत के तहत देश के अनेक शहरों में वॉटर और सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट बनाए जाएंगे। नमामि गंगे से जुड़ा काम हो या फिर कचरे से बायोगैस पैदा करने वाले गोबरधन प्लांट, ये काम स्वच्छ भारत मिशन को एक नई ऊंचाई पर ले जाएगा। स्वच्छ भारत मिशन जितना सफल होगा, उतना ही हमारा देश ज्यादा चमकेगा। आज से 1 हजार साल बाद भी जब 21वीं सदी के भारत का अध्ययन होगा, तो उसमें स्वच्छ भारत अभियान को जरूर याद किया जाएगा। स्वच्छ भारत मिशन इस सदी में दुनिया का सबसे बड़ा और सबसे सफल जनभागीदारी वाला, जन नेतृत्व वाला जन आंदोलन है। स्वच्छ भारत अभियान सिर्फ साफ सफाई का कार्यक्रम ही नहीं है, इसका दायरा व्यापक रूप से बढ़ रहा है। अब स्वच्छता संपन्नता का नया रास्ता बन रही है। स्वच्छ भारत अभियान से देश में बड़े पैमाने पर रोजगार भी बन रहे हैं। स्वच्छता ही सेवा 2024 कार्यक्रम में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा, जिस भारत का सपना गांधी जी और देश की महान विभूतियों ने देखा था, वो सपना हम सब मिलकर पूरा करें.

यूएई के राजदूत के आवास पर हमले से भारत चिंतित

नई दिल्ली। खार्तूम में संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) के राजदूत के आवास पर हमले के बाद सूडान में बढ़ते तनाव पर विदेश मंत्रालय ने कहा कि भारत क्षेत्र में सुरक्षा हालात पर नजर रख रहा है। मंत्रालय ने यूएई राजदूत के आवास पर हमले पर चिंता जताई और कहा कि किसी भी संघर्ष में राजनयिक परिसर की अखंडता का सम्मान किया जाना चाहिए। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने एक बयान में कहा कि हम सूडान में सुरक्षा स्थिति पर नजर रख रहे हैं। किसी भी संघर्ष में राजनयिक परिसर की अखंडता का सम्मान किया जाना चाहिए और खार्तूम में यूएई के राजदूत के आवास पर हमले की रिपोर्ट गंभीर चिंता का विषय है। इस हफ्ते की शुरुआत में यूएई ने कहा था कि खार्तूम में उसके राजदूत के आवास पर सूडानी सैन्य विमान द्वारा हमला किया गया। अबू धाबी ने इसे जघन्य हमला बताते हुए इसकी निंदा की। सूडान की सैन्य सरकार ने आरोपों का खंडन किया और प्रतिद्वंद्वी अर्धसैनिक रैपिड सपोर्ट फोर्स (आरएसएफ) पर निशाना साधा। जून में सूडान के राजदूत ने संयुक्त राष्ट्र (यूएन) में यूएई पर आरोप लगाया था कि वह आरएसएफ को वित्तीय और सैन्य सहायता प्रदान कर रहा है और यही मदद इस युद्ध के लंबे समय तक चलने की मुख्य वजह है।

दिल्ली में सबसे बड़े ड्रग बस्ट में 2,000 करोड़ की कोकीन जब्त

नई दिल्ली। दिल्ली पुलिस ने आज राष्ट्रीय राजधानी में सबसे बड़े मादक पदार्थ भंडाफोड़ में लगभग 2,000 करोड़ रुपये मूल्य की 560 से अधिक कोकीन जब्त की है। पुलिस ने बताया कि मादक पदार्थ दक्षिण दिल्ली में बरामद किया गया और इस मामले में चार लोगों को गिरफ्तार किया गया है। अधिकारियों को संदेह है कि यह एक अंतरराष्ट्रीय ड्रग सिंडिकेट है जिसे नई दिल्ली में अफगान नागरिकों द्वारा चलाया जा रहा था। यह मादक पदार्थ भंडाफोड़ ऐसे समय में हुआ है जब कुछ ही दिन पहले दो अन्य अफगान नागरिकों को कथित तौर पर एक सिंडिकेट चलाने के आरोप में गिरफ्तार किया गया था। दोनों को शनिवार को तिलक नगर में छापेमारी के दौरान पकड़ा गया। पुलिस ने दो आरोपियों – हाशिमी मोहम्मद वारिस और अब्दुल नायब के कब्जे से 400 ग्राम हेरोइन और 160 ग्राम कोकीन बरामद की। वारिस जनवरी 2020 से शरणार्थी के तौर पर भारत में रह रहे हैं। उनका परिवार अफ़गानिस्तान में है। भारत आने के बाद उन्होंने विकासपुरी में एक केमिस्ट की दुकान में हेल्पर के रूप में काम किया।

राज्यपाल एवं राज्य सरकारों के बीच टकराव

चन्द्र शेखर गंगराड़े

जब-जब केंद्र एवं राज्यों में अलग-अलग दलों की सरकारें रहती हैं तब-तब अक्सर राज्यपाल एवं राज्य सरकार के बीच टकराव के समाचार सुनने में आते रहते हैं. राज्यपाल केंद्र के प्रतिनिधि के रूप में राज्य में राष्ट्रपति के प्रसाद पर्यन्त पद धारित करते हैं। जब केंद्र एवं राज्यों में एक ही दल की सरकारें होती थीं तब ऐसा कोई टकराव नहीं होता था लेकिन वर्ष 1967 के बाद जब से राज्यों में अलग-अलग दलों की सरकारें बनने लगीं तब से राज्यपाल की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण हो गई और केंद्र सरकार राज्यपाल के माध्यम से राज्य सरकारों पर नियंत्रण का प्रयास करती रही हैं। इसी कारण अनुच्छेद 356 का उपयोग करते हुए कई राज्य सरकारों को बर्खास्त किया गया लेकिन जब धारा 356 का उपयोग बहुत ज्यादा होने लगा तब इस प्रवृत्ति का विरोध होने लगा और राज्यपालों की भूमिका का निर्धारण करने के लिए सरकारिया आयोग का गठन वर्ष 1983 में किया गया और उसने अपना प्रतिवेदन वर्ष 1987 में प्रस्तुत किया. जिसमें राज्यपालों की भूमिका, कर्तत्व्य और दायित्व आदि के संबंध में मार्गदर्शी सिद्धांत निर्धारित किये गए और सरकारिया आयोग की सिफारिशों के बाद ही राज्य सरकारों को बर्खास्त करने के मामले कम होने लगे. उत्तरप्रदेश में तो फरवरी 1998 में तत्कालीन राज्यपाल श्री रोमेश भंडारी द्वारा उस समय के मुख्यमंत्री श्री कल्याण सिंह को बर्खास्त कर दिया था और जगदंबिका पाल को मुख्यमंत्री नियुक्त कर दिया था तब माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने दखल देते हुए दो दिन के भीतर विधानसभा में कैमरे की निगरानी में मत विभाजन का निर्देश दिया और कहा कि दोनों में से जो जीतेगा उसे मुख्यमंत्री माना जाएगा तब तक के लिए दोनों मुख्यमंत्री बने रहेंगे। अंततः श्री कल्याण सिंह को अधिक वोट मिले और वे मुख्यमंत्री पद पर काबिज बने रहे।

हाल ही में तमिलनाडु, केरल, पंजाब, पश्चिम बंगाल,कर्नाटक तथा दिल्ली में राज्यपालों और वहां की सरकारों के बीच लगातार टकराव की काफी खबरें आ रही हैं. जहां राज्यपाल, राज्य सरकार द्वारा पारित विधेयकों को अनुमति नहीं दे रहे हैं. इस कारण राज्य सरकारों को माननीय सर्वोच्च न्यायालय की शरण लेनी पड़ रही है. पंजाब के मामले में माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने 23 नवंबर 2023 को अपने फैसले में कहा कि यदि राज्यपाल किसी विधेयक पर सहमति रोक रहे हैं तो उन्हें विधेयक को विधान सभा को वापस करना होगा और वे विधेयक को अनिश्चित काल के लिए अपने पास रोककर नहीं रख सकते. यहां तक कि पंजाब में और पश्चिम बंगाल में तो राज्य विधान सभा का सत्र आहूत करने में भी अवरोध की स्थिति उत्पन्न हुई, जिससे संवैधानिक संकट की स्थिति भी निर्मित हो रही है. पश्चिम बंगाल में तो राज्यपाल और सरकार के बीच टकराव पर माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने यह टिप्पणी भी की कि कई विषयों को राज्यपाल और मुख्यमंत्री के बीच सुलझाने की आवश्यकता है और उन्होंने यह सलाह भी दी कि राज्यपाल मुख्यमंत्री के साथ बैठकर उन चीजों को हल करें जिनमें कोई परेशानी है.

पश्चिम बंगाल विधान सभा का सत्र तो बिना राज्यपाल की अनुमति के आहूत किया गया जबकि विधान सभा का सत्र संविधान के अनुच्छेद 174 के तहत राज्यपाल ही विधान सभा सत्र को आहूत करने का आदेश देते हैं।

विगत दिनों पश्चिम बंगाल में एक और संवैधानिक संकट खड़ा हुआ. उपचुनाव में निर्वाचित दो विधायकों को शपथ दिलाई जानी थी जिन्हें राज्यपाल ने राजभवन में शपथ दिलाने का निर्णय किया लेकिन उन सदस्यों ने राजभवन में शपथ लेने से इंकार कर दिया और विधान सभा में ही शपथ लेने पर अड़े रहे. संविधान के अनुच्छेद 188 में यह प्रावधान है कि राज्यपाल किसी व्यक्ति विशेष को शपथ दिलाने के लिए अधिकृत कर सकते हैं और उन्होंने विधान सभा उपाध्यक्ष को अधिकृत भी किया लेकिन विधान सभा उपाध्यक्ष ने विधान सभा अध्यक्ष के रहते शपथ दिलाने में असमर्थता व्यक्त की और विधान सभा अध्यक्ष ने 5 जुलाई, 2024 को विधान सभा में शपथ दिला दी. जिस पर राज्यपाल ने आपत्ति दर्ज करवाई और इस संबंध में राष्ट्रपति को रिपोर्ट भी प्रेषित की है. हालांकि इस घटनाक्रम के संबंध में विधान सभा अध्यक्ष ने राष्ट्रपति को हस्तक्षेप करने के लिए पत्र भी लिखा।

पश्चिम बंगाल में तो राज्यपाल एवं राज्य सरकार के बीच जंग जैसी स्थिति निर्मित हो गई है. जहां राज्यपाल ने राज्य सरकार की मुख्यमंत्री के विरूद्ध मानहानि का वाद दायर किया, वहीं राज्यपाल ने राज्य सरकार की पुलिस का राज भवन में प्रवेश प्रतिबंधित कर दिया. संविधान के अनुच्छेद 154 में यह प्रावधान है कि राज्य की कार्यपालिका शक्ति राज्यपाल में निहित होगी और वह उसका प्रयोग संविधान के अनुरूप स्वयं या अपने अधीनस्थ अधिकारियों के द्वारा करेगा वहीं अनुच्छेद 163 के तहत उसे अपने स्वविवेक से भी कार्य करने का अधिकार प्राप्त है और इसी स्वविवेक का अधिकार और मुख्यमंत्री की सलाह पर कार्य करने के प्रावधान, ये दोनों ही इनके बीच टकराव का महत्वपूर्ण कारण हैं. एक अन्य मामले में जब तमिलनाडु के एक मंत्री एम.आर. पोनमुडी को सजा होने पर माननीय सर्वोच्च न्यायालय द्वारा रोक लगाने के बावजूद राज्यपाल उन्हें मंत्रिपरिषद में शामिल नहीं कर रहे थे तो माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने 21 मार्च, 2024 को राज्यपाल के इस कृत्य पर उन्हें फटकार लगाई.

तमिलनाडु में ही जब राज्य विधान सभा द्वारा वर्ष 2020 से 2023 के मध्य पारित विधेयकों को राज्यपाल की अनुमति के लिए भेजा और राज्यपाल ने दिनांक 13 नवंबर, 2023 को उसे पुनर्विचार के लिए विधान सभा को वापस किया और विधान सभा ने पुन दिनांक 18 नवंबर, 2023 को उन विधेयकों को यथावत पारित कर राज्यपाल को अनुमति के लिए भेजा और राज्यपाल ने उन्हें अपने पास लंबित रखने का उल्लेख दिनांक 28 नवंबर, 2023 को किया और उन्हें राष्ट्रपति के पास भेज दिया तो राज्य सरकार ने माननीय सर्वोच्च न्यायालय में याचिका दायर की जिस पर माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने यह टिप्पणी की कि राज्यपाल को विधान सभा द्वारा पुन पारित 10 विधेयकों को रोकने का कोई विवेकाधिकार नहीं है. यहां तक कि माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने 1 दिसंबर, 2023 को सुनवाई के दौरान यह टिप्पणी भी की कि विधान सभा द्वारा पुन पारित विधेयक को राष्ट्रपति की अनुमति के लिए आरक्षित नहीं रखा जा सकता. चूँकि राज्यपाल का पद एक संवैधानिक पद है और राज्यपाल राज्य की कार्यपालिका का प्रमुख भी होता है तो यह प्रयास होना चाहिए की विवादित मुद्दों पर आपस में विचारविमर्श कर लिया जाये ताकि विवाद की स्थिति न बने।

सरकारी स्कूल के बच्चों को भी मिले स्मार्ट सुविधा, प्रदेश सरकार कर रही चिंता: शर्मा

कबीरधाम। प्रदेश के डिप्टी सीएम और गृहमंत्री विजय शर्मा जिस स्कूल में पढ़े, अब वहां के मिडिल, हाई और हायर सेकेंडरी स्कूल के विद्यार्थी को स्मॉर्ट क्लास अत्याधुनिक सुविधा का लाभ मिलेगा। डिप्टी सीएम शर्मा आज बुधवार 2 अक्टूबर को सुबह 11 बजे कवर्धा के स्वामी करपात्री जी स्कूल के तीन कक्षाओं में स्मॉर्ट क्लास का शुभारंभ किया। उनके विशेष प्रयास से कबीरधाम जिले के 70 स्कूलों में स्मॉर्ट क्लास की सुविधा मिलेगी। उन सभी स्कूलों का चयन कर लिया गया है। स्मॉर्ट क्लास की शुरुआत जिले के स्वामी करपात्री जी स्कूल से हो रही है।

डिप्टी सीएम शर्मा ने कहा कि शासकीय स्कूल के विद्यार्थियों को भी प्राइवेट स्कूल की तरह स्मॉर्ट क्लास की सुविधा का लाभ मिले, इसके लिए प्रदेश की राज्य सरकार मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के नेतृत्व में चिंता कर रही है। शासकीय स्कूल के विद्यार्थियों को भी प्राइवेट स्कूल की तरह स्मॉर्ट क्लास की सुविधा का लाभ मिले, इसकी शुरुआत कबीरधाम जिले के स्वामी करपात्री जी स्कूल से करने का प्रयास किया जा रहा है। उल्लेखनीय है कि डिप्टी सीएम विजय शर्मा ने कवर्धा के स्वामी करपात्री जी स्कूल से पढ़ाई की है। श्री शर्मा ने मिडिल स्कूल से लेकर हायर सेकेंडरी स्कूल तक की पढ़ाई इस स्कूल से की है। वे साइंस के विद्यार्थी रहे और कक्षा बाहरवी में शाला नायक भी बने।

डिप्टी सीएम विजय शर्मा ने अपने स्कूल में की सफाई

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जयंती के अवसर पर आज स्वच्छता ही सेवा अभियान के अंतर्गत डिप्टी सीएम विजय शर्मा ने स्वामी करपात्री जी स्कूल में श्रमदान कर स्वच्छता का संदेश दिया। शर्मा ने स्वच्छता की शुरुआत उसी कक्षा से की जहां से उन्होंने स्वयं अपनी पढ़ाई की थी। इस पहल के माध्यम से उन्होंने न केवल स्वच्छता का महत्त्व बताया, बल्कि समाज को भी जागरूक किया। इसके बाद स्कूल के मैदान में श्रमदान किया। उन्होंने मैदान की सफाई में भाग लिया और सभी को स्वच्छता के प्रति जागरूक होने का संदेश दिया। इस दौरान उन्होंने उपस्थित सभी लोगो को स्वच्छता की शपथ दिलाई।

उप मुख्यमंत्री ने श्रमदान से छात्रों और स्थानीय लोगों में स्वच्छता के प्रति जागरूकता और स्वच्छता को जीवन का अभिन्न हिस्सा बनाने की अपील की।श्रमदान के साथ-साथ पौधरोपण भी किया। उन्होंने स्कूल के परिसर में पौधे लगाए, जिससे पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया जा सके। उन्होंने कहा कि स्वच्छता के साथ-साथ पेड़-पौधे भी हमारे जीवन के लिए आवश्यक हैं और पर्यावरण की सुरक्षा के लिए हर व्यक्ति को पौधरोपण करना चाहिए। कार्यक्रम में प्लास्टिक वेस्ट मैनेजमेंट और फिकल स्लज ट्रीटमेंट प्लांट का लोकार्पण किया। उपमुख्यमंत्री ने स्वच्छता दिवस पर स्वच्छता दीदियों को प्रशस्ति पत्र, प्रतीक चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया। इसके साथ ही स्वच्छता पर आधारित विभिन्न प्रतियोगिता और सांस्कृतिक कार्यक्रम में भाग लेने वाले छात्राओं को सम्मानित किया गया।

नक्सलवाद के खिलाफ विकास बनेगा बड़ा हथियार

बस्तर। केंद्रीय मंत्री अमित शाह के बयान के बाद बस्तर में नक्सली मोर्चे पर तैनात सीआरपीएफ के जवान और अधिकारी लगातार नक्सल विरोधी अभियान संचालित कर रहे हैं। फोर्स नक्सलियों के खिलाफ ऑपरेशन चलाने के अलावा बस्तर के लोगों को रोजगार के लिए आगे प्रेरित कर रहे हैं। ग्रामीणों को रोजगार और कृषि के संबंध में जानकारियां भी उपलब्ध करवाई जा रही हैं। ताकि बस्तर में नक्सलवाद के खात्मे के लिए नौजवान कदम आगे बढ़ा सकें।

सीआरपीएफ 241 बस्तरिया बटालियन के कमांडेंट ऑफिसर हरविंदर सिंह ने बताया कि शासन के निर्देशानुसार 1 अक्टूबर को दरभा ब्लॉक के सेड़वा गांव में एक सिविक एक्शन कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में अंदरूनी क्षेत्र मीनपा जहां वर्ष 2020 में एक बड़ी मुठभेड़ हुई थी। जिसमें 17 जवान शहीद हो गए थे। और ताड़मेटला जहां 2010 में कैम्प पर नक्सलियों ने हमला किया था। इस हमलें में 76 जवान शहीद हो गए थे। यहां अंदरूनी क्षेत्रों में इन गांवों के युवाओं को कार्यक्रम में स्किल डेवलपमेंट सिखाया गया।

कमांडेंट बस्तरिया बटालियन हरविंदर सिंह ने कहा युवाओं को प्रोफेशनल किसान और प्रोफेसर ने ट्रेनिंग दी। ताकि वे नक्सल प्रभावित इलाकों में रोजगार करके अपनी आय बढ़ा सकें। इस कार्यक्रम में सैकड़ों ग्रामीणों की उपस्थिती थी। केंद्रीय मंत्री के बयान के बाद उसी लाइन को लेकर यूनिट ने टास्क दिया है। उसमें एक-एक कदम बढ़ाया जा रहा है।

कांगेर वैली नेशनल पार्क के डीएफओ चूड़ामणी सिंह ने बताया कि बस्तर जिले में जब नक्सल समस्या थी, उस दौरान ग्रामीणों को रोजगार में काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ता था। लेकिन अब नक्सल समस्या दूर होने से रोजगार के अवसर ग्रामीणों को मिल रहे हैं। नेशनल पार्क से लगे धूड़मारास गांव को ग्रामीणों ने बेहतर तरीके से प्रकृति से जोड़कर विकसित किया है। जिसके कारण उन्हें उप राष्ट्रपति के द्वारा सम्मानित भी किया गया।

डीएफओ कांगेर वैली नेशनल पार्क चूड़ामणी सिंह ने कहा आने वाले दिनों में और भी युवाओं को ऐसे कार्यो के लिए जोड़ा जाएगा। नए नए योजनाओं को लाया जाएगा। ताकि उन्हें रोजगार मिले और वे विकसित हो सकें। क्योंकि बस्तर में पर्यटन की अपार संभावनाएं बनी हुई है। साथ ही वनोपज संग्रहण के लिए भी प्रोत्साहित किया जाएगा।

वहीं नक्सल प्रभावित मीनपा गांव से पहुंचे युवक पोड़ियम हुर्रा ने बताया कि नक्सल समस्या होने के कारण काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ता था। लेकिन अब मीनपा गांव में सीआरपीएफ कैम्प लग गया है। जिससे उनकी समस्या धीरे-धीरे कम हो रही है।

ग्रामीण पोड़ियाम हुर्रा ने कहा पहले सड़क नहीं थी पैदल यात्रा करना पड़ता था। लेकिन अब सड़क बन गई है। बिजली गांव के 2 घरों में है। जिसका विस्तारीकरण जारी है। रोजगार जीवन के लिए बेहद जरूरी है। आज मैंने सीखा कि जंगल और गांव में पाए जाने वाली मधुमक्खी जिसे जलाकर भगा देते थे। उसका पालन होता है। उससे भी रुपए कमाए जा सकते हैं। ये सीख कर अब आगे कुछ करने की योजना बना रहे हैं।

रायपुर में बच्चों के प्रदर्शन का मामला हाईकोर्ट ने जताई नाराजगी

सरकार से पूछा- किसने दी सड़क पर उतरने की अनुमति

बिलासपुर। हाईकोर्ट ने रायपुर में प्रयास विद्यालय के छात्रों के सड़क पर उतरकर प्रदर्शन और चक्काजाम करने के मामले में संज्ञान लिया है और जनहित याचिका मानकर सुनवाई शुरू की है। हाईकोर्ट की डिवीजन बेंच ने चीफ सेक्रेटरी को इसकी जांच कराने के साथ ही शपथ पत्र पेश करने कहा है। कोर्ट ने जिम्मेदारों से सवाल किया है कि बच्चों को इस तरह से सड़क पर उतरने की अनुमति कैसे दे दी जाती है। मामले की अगली सुनवाई 7 अक्टूबर को होगी।

दरअसल, रायपुर के सड्डू स्थित प्रयास आवासीय विद्यालय के 10वीं कक्षा के छात्रों ने अपनी समस्याओं को लेकर सोमवार को विधानसभा का घेराव करने सड़कों पर उतर आए थे। इस दौरान छात्रों ने चक्काजाम कर दिया और विधानसभा घेरने निकल गए। हालांकि, उन्हें पुलिस ने रोक लिया।

इस मामले में हाईकोर्ट ने संज्ञान लिया है। मामले की सुनवाई के दौरान चीफ जस्टिस रमेश कुमार सिन्हा और जस्टिस बीडी गुरु की डिवीजन बेंच को महाधिवक्ता प्रफुल्ल एन भारत और उप महाधिवक्ता शशांक ठाकुर ने बताया कि मामले की संबंधित अधिकारी ने जानकारी ली और छात्रों की समस्या का समाधान किया जा रहा है। इस पर नाराज हाईकोर्ट ने कहा, प्रबंधन क्या कर रहा है, बच्चे सड़क पर कैसे आ रहे हैं।

चीफ जस्टिस सिन्हा ने कहा कि सरकारी संस्थाओं में किताबों और बुनियादी सुविधाओं की कमी क्यों हो रही है। शासन को इसे गंभीरता से देखना चाहिए। आखिर, यह समझ नहीं आ रहा है कि शासन का सिस्टम क्या प्रबंध कर रहा है। छात्रों को इस तरह से सड़क पर आने की अनुमति कैसे दी जा रही है। हाईकोर्ट ने अगली सुनवाई तक राज्य सरकार के मुख्य सचिव को मामले की जांच कराने के निर्देश दिए हैं। साथ ही पूरे मामले में उन्हें अपना हलफनामा पेश करने कहा है।

हाईकोर्ट ने सीजीपीएससी की 40 याचिकाएं खारिज की

बिलासपुर। सीजीपीएससी 2023 की प्रारंभिक परीक्षा के नतीजों में पुनर्मूल्यांकन की मांग करते हुए लगाई गई 40 याचिकाओं को हाईकोर्ट ने खारिज कर दिया है। पीएससी 2023 के नतीजे घोषित होने के बाद 40 अभ्यर्थियों ने पांच सवालों को लेकर पीएससी के निर्णय को गलत बताते हुए याचिका लगाई थी। मामले की सुनवाई जस्टिस सचिन सिंह राजपूत की सिंगल बेंच में हुई।

बता दें कि सीजीपीएससी ने राज्य सिविल सेवा के पदों पर भर्ती के लिए 29 नवंबर 2023 को विज्ञापन जारी किया था। 11 फरवरी 2024 को दो पालियों में प्रारंभिक परीक्षा ली गई थी, जिसके बाद मॉडल आंसर जारी किए गए थे। दावा आपत्ति के बाद संशोधित मॉडल आंसर जारी किए गए और फिर रिजल्ट जारी किया गया।

पीएससी के प्रारंभिक परीक्षा के परिणाम के आधार पर मुख्य परीक्षा के लिए चयनित नहीं हो पाए 40 परीक्षार्थियों ने पांच सवालों को लेकर पीएससी के निर्णय को गलत बताते हुए हाईकोर्ट में याचिका दायर की थी। इसके अनुसार संशोधित मॉडल आंसर जारी करने के बाद कुछ प्रश्नों को हटा दिया गया था। याचिकाकर्ताओं का तर्क था कि यदि उन प्रश्नों को नहीं हटाया जाता तो वे मुख्य परीक्षा से वंचित नहीं होते। याचिकाकर्ताओं के अधिवक्ता ने कहा कि किसी विशेष प्रश्न को हटाने से अनुपातिक अंक दिए गए हैं, लेकिन यह उस अभ्यर्थी को दिया जाता है, जिसने उक्त प्रश्न का प्रयास ही नहीं किया या जिसने उक्त प्रश्न का गलत उत्तर दिया है।

मामले की सुनवाई के बाद फैसले में अदालत ने कहा कि सहानुभूति पुनर्मूल्यांकन के निर्देश देने का आधार नहीं हो सकता। अदालत ने कहा कि इसमें कोई संदेह नहीं है कि परीक्षार्थी परीक्षा की तैयारी में कड़ी मेहनत करते हैं पर हमें यह भी नहीं भूलना चाहिए कि अधिकारी भी परीक्षा आयोजित करने के लिए उतनी ही मेहनत करते हैं।

गांधी जयंती पर कार्मेल कॉन्वेंट स्कूल की मनमानी

- **शासकीय छुट्टी के बावजूद बच्चों को बुलाया स्कूल**

अंबिकापुर। सरगुजा जिले के अंबिकापुर स्थित कार्मेल कॉन्वेंट स्कूल की मनमानी का मामला सामने आया है। आज 2 अक्टूबर को गांधी जयंती के अवसर पर पूरे देश में शासकीय अवकाश होता है, लेकिन इस अवसर पर भी सरकारी आदेशों की अवहेलना करते हुए स्कूल प्रबंधन ने छात्र-छात्राओं को स्कूल बुलाया था। इसकी जानकारी मिलते ही हिंदू संगठन ने स्कूल में पहुंचकर पूछताछ की और स्थानीय प्रशासन और शिक्षा विभाग को इसकी जानकारी दी। मामले को लेकर आक्रोशित हिंदू संगठन ने स्कूल प्रबंधन पर इसाई धर्म को बढ़ावा देने के लिए स्कूली बच्चों को धर्म का पाठ पढ़ाने का गंभीर आरोप लगाया है।

युवा मोर्चा कार्यकर्ता दीपक यादव ने बताया कि गांधी जयंती के अवसर पर कॉन्वेंट स्कूल में पूरा भारत बंद है। हम सफाई अभियान में जुटे हुए थे। इसी दौरान हमें सूचना मिली कि कॉन्वेंट बच्चों को ड्रेस में बुलाया गया है। हमने पूछताछ की, तो स्कूल के गार्ड और प्रिंसिपल ने कहा गया कि हम आज कुछ एक्सट्रा एक्टिविटी के लिए बच्चों को बुलाए हैं। वहीं क्या एक्स्ट्रा एक्टिविटी कराई जा रही है, तो प्रिंसिपल ने जानकारी देने से मना कर दिया और कहा कि हमने सिर्फ अपनी कम्यूनिटी (इसाई) के कुछ बच्चों को ही बुलाया है। जबकि इन बच्चों में हमारी एक परिवार की हिंदू बच्ची भी स्कूल में मौजूद थी। जिसके बाद हमने इसकी जानकारी शिक्षा विभाग और प्रशासन को जानकारी दी।

दीपक यादव ने स्कूल पर आरोप लगाते हुए कहा कि कार्मिल स्कूल को लेकर लगातार विवाद बना रहता है। इस स्कूल में धर्म का खेल जारी है यानी बच्चों का ब्रेन वॉश कर उन्हे इसाई धर्म में प्रवेश कर करवाने की कोशिश कर रहे हैं।

बता दें, कार्मेल कॉन्वेंट स्कूल एक इसाई धर्म का स्कूल है, जो अक्सर विवादों में बना रहता है। इस बार भी इसकी मनमानी ने स्कूल प्रबंधन पर कई सवाल उठा दिए हैं। मामले की शिकायत मिलते ही शिक्षा विभाग, जिला प्रशासन और पुलिस की टीमें जांच करने स्कूल पहुंची। प्रशासन ने तुरंत कार्रवाई करते हुए स्कूल में उपस्थित बच्चों को वापस घर भेज दिया है। जिला शिक्षा अधिकारी अशोक सिन्हा ने बताया कि कलेक्टर के सख्त निर्देश हैं कि आज गांधी जयंती के अवसर पर अगर स्कूल संचालित किया जा रहा है, तो यह गलत है। स्कूल प्रशासन ने भी अपनी गलती मानते हुए माफी मांगी है। वहीं धर्म विवाद को लेकर कहा कि इस मामले को लेकर कहा कि मामले की जांच के बाद उचित कार्रवाई के निर्देश दिए गए हैं।

छत्तीसगढ़
प्रमुख समाचार

कोंडागांव पुलिस विभाग में 64 पुलिसकर्मियों का स्थानांतरण

कोंडागांव। कोंडागांव जिले के पुलिस विभाग में प्रशासनिक दृष्टिकोण से बड़े स्तर पर फेरबदल किया गया है। पुलिस अधीक्षक कार्यालय से जारी आदेश के अनुसार, जिले में पदस्थ 64 पुलिस अधिकारियों और कर्मचारियों का अस्थायी तौर पर विभिन्न थानों में स्थानांतरण किया गया है। इस आदेश में उप-निरीक्षक (सउनि) से लेकर आरक्षक स्तर तक के अधिकारी शामिल हैं। इस सूची में उप-निरीक्षक यशवंत सेन को रक्षित केन्द्र से थाना फरसगांव, जबकि मोहन यादव को मर्दापाल से केशकाल थाने स्थानांतरित किया गया है। इसके साथ ही बहादुर मरकाम, मुलचंद बघेल, संतोष सिदार, और मनीराम मरकाम सहित कई अन्य पुलिसकर्मियों को भी नई तैनाती दी गई है। कई महिला आरक्षकों का भी स्थानांतरण किया गया है, जिसमें प्रेमलता दीवान, संगीता कोर्राम और अंजिना सोरी प्रमुख हैं। यह स्थानांतरण आदेश प्रशासनिक आवश्यकताओं और कानून व्यवस्था को बनाए रखने की दृष्टि से लिया गया है। सभी संबंधित अधिकारियों और थाना प्रभारियों को स्थानांतरण के पालन हेतु आदेश जारी किए गए हैं।

40 हाथियों के झुंड से ग्रामीणों में दहशत

गौरेला पेण्ड्रा मरवाही। जिले के मरवाही वनमण्डल की सीमा के करीब लगभग जंगली 40 हाथियों का एक झुंड दल पहुंच गया है, जिससे ग्रामीणों में दहशत का माहौल है। किसानों में नई फसल को लेकर चिंता बढ़ गई है। हाथियों की गतिविधियों से जान-माल के नुकसान का खतरा हमेशा बना रहता है और इस क्षेत्र में पहले भी हाथियों के कारण भारी नुकसान हो चुका है। वहीं कई बच्चे और युवा सड़क पार करते हाथियों का वीडियो बनाने के प्रयास में बेहद करीब पहुंच रहे हैं, जिससे उनकी जान को खतरा हो सकता है। हाथियों का यह दल फिलहाल कटघोरा वनमण्डल में डेरा डाले हुए है, लेकिन वे धीरे-धीरे मरवाही वन परिक्षेत्र के नाका की ओर बढ़ रहे हैं। स्थानीय किसान अपनी नई फसल को लेकर चिंतित हैं, जबकि वन विभाग हाथियों की गतिविधियों पर नजर बनाए हुए है। हाथियों के मूवमेंट के कारण ग्रामीणों में दहशत का माहौल है। वन विभाग ने लोगों को सतर्क रहने की सलाह दी है और स्थिति की गंभीरता को देखते हुए सभी आवश्यक कदम उठाने की बात कही है।

जांजगीर चांपा में मिला युवक का शव

जांजगीर चांपा। जांजगीर चांपा जिले के अकलतरा अग्रेसन चौक के पास 2 दिन पुराना एक युवक का शव मिला है। मृतक के पास से जहर का बोतल मिला है। जहर सेवन कर आत्महत्या की आशंका है। पीएम रिपोर्ट के बाद मौत का खुलासा हो पाएगा,मामला अकलतरा थाना क्षेत्र का है। डीएसपी प्रदीप सोरी ने बताया की सूचना मिली की अग्रेसन चौक के पास बने एक छोटे से कमरे के पीछे अज्ञात युवक का मृत हालत में लाश मिलने की जानकारी मिलने पर पुलिस टीम पहुंची और मृतक के लाश के पास से एक बैग और खेत में छिड़कने वाला दावा मिला है आशंका है की जहर सेवन से मौत हुई होगी लाश जोकि 2 दिन पुराना है। तलाशी लेने पर एक आधार कार्ड मिला है जिसमे उसकी पहचान नवागढ़ थाना क्षेत्र के विजय हंसराज निवासी बुडेना के रूप में पहचान हुई हैं। परिजनों को घटना के संबंध में जानकारी दी गई है शव को पोस्टमार्टम के लिए अस्पताल भेजा गया हैं। शर्ट पीएम रिपोर्ट आने के बाद मौत का कारण पता चल पाएगा।

16 बच्चे हुए फूड प्वाइजनिंग का शिकार, कराया गया भर्ती

कोरबा। कोरबा के पोड़ी उपरोड़ा विकासखंड के के ग्राम कटोरी नगोई कन्या आश्रम में रहकर पढाई करने वाले लगभग 16 बच्चे फूड प्वाइजनिंग का शिकार हो गए। जहां एक के बाद एक सभी बच्चों कों उल्टी दस्त और चक्कर आने लगे। इस घटना के बाद आश्रम में हड़कंप मच गया और इसकी सूचना तत्काल 108 वाहन को दी गई। जहां मौके पर पहुंच सभी बच्चों को कटघोरा स्थित सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया गया सभी का उपचार अभी जारी है। बताया जा रहा है कि सभी बच्चे पोड़ी उपरोड़ा के जटगा आसपास के रहने वाले बच्चे हैं। जिनकी उम्र लगभग 7 से 10 साल तक बताई जा रही है। जो कक्षा पहली से पांचवी तक की पढ़ाई करते हैं। कन्या आश्रम में खाना खाने के बाद बच्चों की हालत बिगड़ने लगी। उल्टी दस्त से परेशान हो गए। 16 छात्रों को कटघोरा स्थित स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया गया हैं। कटघोरा बीएमओ बी आर रात्रे ने बताया कि सभी बच्चों की हालत में अब सुधार है, सभी खतरे से बाहर हैं।

खाने में जहर मिलाकर जान लेने की कोशिश

गौरेला पेंड्रा मरवाही। कोरबा जिले के पसान थानाक्षेत्र में घर में खाने में जहर मिलाकर परिवार के लोगों की जान लेने की कोशिश करने का मामला सामने आया है। खाना खाने के बाद सभी की तबियत खराब होने पर सभी को पहले स्थानीय अस्पताल में भर्ती कराया गया और उसके बाद सभी को जीपीएम के दो शासकीय अस्पतालों में भर्ती कराया गया है। पीड़ितों में 9 साल के बच्चे के साथ कुल नौ लोगों का इलाज जारी है। पूरा मामला कोरबा जिले के पसान थानाक्षेत्र के पत्थर फोड़ गांव का है। जहां पर कल देर शाम लाल अहिबरन सिंह के घर भोजन की तैयारी चल रही थी। घर में रोज की तरह सुमित्रा भी खाने की तैयारी कर रही थी। उसी दौरान पेंड्रा के लालती गांव में रहने वाला उसका पति पहलवान सिंह वहां पहुंचा और सीधे रसोई में आ गया। जिसके बाद दोनों के बीच किसी बात को लेकर विवाद हो गया। सुमित्रा पति से नाराज होकर वहां से चली गई। कुछ देर पहलवान रसोई के अंदर रुका और उसके बाद वहां से निकल कर चला गया।

शिक्षा के लिए खतरे में जान, उफनता नाला पार कर रहे बच्चे

कांकेर। कांकेर के एक गांव से बच्चों की जान जोखिम में डालकर स्कूल जाने की तस्वीर सामने आई है। इस तस्वीर में बच्चे एक साथ उफनते नाले को पार कर रहे हैं। इस नाले को पार करने की मजबूरी इसलिए भी है,क्योंकि बच्चों का स्कूल नाले के उस पार है।लिहाजा बच्चों को बारिश के मौसम में इसी तरह से उफनते नाले को पार करके स्कूल आना पड़ता है।

बच्चों समेत ग्रामीणों के नाला पार करने की ये तस्वीर कोयलीबेड़ा ब्लॉक के आलोर गांव की है। जहां पर 30 परिवार रहता है। यहां रह रहे लोगों की माने तो वो 60 साल से इस गांव में रह रहे हैं।कई बार जनप्रतिनिधियों और गांव के पंच सरपंच को नाले के ऊपर पुल बनाने के लिए कहा,लेकिन किसी ने भी नहीं सुना। ग्रामीणों की माने तो जब भी बारिश का मौसम आता है और नदी नाले उफान पर होते हैं तो उनका गांव टापू बन जाता है।पानी कम होने पर गांव वाले और बच्चे अपनी जान जोखिम में डालकर नाला पार करते हैं।

ग्रामीण महिला शीला ने कहा हम करीब 60 साल से इस जगह पर रह रहे हैं लेकिन किसी ने भी अब तक इस समस्या का समाधान नहीं किया।अधिकारियों से लेकर सरपंच तक को अपनी परेशानी बता चुके हैं,लेकिन अभी तक पुल का निर्माण नहीं हो सका है।जिससे सभी को इसी तरह से जान जोखिम में डालकर नाला पार करना पड़ रहा है।

ग्रामीणों का कहना हैं कि जीते जी तो हम बहुत तकलीफ में हैं। मरने के बाद में परेशानियां कम नहीं होती। क्योंकि नाले पर पुलिया ना होने के कारण शवों को श्मशान तक नहीं ले जाया जा सकता। जिसके कारण ग्रामीणों को मजबूरन अपने खेतों में शवों का अंतिम संस्कार करना पड़ता हैं।शवों को शमशान तक नसीब नहीं होता। ग्रामीणों ने कई बार सरपंच - सचिव सहित जिला कलेक्टर तक को पुलिया के लिए आवेदन दिया।लेकिन आवेदन सिर्फ कागज का टुकड़ा बनकर रह गया। वहीं प्रशासन ने जल्द ही नाले पर पुल बनाने की बात कही है।

कलेक्टर नीलेश कुमार क्षीरसागर ने कहा क्षेत्र में अभी छोटे पुल-पुलिया की स्वीकृति मिली है। अधिकतर छोटे पुल-पुलिया के काम चालू भी हो गया है। आलोर के पुलिया का प्रस्ताव बनाकर भेजा गया है स्वीकृति मिलते ही काम चालू कराया जाएगा।

बच्चे पर तेंदुए ने किया हमला, पालतू कुत्ते ने बचाई जान

कांकेर। कांकेर जिले के दुधावा में बीती शाम तेंदुए ने 11 साल के बच्चे पर हमला कर दिया, तेंदुआ बच्चे को गर्दन से पकड़कर ले जा रहा था तभी तेंदुआ की शामत बनकर पालतू कुत्ता शेरा सामने आ गया और तेंदुए पर हमला कर दिया, जिसके बाद तेंदुआ बच्चे को छोड़कर जंगल की ओर भाग खड़ा हुआ। शोर सुनकर मौके पर पहुंचे परिजनों और ग्रामीणों ने बच्चे को तत्काल नजदीक के स्वास्थ्य केंद्र लाया जहा से उसे पहले कांकेर और फिर बाद में रायपुर रेफर कर दिया गया है, बच्चे का इलाज इस वक्त रायपुर के डीके अस्पताल में चल रहा है।

दरअसल दुधावा के पटेलपारा में शाम करीब 6 बजे 11 साल का बच्चा नीरज ध्रुव अपने घर से महज 100मीटर दूर अपने चाचा के घर जाने निकला था तभी अचानक तेंदुए ने उस पर हमला कर दिया और गले से पकड़कर जंगल की ओर भाग रहा था, तभी बच्चे के चाचा के घर का पालतू कुत्ता शेरा सामने आ गया और तेंदुए से भिड़ गया। शेरा की बहादुरी से तेंदुआ बच्चे को वही छोड़कर भाग निकला,जिसके बाद बच्चे को अस्पताल पहुंचाया गया है।

सबसे हैरानी की बात ये है की इसी क्षेत्र में तेंदुआ अब तक 3 बच्चो को निशाना बना चुका है जिसमे एक बच्चे की मौत भी हो चुकी है, लेकिन इसके बाद भी वन विभाग ने आदमखोर हो चुके इस तेंदुए को पकड़ने कोई कदम नहीं उठाया है, वन विभाग के अधिकारी दावा कर रहे है की जल्द ही तेंदुए को पकड़कर दूर जंगल में छोड़ा जाएगा जिसके लिए रायपुर से एक्सपर्ट की टीम भी कांकेर पहुंच रही है.

डीएफओ आलोक बाजपाई ने बताया की वन विभाग की टीम रोजाना इलाके में गस्त कर रही है और रायपुर से भी एक्सपर्ट की टीम आ चुकी है जिनके द्वारा तेंदुए को ट्रैक करने की कोशिश की जा रही है,जिसके बाद उसे रेस्क्यू कर दूर जंगल में छोड़ने की प्लानिंग है।

संक्षिप्त समाचार

सीएम विष्णुदेव साय ने महात्मा गांधी की प्रतिमा पर किया माल्यार्पण

रायपुर। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की जयंती के

अवसर पर छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने उनकी प्रतिमा पर माल्यार्पण कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। सीएम साय ने सदर बाजार और आजाद चौक रायपुर स्थित महात्मा गांधी की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया। इस अवसर पर उन्होंने महात्मा गांधी के सिद्धांतों और उनके आदर्शों को याद करते हुए स्वच्छता के प्रति उनकी प्रतिबद्धता पर प्रकाश डाला। मुख्यमंत्री साय ने स्वच्छता अभियान में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया और नागरिकों को स्वच्छता का संकल्प दिलाया। इस दौरान स्वच्छता संबंधी गतिविधियों में भाग लेते हुए उन्होंने उपस्थित जनप्रतिनिधियों के साथ झाड़ू भी लगाई। इस अवसर पर वन मंत्री केदार कश्यप, लोकसभा सांसद बृजमोहन अग्रवाल, विधायक राजेश मूणत सहित अन्य जनप्रनिधि उपस्थित रहे।

अरुणपति त्रिपाठी और कारोबारी त्रिलोक ढिल्लन की जमानत अर्जी फिर खारिज

बिलासपुर। छत्तीसगढ़ के 2200 करोड़ रुपये के शराब घोटाले में आरोपी आबकारी विभाग के निलंबित अधिकारी अरुणपति त्रिपाठी और कारोबारी त्रिलोक ढिल्लन की जमानत अर्जी को छत्तीसगढ़ हाईकोर्ट ने फिर से खारिज कर दिया है। जस्टिस अरविन्द कुमार वर्मा की बेंच ने अपने आदेश में कहा कि भ्रष्टाचार मानव अधिकारों का उल्लंघन है और भ्रष्ट लोकसेवकों को दंडित करना भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम का मुख्य उद्देश्य है। जस्टिस वर्मा ने कहा कि भ्रष्टाचार के मामलों में शामिल लोगों पर सख्त कार्रवाई जरूरी है, ताकि इस तरह की गतिविधियों पर लगाम लगाई जा सके। अदालत ने कहा कि भ्रष्टाचार न केवल आर्थिक नुकसान पहुंचाता है बल्कि समाज के मूल्यों को भी कमजोर करता है।

रायपुर पुलिस विभाग में एसआई, एएसआई समेत 55 पुलिसकर्मियों का हुआ ट्रांसफर

रायपुर। रायपुर पुलिस विभाग में बड़ा फेरबदल हुआ है। विभाग ने एसआई, एएसआई और हेड कांस्टेबल समेत 55 पुलिसकर्मियों का ट्रांसफर किया गया है। जारी आदेश के अनुसार, छह एसआई, 13 एएसआई, एक महिला प्रधान आरक्षक, 10 प्रधान आरक्षक और 25 आरक्षकों का तबादला किया गया है। इसे लेकर वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक संतोष कुमार सिंह ने देर रात आदेश जारी किया है।

शारदीय नवरात्रि में प्रमुख चिन्हांकित स्थानों पर लगेंगे चिकित्सा शिविर

रायपुर। स्वास्थ्य मंत्री श्री श्याम बिहारी जायसवाल ने शारदीय नवरात्रि के दौरान प्रदेश के प्रमुख चिन्हांकित स्थलों पर आमजनों की सुविधा हेतु चिकित्सा शिविर लगाए जाने के संबंध में आवश्यक निर्देश दिए हैं। निर्देश का पालन करते हुए आयुक्त सह संचालक स्वास्थ्य सेवाएं के द्वारा प्रदेश के सभी संभागीय संयुक्त संचालक स्वास्थ्य सेवाएं एवं समस्त मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी (सीएमएचओ) तथा सिविल सर्जन सह मुख्य अस्पताल अधीक्षक को पत्र जारी किया है। इसके अनुसार तीन अक्टूबर से शारदीय नवरात्रि का पर्व आरंभ हो रहा है। प्रदेश में नवरात्रि के पर्व में आमजनों द्वारा पंचमी से लेकर दशहरा तक आम दिनों की तुलना में ज्यादा आवागमन होता है। अत: स्वास्थ्य विभाग को ऐसे भीड़-भाड़ वाले स्थानों का चिन्हांकन करते हुए जिला प्रशासन से समन्वय स्थापित कर विकासखण्ड स्तर पर चिकित्सा शिविर का आयोजन करने का निर्देश दिया गया है। इसके साथ ही सभी प्रमुख चिन्हांकित स्थलों में समुचित चिकित्सा एवं अन्य स्टॉफ, पर्याप्त औषधियां, 24 घंटे एम्बुलेंस तथा प्रचार-प्रसार की सामग्री सहित अन्य आवश्यक सामग्री की व्यवस्था सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए हैं।

खादी वस्त्रों की खरीदी पर मिलेगी 25 प्रतिशत की सब्सिडी : सीएम साय

रायपुर। गांधी जयंती के अवसर पर मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने खादी को बढ़ावा देने के लिए एक महत्वपूर्ण घोषणा की है। उन्होंने कहा कि 2 अक्टूबर से खादी वस्त्र खरीदने पर 25 प्रतिशत की सब्सिडी मिलेगी, जो 31 मार्च 2025 तक जारी रहेगी। यह घोषणा मुख्यमंत्री ने पंडित दीनदयाल उपाध्याय ऑडिटोरियम में आयोजित स्वच्छता ही सेवा अभियान 2024-स्वच्छता पखवाड़ा समापन समारोह एवं खादी ग्रामोद्योग प्रदर्शनी में की। कार्यक्रम के दौरान पत्रकारों से चर्चा करते हुए सीएम विष्णुदेव साय ने धान खरीद को लेकर भी जानकारी दी। उन्होंने कहा कि इंद्रदेव इस बार खुश नजर आ रहे हैं और प्रदेश में अच्छी वर्षा हुई है। धान की अच्छी पैदावार होने की संभावना है। सीएम ने कहा कि धान खरीदी को लेकर जल्द ही एक बैठक की जाएगी, जिसमें सभी संबंधित मुद्दों पर चर्चा की जाएगी। मुख्यमंत्री साय ने खादी ग्राम उद्योग प्रदर्शनी का दौरा करते हुए अपनी पत्नी के लिए एक साड़ी भी खरीदी। उन्होंने सभी नागरिकों से अपील की कि वे अधिक से अधिक खादी का उपयोग करें। सीएम साय ने खादी के वस्त्रों को बढ़ावा देने के लिए 25त्न सब्सिडी की भी घोषणा की है।

स्वच्छता अभियान राज्य में जनआंदोलन का लिया रूप : साय

छत्तीसगढ़ में स्वच्छता पर हो रहे बेहतर कार्य, छत्तीसगढ़ को सुंदर एवं स्वच्छ बनाना हम सभी का नैतिक कर्तव्य

रायपुर। पंडित दीनदयाल उपाध्याय ऑडिटोरियम में आयोजित स्वच्छता ही सेवा कार्यक्रम में मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने कहा कि पूरे देश में स्वच्छता ही सेवा पखवाड़ा मनाया जा रहा है। भगवान विश्वकर्मा जयंती और प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के जन्मदिन 17 सितम्बर से महात्मा गांधी की जयंती 2 अक्टूबर तक स्वच्छता ही सेवा पखवाड़ा कार्यक्रम का आयोजन हुआ। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने स्वच्छता को प्रोत्साहित करने हेतु 15 अगस्त 2014 को लाल किले की प्राचीर से सभी को स्वच्छता का संकल्प दिलाया था।

उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री के आव्हान और स्वच्छता अभियान से हम सभी को गली-चौराहे, मोहल्ले, स्कूल, कार्यालय, सार्वजनिक स्थलों को स्वच्छ रखने के लिए प्रेरणा मिली। स्वच्छता अभियान ने पूरे प्रदेश में जनआंदोलन का स्वरूप ले लिया है। छत्तीसगढ़ को सुंदर एवं स्वच्छ बनाना हम सभी का नैतिक कर्तव्य है।

मुख्यमंत्री ने आगे कहा कि स्वच्छता को हम सभी को अपनी आदत में शामिल करने की जरूरत है। उन्होंने लोगों से छत्तीसगढ़ को सुंदर एवं स्वच्छ छत्तीसगढ़ बनाने का संकल्प लेने का आव्हान करते हुए ऑडिटोरियम में

उपस्थित सभी को स्वच्छता की शपथ दिलायी । उन्होंने कहा कि राष्ट्रपति महात्मा गांधी ने कहा था कि स्वतंत्रता के साथ ही स्वच्छता भी जरूरी है। बापू के सपने को प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने हाथ में झाड़ू पकड़कर शुरूआत की। देश के लोग स्वच्छता अभियान में सहभागी बनें। स्वच्छता को सभी अपने आदत में शामिल करें। कार्यक्रम में उन्होंने स्वच्छता के क्षेत्र में एवं स्वच्छता ही सेवा 2024 अंतर्गत उत्कृष्ट कार्य करने वाले संस्थाओं और व्यक्तियों को सम्मानित किया। इस दौरान उन्होंने प्रधानमंत्री आवास योजना के हितग्राहियों को आवास की चाबी सौंपी। इसी तरह मच्छर उन्मूलन के लिए चलित वाहन तथा भव्य सशक्त सैन्य समारोह की गाडियों को हरी झण्डी दिखाकर रवाना किया।

वन मंत्री श्री केदार कश्यप ने कहा कि राज्य में स्वच्छता के लिए व्यापक तौर पर कार्य किए गए हैं। स्वच्छता की जिम्मेदारी हम सभी की है। हम सभी संकल्प ले कि स्वयं स्वच्छता पर ध्यान देंगे और लोगों को प्रेरित करेंगे। विगत 10 वर्षों में स्वच्छ भारत मिशन अंतर्गत किए जा रहे कार्यों से देश की तस्वीर बदली है।

रायपुर सांसद श्री बृजमोहन अग्रवाल ने कहा कि गंदगी से विभिन्न प्रकार की बीमारियों का जन्म होता है। इन बीमारियों से बचने के लिए सफाई बहुत जरूरी है। देश के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने स्वच्छ भारत मिशन चलाकर सफाई का संदेश दिया है। गांधी के सपनों को पूरा करने हमारी सरकार आत्म निर्भर गांव के साथ साफ-सफाई पर पूरा ध्यान दे रहा है। स्वच्छता पखवाड़ा के इस समापन समारोह में सफाईकर्मियों, सफाई दीदियों और सफाई मित्रों का सम्मान किया जा रहा है।

इस अवसर पर विधायकगण श्री पुरंदर मिश्रा, श्री मोती लाल साहू, नगर निगम प्रतिपक्ष नेता श्रीमती मीनल चौबे, सचिव नगरीय प्रशासन एवं विकास विभाग डॉ. वसवराजु एस., सचिव ग्रामोद्योग विभाग श्री यशवंत कुमार, संचालक नगरीय प्रशासन एवं विकास विभाग श्री कुंदन कुमार, संभागायुक्त श्री महादेव कांवरे, कलेक्टर रायपुर डॉ. गौरव कुमार सिंह, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक श्री संतोष सिंह, आयुक्त नगर निगम रायपुर श्री अविनाश मिश्रा, जिला पंचायत मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्री विश्वजीत सहित बड़ी संख्या में सफाईकर्मी, सफाई दीदी और सफाई मित्र उपस्थित थे।

छत्तीसगढ़ न्याय यात्रा का समापन, सचिन पायलट और सिंहदेव सरकार पर बरसे

रायपुर। छत्तीसगढ़ कांग्रेस ने गिरौदपुरी से रायपुर तक न्याय यात्रा निकाली। 27 सितंबर से शुरु हुई इस यात्रा का समापन 2 अक्टूबर गांधी जयंती के दिन रायपुर में हुआ।जिसमें प्रदेश प्रभारी सचिन पायलट ने भी शिरकत की।इस दौरान कांग्रेस प्रदेशाध्यक्ष दीपक बैज, कांग्रेस सांसद ज्योत्सना महंत, पूर्व सीएम भूपेश बघेल, पूर्व डिप्टी सीएम टीएस सिंहदेव समेत पूर्व प्रदेशाध्यक्ष मोहन मरकाम ने भी शिरकत की।

कांग्रेस की न्याय यात्रा की शुरुआत गिरोधपुरी से हुई थी। जिसका समापन रायपुर में हुआ। बुधवार सुबह सड्डू से पदयात्रा की शुरुआत हुई।इसके बाद घड़ी चौक होते हुई ये यात्रा गांधी मैदान पहुंची।इससे पहले ईटीवी भारत ने पदयात्रा में शामिल कांग्रेस प्रदेश प्रभारी सचिन पायलट, कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष दीपक बैज और पूर्व उपमुख्यमंत्री टीएस सिंहदेव से खास बातचीत की। इस दौरान तीनों नेताओं ने प्रदेश की

मौजूदा सरकार के प्रति अपना गुस्सा जाहिर कर रही है। प्रदेश की कानून व्यवस्था को लेकर सवाल उठा रहे हैं। कानून व्यवस्था पर उठे सवाल ~ वहीं बिगड़ी कानून व्यवस्था को लेकर बीजेपी पर हमला बोला।

न्याय यात्रा में कांग्रेस सांसद ज्योत्सना महंत ने बीजेपी सरकार पर हमला बोला। ज्योत्सना महंत ने कहा कि यह सरकार दुशासन की तरह प्रदेश की जनता का चीरहरण कर रही है। वहीं कांग्रेस प्रदेश प्रभारी सचिन पायलट ने भी सरकार पर हमला बोला। सचिन पायलट ने कहा यह पदयात्रा कांग्रेस की नहीं बल्कि प्रदेश की जनता की है।आम जनता भी पदयात्रा में शामिल होकर कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष दीपक बैज ने कहा कि उन्होंने गिरोधपुरी से यह पदयात्रा शुरू की थी।पदयात्रा को लोगों का अच्छा रिस्पांस मिल रहा है।वहीं पूर्व उपमुख्यमंत्री टीएस सिंहदेव ने भी प्रदेश की कानून व्यवस्था को सवाल खड़े किए।टीएस सिंहदेव का कहना है कि प्रदेश की कानून व्यवस्था बदहाल है। जिसके कारण यह पदयात्रा निकाली गई। आप खुद देख सकते हैं कि पदयात्रा में जनता का कितना अच्छा रिस्पांस मिल रहा है।

मुख्यमंत्री ने चाक पर दिखाई अपनी कलाकारी

रायपुर। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने राजधानी रायपुर के दीनदयाल उपाध्याय ऑडिटोरियम परिसर में गांधी जयंती के अवसर पर आयोजित खादी और ग्रामोद्योग विभाग की प्रदर्शनी का अवलोकन किया। इस दौरान उन्होंने चाक पर अपनी कलाकारी दिखाते हुए मिट्टी की कटोरी बनाई और स्थानीय बुनकरों द्वारा तैयार गोदना पेंटिंग वाली कोसा साड़ी भी खरीदी। बता दें कि राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की जयंती के अवसर पर आज दीनदयाल उपाध्याय ऑडिटोरियम में खादी एवं ग्रामोद्योग विभाग की प्रदर्शनी, स्वच्छता ही सेवा पखवाड़े का समापन सहित कई गतिविधियों का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम में मुख्यमंत्री साय ने जिला प्रशासन रायपुर के मलेरिया और डेंगू की रोकथाम के लिए अभियान का शुभारंभ किया और साइंस कॉलेज ग्राउंड में आयोजित होने वाले सैन्य प्रदर्शनी में शामिल सैन्य वाहन को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया।

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने एआई तकनीक से टीबी की जांच कराई और 2 मिनट में ही उनका रिपोर्ट प्राप्त हो गया। मुख्यमंत्री जांच में सामान्य पाए गए। उन्होंने जिला प्रशासन के इस विशेष पहल की सराहना की और कहा अधिक से अधिक लोगों टीबी की जांच करें ताकि इसका प्रभावी रोकथाम हो सके।

सीएम विष्णुदेव साय ने स्वच्छता ही सेवा पखवाड़े 2024 के समापन के अवसर पर पं. दीनदयाल उपाध्याय ऑडिटोरियम परिसर में लगाये गए विभिन्न स्टालों का अवलोकन किया। उन्होंने रायपुर नगर निगम के स्टालों के निरीक्षण के दौरान मौली माता स्व सहायता समूह की महिलाओं द्वारा निर्मित प्लास्टिक फ्री सेनेटरी नेपकिन की जानकारी ली और वहां मौजूद स्वच्छता दीदियों को सेनेटरी नेपकिन भेंट किया।

इस दौरान समृद्धि महिला स्व सहायता समूह की महिलाओं ने मुख्यमंत्री को फूलों से निर्मित दशांग, धूप बत्ती और डेकोरेटेड दिया भेंट किया। उन्होंने मुख्यमंत्री को बताया कि ये उत्पाद मंदिर में चढ़ाये गए फूलों से बनाये जाते हैं। मुख्यमंत्री ने समूह के महिलाओं के कार्यों की सराहना करते हुए उन्हें बधाई और शुभकामनाएं दी। मुख्यमंत्री साय ने स्वच्छता कर्मचारियों को स्वच्छता किट भेंट कर सुरक्षित रहकर कार्य करने की बात कही।

मुख्यमंत्री ने गांधी जयंती के अवसर पर लगाए गए खादी एवं ग्रोमोद्योग विभाग अंतर्गत छत्तीसगढ़ खादी तथा ग्रामोद्योग बोर्ड, छत्तीसगढ़ हस्तशिल्प विकास बोर्ड, छत्तीसगढ़ माटीकला बोर्ड और रेशम विभाग के स्टालों को देखा।

ओलंपिक विजेता मनु भाकर आएंगी रायपुर

■ अखिल भारतीय वन खेल प्रतियोगिता के समापन समारोह में होंगी शामिल

रायपुर। छत्तीसगढ़ राज्य 27वीं अखिल भारतीय वन खेल प्रतियोगिता 2024 का गौरवपूर्ण मेज़बान बनने जा रहा है। इस प्रतिष्ठित खेल प्रतियोगिता का आयोजन भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के तत्वावधान में रायपुर में 16 से 20 अक्टूबर 2024 तक आयोजित किया जाएगा। छत्तीसगढ़ के लिए यह आयोजन एक महत्वपूर्ण अवसर है, जो राज्य की खेल प्रतिभाओं और वन विभाग के उत्कृष्ट प्रयासों को प्रदर्शित करेगा।

इस खेल महोत्सव में देशभर से वन विभाग के खिलाड़ी विभिन्न खेल प्रतिस्पर्धाओं में भाग लेंगे। प्रतियोगिता का मुख्य आकर्षण 20 अक्टूबर को आयोजित समापन समारोह में पेरिस ओलंपिक 2024 की पदक विजेता और विश्वप्रसिद्ध निशानेबाज मनु भाकर की उपस्थिति होगी, जो खिलाड़ियों का हौसला बढ़ाएंगी।

मुख्यमंत्री विष्णु देव साय और वन मंत्री केदार कश्यप के नेतृत्व में राज्य की तैयारियां जोर-शोर से चल रहीं है। प्रधान मुख्य वन संरक्षक और वन बल प्रमुख व्ही। श्रीनिवास राव और नोडल अधिकारी शालिनी रैना के निर्देशन में राज्य के खिलाड़ी पेशेवर कोचों की देखरेख में कड़ी मेहनत कर रहे हैं। वन परिसर पंडरी,

रायपुर में खिलाड़ियों के लिए उच्चस्तरीय आवास और पौष्टिक भोजन की समुचित व्यवस्था की गई है, ताकि वे अपनी फिटनेस बनाए रख सकें और सर्वोत्तम प्रदर्शन कर सकें।

छत्तीसगढ़ की टीम को इस प्रतियोगिता में विभिन्न राज्यों और संस्थानों के खिलाडियों से कड़ी प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ेगा, जिसके लिए टीम पूरी तरह से प्रेरित और आत्मविश्वास से परिपूर्ण है। छत्तीसगढ़ के प्रमुख खिलाड़ियों में अंतरराष्ट्रीय बैडमिंटन खिलाड़ी संगीता राजगोपालन का नाम विशेष उल्लेखनीय है, जिन्होंने राज्य के लिए 100 से अधिक स्वर्ण पदक जीतकर गौरव बढ़ाया है। अरुण प्रसाद, आईएफएस और जगदीशन, आईएफएस, के नेतृत्व में खेल चुकी छत्तीसगढ़ की बास्केटबॉल टीम पिछले नौ टूर्नामेंटों में अविजित रही है। इसी प्रकार, राज्य की क्रिकेट टीम ने भी लगातार सात प्रतियोगिताएं जीतकर अपनी श्रेष्ठता साबित कर चुकी है।

आईआईएम रायपुर ने उद्यमिता में सर्टिफिकेट प्रोग्राम किया शुरू

रायपुर। भारतीय प्रबंधन संस्थान (आईआईएम), रायपुर ने उद्यमिता में एक सर्टिफिकेट प्रोग्राम शुरू किया है। सर्टिफिकेट प्रोग्राम को खास तौर पर इच्छुक उद्यमियों के लिए डिजआइन किया गया है। इस कोर्स के लिए आधिकारिक वेबसाइट (cpe.iimraipur.edu.in) पर पंजीकरण प्रक्रिया जारी है। आवेदन करने की अंतिम तिथि 15 अक्तूबर, 2024 है। कक्षाएं 6 नवंबर से शुरू होंगी और अंग्रेजी और हिंदी दोनों भाषा में आयोजित की जाएंगी।

इच्छुक उम्मीदवारों को ध्यान देना चाहिए कि यह तीन महीने का गैर-आवासीय पाठ्यक्रम विशेष रूप से रायपुर के निवासियों को सशक्त बनाने और स्थानीय समुदाय के भीतर उद्यमशीलता को बढ़ावा देने के लिए डिजाइन किया गया है।

आईआईएम रायपुर ने घोषणा की है कि यह कार्यक्रम सफल व्यवसायों को शुरू करने और प्रबंधित करने के लिए आवश्यक आवश्यक कौशल और व्यावहारिक ज्ञान प्रदान करके महत्वाकांक्षी उद्यमियों को पोषित और सशक्त बनाने के लिए डिजाइन किया गया है।

पात्रता मानदंड- किसी भी विषय में स्नातक की डिग्री रखने वाले उभरते उद्यमी आवेदन कर सकते हैं। इस कोर्स में दाखिला लेने के लिए न्यूनतम आयु 21 वर्ष है।

भाग लेने वाले उम्मीदवारों को कानूनी, विनियामक और अनुपालन मानकों का व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त होगा। ढ्ढरूकार्यक्रम को इस तरह से डिजाइन किया गया है कि इसमें प्रस्तुति कौशल, डिजाइन सोच और प्रशिक्षण तकनीकों पर सत्र शामिल होंगे।

व्यावहारिक गतिविधियों, व्यावहारिक अभ्यासों और वास्तविक दुनिया के केस स्टडीज के माध्यम से उम्मीदवारों को व्यावसायिक सिद्धांतों की गहरी समझ हासिल होगी। उम्मीदवारों को समान विचारधारा वाले व्यक्तियों के साथ बातचीत करने, साथी उद्यमियों और सलाहकारों का एक नेटवर्क बनाने का अवसर मिलेगा जो मूल्यवान अंतर्दृष्टि और प्रेरणा प्रदान करेगा।

छत्तीसगढ़ पुलिस की नौकरी के लिए आयु सीमा में पांच साल की छूट

रायपुर। छत्तीसगढ़ में पुलिस विभाग में भर्ती को लेकर बड़ी खबर है। सीएम विष्णुदेव साय ने पुलिस की नौकरी की तैयारी कर रहे छात्र छात्राओं को बड़ी राहत दी है। अब सीजी पुलिस विभाग में नौकरी के लिए आवेदन करने वाले युवक युवतियों को आयु सीमा में पांच साल की छूट मिलेगी। सीएम साय के निर्देश पर पुलिस विभाग में साल 2024 में होने वाली वैकेंसी में अभ्यर्थियों को उम्र सीमा में पांच साल की छूट मिलेगी।

छत्तीसगढ़ पुलिस विभाग में यह छूट सूबेदार, उप निरीक्षक संवर्ग और प्लाटून कमांडर के पोस्ट पर होने वाली भर्तियों में मिलेगी। आवेदकों को पांच साल की छूट निर्धारित आयु के मापदंडों में मिलेगी। सभी छूटों को मिलाकर अधिकतम आयु सीमा 45 साल से अधिक नहीं होनी चाहिए। पुलिस विभाग की तरफ से वैकेंसी में जो आयु सीमा निर्धारित की गई है। उसमें पांच साल की यह छूट देने की घोषणा की गई है।

छत्तीसगढ़ पुलिस की हालिया भर्तियों की बात करें तो पुलिस विभाग में सहायक उपनिरीक्षक एम के 263 पोस्ट पर वैकेंसी आई है। इसके तहत पुलिस की जेनरल शाखा में 40 पोस्ट पर वैकेंसी निकाली गई है। रायपुर रेंज में 20 पोस्ट पर नियुक्ति निकली है। बिलासपुर रेंज में 48 पोस्ट पर, बस्तर रेंज में 28 पदों पर, दुर्ग रेंज में 10 पदों पर, सरगुजा रेंज में 35 पदों पर और राजनांदगांव में 32 पदों पर ये वैकेंसी निकाली गई है। पुलिस मुख्यालय में सूबेदार एम और शीघ्र लेखक के 50 पदों पर यह भर्ती निकाली गई है।

छत्तीसगढ़ पुलिस में बीते महीनों में विभिन्न संवर्गों में कुल 1069 पदों पर भर्तियों की मंजूरी मिल चुकी है। इनमें सूबेदार, एएसाई, प्लाटून कमांडर, नगर सैनिक के पद भी शामिल हैं। इनमें कुछ संवर्गों में भर्ती की प्रक्रिया शुरू हो चुकी है।

सोशल मीडिया पर जिला एवं पुलिस प्रशासन की पैनी नजर

■ 19 इंस्टाग्राम पेज किए गए बंद, 3 वीडियो भी डिलीट

रायपुर। शांति व्यवस्था बनाएं रखने के लिए बलौदाबाजार जिले में सोशल मीडिया पर जिला एवं पुलिस प्रशासन पैनी नजर रखे हुए है। जिला स्तरीय सोशल मीडिया निगरानी समिति के रिपोर्ट के आधार पर लगातार संदिग्ध आईडी की पहचान हेतु गूगल, इंस्टाग्राम,फेसबुक, व्हाट्सप कंपनियों से सायबर सेल द्वारा संपर्क किया जा रहा है। जिसके तहत 88 यूआरएल मेटा को भेजा गया था। जिसमें से 19 इंस्ट्राग्राम को पेज को बंद करने की कार्रवाई की गई है। साथ ही 3 इंस्टाग्राम पेज से वीडियो को डिलीट किया गया है। इसके साथ ही अनुविभाग गिरौद द्वारा 5 अपराधियों की पहचान कर एक के खिलाफ धारा 107,116 (3) के तहत कार्रवाई की गई है। इसके साथ ही

चार ने माफीनामा कबूल करते हुए उनके परिजनों को उक्त प्रकरणों में भी समझाईश दी गई है। इसके अतिरिक्त सायबर पुलिस एवं थाना प्रभारियों की मदद से सोशल मीडिया में असंवैधानिक एवं गैर कानूनी कार्य करने वाले व्यक्तियों की पहचान कर कार्रवाई की जा रही है।

कलेक्टर दीपक सोनी ने जिले वासियों से अपील करते हुए किसी भी व्यक्ति को सोशल मीडिया में भड़काऊ कंटेन्ट पोस्ट करने बचने कहा है। यदि किसी भी व्यक्ति का पोस्ट भड़काऊ या सामजिक सौहार्द बिगाडने् वाला होगा तो निश्चित ही सख्त कार्रवाई की जाएगी। गौरतलब है की कानून एवं व्यवस्था के संदर्भ में सोशल मीडिया के प्रभाव को ध्यान में रखते हुए सोशल मीडिया में जिले के सम्बन्ध में चल रहे गतिविधियों पर निगरानी रखने एवं नकारात्मक गतिविधियों सम्बन्धी लेखों पर त्वरित कार्यवाही करने हेतु जिला स्तरीय सोशल मीडिया निगरानी समिति का गठन किया गया है। जिसके माध्यम से सोशल मीडिया में नकारात्मक लेखों,तथ्यों पर 24 घंटे निगरानी रखी जा रही है।अवैधानिक, असंवैधानिक, गैर कानूनी एवं आपत्तिजनक पोस्ट, कमेंट्स आदि पाये जाने पर समिति प्रतिदिन जानकारी संबंधित अनुविभागीय दण्डाधिकारी एवं संबंधित अनुविभागीय अधिकारी पुलिस को त्वरित कार्रवाई हेतु प्रेषित किया जा रहा है।

कार्यालय प्रमुख अभियन्ता
लोक निर्माण विभाग, नवा रायपुर, अटल नगर

(केन्द्रीय निविदा प्रकोष्ठ) ई-प्रोक्यूरमेंट निविदा सूचना
Main Portal: https: // eproc.egstate.gov.in

निम्नलिखित कार्य हेतु निविदा आमंत्रित की जाती है:-

स. क्र.	सिस्टम निविदा क्रमांक/दिनांक	कार्य का नाम	कार्य की अनुमानित लागत (रुपये लाख में)
1	158829 तृतीय आमंत्रण 25.09.2024	खम्हरिया से तरईगांव मार्ग के बीच बस्ती में सी.सी. रोड एवं नाली निर्माण लंबाई 2.70 कि.मी. का निर्माण कार्य।	269.11
2	159046 द्वितीय आमंत्रण 25.09.2024	जिला बीजापुर, वि.ख. बीजापुर के कुएनार व्हाया एरमनार से तोयनार मार्ग लंबाई 10.50 कि.मी. (शेष कार्य) के पुल-पुलिया सहित निर्माण कार्य। (CGRIDCL WORK).	640.13
3	159138 प्रथम आमंत्रण 26.09.2024	जिला जशपुर के भुड़केला से लवानदी पुल तक पहुंच मार्ग लंबाई 2.10 कि.मी. निर्माण कार्य।	225.36
4	159141 प्रथम आमंत्रण 26.09.2024	जिला जशपुर के फरदबहार से झारमुण्डा पहुंच मार्ग लंबाई 2.10 कि.मी. निर्माण कार्य।	254.51
5	159151 प्रथम आमंत्रण 26.09.2024	1) जिला जशपुर के बालाछापर-आरा-सकरडेगा मार्ग से छोटा बनई पहुंच मार्ग लंबाई 2.40 कि.मी. निर्माण कार्य। (2) जिला जशपुर के बालाछापर आरा सकरडेगा मार्ग से कारीताला पहुंच मार्ग लंबाई 2.00 कि.मी. निर्माण कार्य।	454.78

निविदा डाउनलोड करने की अंतिम तिथि सं.क्र. 01 दिनांक 07.10.2024 सं.क्र. 02 दिनांक 14.10.2024 निर्धारित है। एवं अन्य शेष निविदाओं के लिए दिनांक 18.10.2024 निर्धारित है। निविदा में भाग लेने की प्रक्रिया एवं निविदा के संबंध में विस्तृत जानकारी विभाग के उपरोक्त वेबसाईट में देखे जा सकते है।

मुख्य अभियंता
केन्द्रीय निविदा प्रकोष्ठ
कार्यालय प्रमुख अभियंता,
लोक निर्माण विभाग, नवा रायपुर अटल नगर

जी-242502890/10

अमेरिका का मकसद अपने आप पूरा होता जा रहा

अभिनय आकाश

हसन नसरल्लाह अब दुनिया को आतंकित नहीं कर पाएगा। उसके जाने के बाद दुनिया और ज्यादा सुरक्षित हो गई है। 27 सितंबर की शाम इजरायल ने हिजबुल्लाह के मुख्यालय पर बमबारी की और कई घंटों के बाद नसरल्लाह की मौत की पुष्टि हुई। इस घटना ने पूरे मीडिल ईस्ट में हड़कंप मचा दिया है। दरअससल, हिजबुल्ला लेबनान का चरमपंथी संगठन है और उसकी अपनी सेना है। हिजबुल्लाह राजनीतिक पार्टी भी है। लेबनान की संसद में उसके सांसद बैठते हैं। ये सारा मुकाम नसरल्लाह के दौर में हासिल हुआ। वो 1992 में हिजबुल्लाह का सरगना बना था। बमबारी में उसके जाने के बाद मीडिल ईस्ट में सबसे खतरनाक दौर की शुरुआत भी हो चुकी है। नसरल्लाह ईरान के सुप्रीम लीडर अयातुल्लाह अली खामनेई का करीबी था। ईरान ने उसके सम्मान में पांच दिनों के शोक का ऐलान भी किया। ये भी कहा कि इजरायल से बदला लिया जाएगा। कहा जा रहा है करि ईरान ने मध्य पूर्व में अपना सबसे विश्वसनीय सहयोगी खो दिया। हसन नसरल्लाह की मौत के बाद अमेरिकी प्रशासन ने आनन फानन में इस अटैक से खुद का पल्ला झाड़ लिया था। बाइडेन प्रशासन ने साफ किया था कि हमले से उसका कोई लेना-देना नहीं है। हालांकि इजरायलियों ने जरूर कहा कि उन्होंने पहले ही इस बारे में इंफार्म कर दिया था। अमेरिका भले ही खुद को पाक-साफ बता रहा हो, लेकिन नसरल्लाह को मारने के लिए इस्तेमाल की गई मिसाइलें तो संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा ही उपलब्ध कराई गई थीं। ऐसे में वे लाख खुद को इस हमले से दूर करने की कोशिश कर लें, लेकिन इजरायल के इतने बड़े ऑपरेशन को अमेरिका को साथ में रखें बिना किया जाना इतना भी आसान नहीं है। इजरायली पीएम बेन्यामिन नेतन्याहू ने ईरान के लोगों से कहा कि हर दिन, आप एक ऐसे शासन को देखते हैं जो आपको अपने अधीन कर लेता है। अगर उन्हें आपकी परवाह है, तो वह पूरे मिडिल ईस्ट में बेवजह के युद्धों पर अरबों डॉलर बर्बाद करना बंद करेगा। आपके जीवन में सुधार करना शुरू कर देगा। जब आखिर में ईरान आज़ाद होगा और वह पल बहुत जल्द आएगा, तब हमारे दो देश- इस्राइल और ईरान शांति से रहेंगे। मतलब नेतन्याहू ने ईरानी लोगों को दिए अपने संदेश में साफ कर दिया कि ईरान ने उसके खिलाफ कोई भी कदम उठाया तो इजरायली सेना उस पर धावा बोल देगी। अमेरिका का ईरान को उकसाने का सीधा मकसद उसके युद्ध में एंट्री लेने से है। दरअसल, अमेरिका का मुख्य मकसद ईरान में सत्ता परिवर्तन या अपनी मर्जी की सरकार को स्थापित करना है। लेकिन इस मकसद को डायरेक्ट अटैक करके इसे हासिल नहीं किया जा सकता है। ऐसे में इजरायल पर ईरान की तरफ से उठाए गए कोई भी कदम को लेकर अमेरिका सीधे जंग में उतर सकता है। वैसे भी सीधे किसी देश में कार्रवाई के लिए सैनिक भेजने वाले पिछले इराक और अफगानिस्तान वाले कदम के बाद अमेरिका ने अपनी नीति में बदलाव लाए हैं। एयर स्ट्राइक और बमबारी करके ईरान के सैन्य बल को पहले नष्य किया जाएगा। इसके बाद ईरान में मौजूद विरोधी गुटों को समर्थन और हथियार देकर आगे बढ़ाया जाएगा। अमेरिका के लिए आंखों का कांटा ईरान लंबे समय से है। अमेरिका की तरफ से ईरान पर कई सारे प्रतिबंध भी लगाए गए हैं। वहीं मीडिल ईस्ट में ईरान के बढ़ते प्रभाव कई सारे चरमपंथी जमात यमन में हूती, लेबनान में हिजबुल्लाह, इराक के अंदर चरमपंथी समूहों को ईरान का खुला समर्थन है, जिन्होंने क्षेत्र में अपनी मजबूत उपस्थिति स्थापित की है। अमेरिका के लिए ये समूह बड़ी चुनौती साबित हो रहे हैं। अब उसका मानना है कि बिना ईरान में सत्ता बदले बिना इराक और अफगानिस्तान में दबदबा नहीं कायम हो सकेगा। ईरान के पास तेल और गैस का बड़ा भंडार है। ईरान के पास दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा तेल भंडार है। वहीं, गैस के मामले में वह दुनिया में दूसरे नंबर पर है। इसके साथ ही ईरान में दूसरे खनिज पदार्थ भी बड़ी मात्रा में हैं। ईरान की सीमा पाकिस्तान, अफगानिस्तान, अजरबैजान, इराक, तुर्की, आर्मेनिया और रूस से मिलती हैं। इस क्षेत्र में खनिज पदार्थों का विशाल भंडार है, जो बेशकीमती है।

अब नतीजे बताएंगे किसकी हवा चली, कौन उड़ गया

राहुल दुबे

जम्मू-कश्मीर विधानसभा चुनाव का रण तीसरे और अंतिम दौर की सात जिलों की 40 सीटों पर मतदान के साथ समाप्त हो गया। जनता ने फैसला ईवीएम में बंद कर दिया है। फैसला किसके हक में जाएगा, इसके लिए आठ अक्तूबर तक का इंतजार करना होगा। अब नतीजे ही बताएंगे कि किसकी हवा चली और कौन इस हवा में उड़ गया।

मंगलवार को जम्मू संभाग की 24 और कश्मीर क्षेत्र की 16 सीटों पर मतदान हुआ। इनमें करीब एक दर्जन सीटें ऐसी रहीं, जिन पर सभी की नजरें टिकी हैं। तीसरे चरण की बात करें तो जम्मू की 11, सांबा की तीन, ऊधमपुर की चार, कठुआ की छह, बांदीपोरा की तीन, बारामुला की सात और कुपवाड़ा की छह सीटों पर मतदान हुआ।

कश्मीर संभाग में नेकां-कांग्रेस गठबंधन और पीडीपी को इस बार जमात से जुड़े प्रत्याशियों, अवामी इत्तेहाद पार्टी और अपनी पार्टी व निर्दलीयों से लगभग हर सीट पर टक्कर मिली। वहीं जम्मू संभाग में सभी सीटों पर भाजपा की टक्कर नेकां-कांग्रेस गठबंधन से रही।

इन सीटों पर कई दिग्गजों की प्रतिष्ठा दांव पर है। इसमें पूर्व डिप्टी सीएम ताराचंद, पूर्व मंत्री शाम लाल, पूर्व मंत्री अजय सडोत्रा, पूर्व मंत्री योगेश साहनी, पूर्व मंत्री रमण भल्ला समेत इंजीनियर रशीद के भाई खुर्शीद और अफजल गुरु के भाई एजाज गुरु शामिल है।

सांबा जिले की तीन सीटों पर मतदान था। इनमें दो सीटों पर सभी की नजरें टिकी हैं। सांबा से भाजपा के पूर्व मंत्री सुरजीत सलाथिया, कांग्रेस के कृष्ण देव सिंह मैदान में लड़ाई में थे। यहां निर्दलीय रविंद्र सिंह ने मुकाबले को त्रिकोणीय बनाया है। विजयपुर सीट पर भाजपा के पूर्व मंत्री चंद्रप्रकाश गंगा और नेकां के राजेश कुमार के बीच मुकाबला रहा। रामगढ़ से कांग्रेस के पूर्व मंत्री यशपाल कुंडल और भाजपा से पूर्व मंत्री डॉ. देवेंद्र मन्याल के बीच मुकाबला रहा।

बारामुला सीट पर पूर्व उप मुख्यमंत्री मुजफ्फर हुसैन बेग निर्दलीय मैदान में रहे। पीडीपी ने मोहम्मद रफीक राथर, कांग्रेस ने मीर इकबाल अहमद और अपनी पार्टी ने शब्बीर अहमद लोन को उतारा था। लड़ाई पीडीपी, नेकां और निर्दलीय हुसैन बेग के बीच रही। इसी तरह हंदवाड़ा सीट पर पीपुल्स कांफ्रेंस के सज्जाद गनी लोन और नेकां के चौधरी मोहम्मद रमजान के बीच लड़ाई रही।

भाजपा ने भी यहां से गुलाम मोहम्मद मीर को मैदान में उतारा था लेकिन वह लड़ाई में कहीं नहीं दिखे। इसी तरह लंगेट से इंजीनियर रशीद के भाई खुर्शीद फाइट करते दिखे। उनका मुकाबला पीपुल्स कान्फ्रेंस के इरफान पंडितपुरी के साथ रहा। सोपोर सीट पर संसद हमले के मास्टरमाइंड अफजल गुरु के भाई एजाज गुरु के मैदान में आने से समीकरण बिगड़ गए। यहां एजाज का कांग्रेस के अब्दुल रशीद और पीडीपी के इरफान अली के साथ त्रिकोणीय मुकाबला दिखा।

वर्ष 2014 में जम्मू जिले की दस में आठ सीटें भाजपा ने जीतीं। परिसीमन के बाद हुए बदलाव में अब ये सीटें 11 हो गई हैं। इन पर भाजपा और कांग्रेस में पूरी जोर आजमाइश रही। जम्मू पूरब सीट पर कांग्रेस के पूर्व मंत्री योगेश साहनी और भाजपा के युद्धवीर सेठी के बीच कांटे का मुकाबला दिखा।

कुछ क्षेत्रों में कांग्रेस तो कुछ जगहों पर भाजपा भारी पड़ती नजर आई। इसी तरह जम्मू नॉर्थ से 17 उम्मीदवार मैदान में रहे लेकिन मुख्य मुकाबला भाजपा के पूर्व मंत्री शाम लाल शर्मा और नेकां-कांग्रेस गठबंधन से पूर्व मंत्री अजय सडोत्रा के बीच रहा। जम्मू पश्चिम सीट से भाजपा के अरविंद गुप्ता तो कांग्रेस के मनमोहन सिंह के बीच मुकाबला रहा।

आरएसपुरा-जम्मू दक्षिण सीट पर कांग्रेस के कार्यवाहक प्रधान रमण भल्ला और भाजपा के डॉ. नरेंद्र सिंह रैना के बीच ही टक्कर रही। कई सीटों पर हार-जीत का अंतर बहुत कम हो सकता है। बाहु सीट पर भाजपा के पूर्व एमएलसी विक्रम रंधावा और कांग्रेस के तरणजीत सिंह टोनी आमने-सामने रहे।

यहां अधिकतर इलाकों खासकर रिहायशी में भाजपा के पक्ष में माहौल दिखा। अखनूर सीट पर भाजपा के मोहनलाल व कांग्रेस के अशोक कुमार के बीच ही मुकाबला दिखा। बिश्नाह सीट पर भाजपा के राजीव और कांग्रेस के नीरज के बीच मुख्य लड़ाई रही। छंब सीट पर कांग्रेस ने पूर्व उपमुख्यमंत्री तारा चंद को उम्मीदवार बनाया है, तो भाजपा ने पूर्व विधायक राजीव कुमार को मैदान में उतारा है।

यहां मुकाबला दिलचस्प बनाया कांग्रेस से बागी होकर चुनाव लड़ रहे पूर्व सांसद मदन लाल के बेटे सतीश शर्मा और भाजपा के बागी नरेंद्र सिंह ने। मढ़ सीट पर कांग्रेस के पूर्व मंत्री मूला राम और भाजपा के सुरेंद्र कुमार के बीच जंग रही। निर्दलीय उम्मीदवार मोहन लाल कैंथ ने कई पोलिंग बूथ पर प्रभाव छोड़ा।

नगरोटा में मुकाबला भाजपा के देवेंद्र राणा, कांग्रेस के बलबीर और नेकां के जोगेंद्र सिंह के बीच त्रिकोणीय दिख रहा है। सुचेतगढ़ सीट पर मुख्य मुकाबला कांग्रेस के भूषण लाल और भाजपा के गारू राम के बीच रहा। वहीं उधमपुर पश्चिम से भाजपा के पूर्व मंत्री पवन गुप्ता और कांग्रेस के सुमित मगोत्रा के बीच टक्कर रही।

एकात्मता के स्वर

हिमालय पर्वत

भगवान् विष्णु का अंशभूत हिमालय विश्व का सर्वोच्च पर्वत है। जिसमें अनेक हिमाच्छादित श्रृंग, हिमानियाँ तथा विस्तृत घाटियाँ हैं। यह पर्वत श्रेष्ठ भारतवर्ष की उत्तर दिशा में पूर्व से पश्चिम तक लंबाई लेकर सीना तानकर खड़ा है। रमणीय पर्वत नाना प्रकार के रत्नों की आकर (खान) है। इसकी गोद में सिंह, व्याघ्र आदि पशु-पक्षी ही आनन्द से विहार नहीं करते बल्कि देवता, सिद्ध ऋषि और मुनि भी पर्वत का आश्रय लेकर तप करने में लगे रहते हैं। यह हिम (बर्फ) का भण्डार है। इस पर्वत श्रेणी से सिन्धु, गंगा, सतलुज, गण्डक, ब्रह्मपुत्र, यमुना आदि प्रमुख नदियाँ निकलती हैं।

इस पर्वत श्रेणी की कोख में ही नर-नारायण की तपस्थली बद्रीनाथ, द्वादश ज्योतिर्लिंगों में से एक प्रमुख केदारनाथ, कैलास, मानसरोवर, वैष्णोदेवी, अमरनाथ, ज्वालाजी, ऋषिकेश व हरिद्वार जैसे अनेक पुण्यस्थल हैं। संसार का सबसे ऊँचा पर्वत शिखर सागरमाथा (एवरेस्ट) इसी के अंतर्गत है। इसके अतिरिक्त भी कंचनजंघा, नन्दादेवी, गौरीशंकर तथा धौलागिरि भी हिमालय की ही ऊँची चोटियाँ हैं। हिमालय भारत के उत्तर में चौबीस सौ किलोमीटर लम्बाई व एक सौ साठ से चार सौ किलोमीटर चौड़ाई में विस्तृत है।

ऋग्वेद में इसकी महानता इस प्रकार कही गयी है- यस्येमे हिमवन्तो महित्वा, यस्य समुद्र रसयासहाहुः। यस्ये प्रदिशो यस्यबाहू, कस्मै देवाय हविषाविधेम।। (1-121-4) अपने काव्य-कुमारसंभवम् में कवि कालिदास ने अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा हिमालयो नाम नागाधिराज। भी इसे देवतात्मा कहकर उल्लेख किया है।

शिवपुराण के अनुसार लोककल्याण के लिए देवस्वरूप हिमालय ने पितरों की मानसी कन्या मैना (मेनका) के साथ विवाह किया। इन दोनों ही श्रेष्ठ दम्पति के यहाँ पर दक्ष के यज्ञकुण्ड में जीवनलीला समाप्त करने वाली सती ने पार्वती (उमा) के रूप में जन्म धारण किया। कैलासवासी शिव की वह प्रिया बनीं।

पुराण दिग्दर्शन .... परिचयाध्याय

प्रमाण-संग्रहाध्यायः (दूसरा अध्याय)

गतांक से आगे...

(87) आयुष्मतां कथां कीर्तयन्तो माङ्गल्यानीतिहास- पुराणानि। (आश्वलायन गृह्यसूत्र 4 ।6)

अर्थात् चिरंजीवी मनुष्यों की कथाएं और मांगलिक इतिहास पुराणों का पाठ करते हुवे [समय यापन करे।]

(88) अथ पुराणे श्लोकावुदाहरन्ति - अष्टाशीतिसहस्राणि ये प्रजामीषिरर्षयः । दक्षिणेनार्यम्णः पन्थानं ते श्मशानानि भेजिरे।। अष्टाशीतिसहस्राणि ये प्रजां नेषिरर्षयः । उत्तरेणार्यम्णः पन्थानं तेऽमृतत्वं हि कल्पते।। (आपस्तम्बधर्मसूत्र 2 ।23 ।35) अर्थात् पुराणों में नीचे लिखे दो श्लोकों का उदाहरण मिलता है कि- जो अठासी हजार ऋषि सन्तान की कामना करते थे वे अर्थमा के दक्षिण मार्ग से प्रयाण करके श्मशान में पहुँचे [अर्थात् प्रवृत्ति मार्ग के जन्म-मरणात्मक चक्र में पड़े रहे और जो अठासी हजार ऋषि प्रजा की कामना नहीं रखते थे, वे यम के उत्तर मार्ग से प्रयाण करके सदा के लिये अमर बन गए। [अथर्थात् - निवृत्ति मार्ग के आश्रयण से मुक्त हो गये।]

(89) आभूतसंप्लवास्ते स्वर्गजितः पुनः स्वर्ग बीजार्था भवन्ति, इति भविष्यत्पुराणे। (आपस्तन धर्मसूत्र 2 । 24 । 5-6) अर्थात् - वे लोग प्रलय पर्यन्त स्वर्ग में निवास करते हैं और सृष्टि के पुनः उत्पन्न होने के समय स्वर्गादि लोकों के बीजभूत होते हैं ऐसा भविष्यत्पुराण में लिखा है । उपर्युक्त प्रमाण में अष्टाशीति आदि जो श्लोक उद्धृत किये हैं वे ज्यों के त्यों ब्रह्माण्ड पुराण में (अनुषङ्गपाद अध्याय 54 श्लोक 156 से 166 तक) उपलब्ध होते हैं। और विष्णु पुराण (3/8) में तथा मत्स्य पुराण में (अध्याय 124 श्लोक 102 से 110 तक) और पद्मपुराण के सृष्टिखण्ड में भी ठीक इसी प्रकार मिलते हैं।

क्रमशः ...

दुर्गा माता के नौ रूपों के पूजन का पर्व नवरात्रि

शुभा दुबे

नवरात्रि पर्व शक्ति की प्रतीक मां दुर्गा की उपासना का पर्व है। नौ दिनों तक मनाये जाने वाले इस पर्व में प्रत्येक दिन मां दुर्गा के नौ रूपों- श्री शैलपुत्री, श्री ब्रह्मचारिणी, श्री चंद्रघंटा, श्री कूष्मांडा, श्री स्कंदमाता, श्री कात्यायनी, श्री कालरात्रि, श्री महागौरी और श्री सिद्धिदात्री की पूजा की जाती है। कुछ लोग पूरे नवरात्रि का व्रत रखते हैं तो कुछ लोग इस पर्व के पहले और आखिरी दिन ही व्रत रखते हैं। व्रतियों को चाहिए कि नवरात्रि के पहले दिन प्रातःकाल उठकर स्नान आदि करके मंदिर में जाकर माता के दर्शन कर पूजा करें या फिर घर पर ही माता की चौकी स्थापित करें।

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से शुरू होने वाले वासन्तिक नवरात्रि के पहले दिन यानि प्रतिपदा के दिन घट की स्थापना करके तथा नवरात्रि व्रत का संकल्प करके पहले गणपति तथा मातृक पूजन करना चाहिए फिर पृथ्वी का पूजन करके घड़े में आम के हरे पत्ते, दूब, पंचामूल, पंचगव्य डालकर उसके मुंह में सूत्र बांधना चाहिए। घट के पास गेहूं अथवा जौ का पात्र रखकर वरूण पूजन करके मां भगवती का आह्वान करना चाहिए। विधिपूर्वक मां भगवती का पूजन तथा दुर्गा सप्तशती का पाठ करके कुमारी पूजन का भी माहात्म्य है। कुमारियों की आयु एक वर्ष से 10 वर्ष के बीच ही होनी चाहिए। अष्टमी तथा नवमी महातिथि मानी जाती है। नवदुर्गा पाठ के बाद हवन करके ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहिए।

माता की पूजा करने के बाद दुर्गा देवी की जय हो का उच्चारण कर कथा सुनें। माता की चौकी को स्थापित करने में जिन वस्तुओं की आवश्यकता पड़ती है उनमें गंगाजल, रोली, मौली, पान, सुपारी, धूपबत्ती, घी का दीपक, फल, फूल की माला, बिल्वपत्र, चावल, केले का खम्भा, चंदन, घट, नारियल, आम के पत्ते, हल्दी की गांठ, पंचरत्न, लाल वस्त्र, चावल से भरा पात्र, जौ, बताशा, सुगन्धित तेल, सिंदूर, कपूर, पंच सुगन्ध, नैवेद्य, पंचामृत, दूध, दही, मधु, चीनी, गाय का गोबर, दुर्गा जी की मूर्ति, कुमारी पूजन के लिए वस्त्र, आभूषण तथा श्रृंगार सामग्री आदि प्रमुख हैं।

नवरात्रि पर्व के दौरान पूरा देश माता की भक्ति में डूब जाता है। माता के मंदिरों में इन 9 दिनों श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ पड़ती है और जगह-जगह माता की पूजा कर प्रसाद बांटा जाता है। इस दौरान विभिन्न जगहों पर छोटे बड़े स्तर पर माता का जागरण भी कराया जाता है। देश भर के मंदिरों में इस दिन मां भगवती का पूरा श्रृंगार कर उनकी पूजा की जाती है। नवरात्रि पर्व से जुड़ी कुछ परम्पराएं और नियम भी हैं जिनका श्रद्धालुओं को अवश्य पालन करना चाहिए। इन नौ दिनों में दाढ़ी, नाखून व बाल काटने से परहेज करना चाहिए। इन दिनों घर में लहसुन, प्याज का उपयोग भोजन बनाने में नहीं करना चाहिए। लोगों को छल कपट करने से भी बचना चाहिए।

अहम सवालों पर कमला हैरिस मौन क्यों हैं?

कमला हैरिस अपने चुनावी अभियानों में बहुत मेहनत कर रही हैं, लेकिन फिर भी अस्पष्टता बनी हुई है। उन्होंने बहुत से नीतिगत सवालों के जवाब नहीं दिए हैं, लेकिन उनमें से सभी समान रूप से महत्वपूर्ण नहीं हैं।?अब सार्वजनिक स्वास्थ्य की आदर्श व्यवस्था को ही लीजिए। यह एक ऐसा विषय है, जिस पर पूर्व में हैरिस और बाइडन में भी मतभेद सामने आ चुके हैं, जब बाइडन ने सभी के लिए चिकित्सा विधेयक का यह कहते हुए विरोध किया था कि इससे मध्य वर्ग पर करों का बोझ बढ़ेगा। अब जब अमेरिकी राष्ट्रपति पद के लिए कमला हैरिस की दावेदारी मजबूत मानी जा रही है, स्वास्थ्य से जुड़े इस विषय पर अगर बतौर अमेरिका की संभावित राष्ट्रपति?अपनी राय स्पष्ट नहीं कर पा रही हैं, तो फिर भी कोई बात नहीं, लेकिन अगर वह इससे भी महत्वपूर्ण सवालों के जवाब नहीं दे पा रही हों, तो यह स्थिति ठीक नहीं है।

दरअसल, राष्ट्रपति बनने पर उनको विरासत में जो सबसे बड़ी चुनौती मिलने वाली है, वह यह है कि बतौर राष्ट्रपति वह यूक्रेन युद्ध के विषय में क्या करेंगी। यूक्रेन के राष्ट्रपति वोल्दोमीर जेलेंस्की हाल ही में जब वाशिंगटन में थे, तब सभी को उम्मीद थी कि हैरिस बाइडन प्रशासन की नीतियों के साथ खड़ी दिखेंगी। हुआ भी ऐसा ही। लेकिन, सभी जानते हैं कि बाइडन प्रशासन की नीति रूस को बगैर उकसाए यूक्रेन की मदद करने की है। जाहिर है कि कमला हैरिस यूक्रेन को लेकर बाइडन प्रशासन की अस्पष्टता से सीखते हुए आगामी राष्ट्रपति चुनाव में इस मुद्दे को प्रमुखता से उठाकर अपनी जीत सुनिश्चित कर सकती हैं। दूसरी ओर ट्रंप हैं। वह रूस-यूक्रेन युद्ध तत्काल रुकवाने का दावा कर रहे हैं। ऐसा वह कैसे करेंगे, इस बारे में वह बेशक पत्ते नहीं खोल रहे हैं, लेकिन उनके प्रशंसकों को इससे मतलब भी नहीं है। जाहिर है कि इस स्पष्टता का फायदा उन्हें मिल रहा है। दूसरी तरफ, जब उपराष्ट्रपति कमला हैरिस बयान जारी करती हैं, उनके खुद के प्रशासनिक अमले की तरफ से यूक्रेन की जीत को लेकर संदेह जारी किए जाते हैं। ये संदेश जेलेंस्की की यात्रा के उद्देश्य को ज्यादा हथियारों और ज्यादा दूरी की मिसाइलों पर लगे प्रतिबंध को हटाने की एक कमजोर देश की गुहार तक सीमित कर रहे हैं। दूसरे शब्दों में, ये रूस की गति को कम करने के लिए मदद का आग्रह ज्यादा लगता है, जबकि आधिकारिक तौर पर कीव और वाशिंगटन,?दोनों ही युद्ध में जीत से कम कुछ नहीं चाह रहे हैं।

बाइडन प्रशासन ने चतुराई से नाटो के हस्तक्षेप को भी रोका हुआ है। जेलेंस्की की जगह खुद को रखकर सोचें कि आखिर यूक्रेन किस दिशा में बढ़ रहा है। ऐसा लग रहा है कि वह बस प्रतीक्षा कर रहा है कि चीजें कितनी खराब हो सकती हैं। वह भी तब, जबकि दो-तिहाई अमेरिकी यूक्रेन की जीत के पक्ष में हैं। द इकनॉमिस्ट पत्रिका ने अपने ताजा अंक में संख्या, मारक क्षमता और धन-बल में रूस को कहीं आगे दिखाकर अत्यंत निराशाजनक मूल्यांकन पेश किया है। द बुलवर्क के लिए लिखने वाली रूसी-अमेरिकी पत्रकार कैथी यंग का दृष्टिकोण ज्यादा आशावादी है। उनका तर्क है कि वर्तमान रूसी दबाव जल्द ही अपने चरम तक पहुंच सकता है। मास्को उम्मीद कर सकता है कि सर्दियों तक जितनी हो सके उतनी जमीन जब्त कर ली जाए, और फिर संघर्ष विराम होने की स्थिति में यथास्थिति को लेकर सहमति बन ही जाएगी। ऐसी स्थिति में हैरिस प्रशासन के लिए दो तरह की अनिश्चितताएं पैदा होती हैं। त्वरित समाधान की अपेक्षा रखने वाले सवाल ये हैं कि अमेरिका कब तक यूक्रेन की जीत की ऐसी योजना का समर्थन करता रहेगा, जो व्यावहारिक तौर पर संभव ही नहीं है। इसके अतिरिक्त, बाइडन-हैरिस प्रशासन किस सीमा तक ट्रंप के संवाद के जरिये युद्ध के अंत की बात को नकारते रहेंगे, जबकि फिलहाल की स्थितियों में युद्ध के खात्मे के लिए यही आदर्श अमेरिकी नीति लगती है।

दरअसल, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि नवंबर में कौन-सा उम्मीदवार जीतता है। बाइडन और हैरिस, दोनों यही उम्मीद कर रहे हैं कि यूक्रेन खुद ही लड़ाई को उस बिंदु तक पहुंचा दे, जहां से उन्हें संवाद न करने के रुख से कुछ हद तक हटने का मौका मिल जाए। लेकिन सबसे बड़ा सवाल यह है कि अमेरिका की विशिष्ट कूटनीति में फिलवक्त खतरनाक स्थितियों से जूझ रहे यूक्रेन की भूमिका क्या है? शुरुआती उम्मीद कि यूक्रेन युद्ध अमेरिका को चुनौती देने वाले एक देश को निष्प्रभावी कर देगा, व्यर्थ ही लगती है। रूस ने अमेरिका के एक अन्य प्रतिद्वंद्वी चीन के साथ मिलकर सभी चुनौतियों का डटकर सामना किया है। यह रूस-चीन गठजोड़ हालिया वैश्विक परिदृश्य की एक महत्वपूर्ण घटना है, जिसके बारे में राष्ट्रीय रक्षा रणनीति आयोग ने हाल ही में कहा है कि यह 1945 के बाद से अमेरिका के सामने आई सबसे बड़ी चुनौती है। यह निष्कर्ष कुछ अत्युक्तिपूर्ण हो सकता है, लेकिन शीतयुद्ध के बाद से पहली बार अगर अमेरिका को लेकर ऐसी बातें उठ रही हैं, तो यह उसके लिए भयावह क्षण है। यह स्थिति मांग कर रही है कि?अमेरिका पर्याप्त शस्त्रीकरण और अपने खर्चों में कमी लाने पर ध्यान दे। कुछ स्थितियों में दोनों के संतुलन पर भी ध्यान देना होगा।

अमेरिका की वर्तमान सरकार इस संतुलन में काफी कमजोर दिखी है। अफगानिस्तान में अमेरिका ने कितने प्रयास किए, लेकिन आज वहां की स्थिति क्या है। योजना की स्पष्टता कितनी जरूरी है, अफगानिस्तान में अमेरिका को यही सबक मिला। इस संदर्भ में ताजा रणनीतिक समस्या यूक्रेन की है, जो पश्चिम एशिया से लेकर पूर्व और पूर्वोत्तर एशिया तक फैली कई चुनौतियों की फेहरिश्त में एक है और जो अमेरिका के नए राष्ट्रपति की प्राथमिकताएं निर्धारित करने, प्रतिबद्धताओं को पुनः निर्धारित करने और महंगे इरादों व सीमित स्रोतों को ध्यान में रखकर कार्य करने की क्षमता की पूरी परीक्षा लेगी। अमेरिकी हितों की रक्षा करने के लिए कमला हैरिस के पास अगर वर्तमान अमेरिकी राष्ट्रपति से अलग कोई दृष्टिकोण व दूरदृष्टि है, तो वह इसे जाहिर क्यों नहीं करतीं? अमेरिका के लिए आज सबसे महत्वपूर्ण सवाल यही है।

आज का इतिहास

1932 इराक, ग्रेट ब्रिटेन से पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त करने वाला एक संप्रभु राज्य बन गया।

1935 जनरल एमिलियो डी बोनो के नेतृत्व में इतालवी बलों ने द्वितीय इटालो-एबिसिनियन युद्ध के शुरुआती चरणों के दौरान एबिसिनिया पर आक्रमण किया।

1942 जर्मनी ने पहली बार अपने नवीनतम रॉकेट ङ्क2 की जांच की। यह 118 मील का सफर तय करता है। 1944 में जर्मनी ने ग्रेट ब्रिटेन के खिलाफ इन रॉकेटों में से कई को लॉन्च किया था।

1952 ग्रेट ब्रिटेन में 12 साल बाद चाय का राशन समाप्त हो गया है। हालांकि, मिठाई, मांस, अंडे, मक्खन और चीनी अभी भी राशन पर हैं।

1957 कैलिफोर्निया के सुपीरियर कोर्ट के एक न्यायाधीश ने फैसला सुनाया कि एलन हॉन्सबर्ग की एक कविता हॉवेल, सामाजिक महत्व को भुनाने वाली है और इस तरह यह नोब सीन है।

1963 ओसवाल्डो लोपेज़ अरेलानो ने हिंडन के राष्ट्रपति रामोनविल्डा मोरालेस को एक हिंसक तख्तापलट में बदल दिया और दो दशकों के सैन्य शासन की पहल की।

1970 लेबनान के प्रधान मंत्री रशीद करमी की सरकार ने इस्तीफा दिया।

1975 1 9 71 में बांग्लादेश ने पाकिस्तान से अलग होने के बाद पहली बार, दोनों देशों ने कूटनीतिक संबंध स्थापित किए।

1981 बेलफास्ट के भूलभुलैया जेल में आयरिश रिपब्लिकन आर्मी कैदियों द्वारा भूख हड़ताल सात महीने और दस मौतों के बाद समाप्त हो गई।

1985 अंतरिक्ष यान अटलांटिस को अमेरिकी रक्षा विभाग के लिए किए गए अभियान में दो सैन्य संचार उपग्रहों को ले जाने वाले पहले अभियान पर लॉन्च किया गया था।

1989 दलाई लामा को नोबेल शांति पुरस्कार से नवाजा गया।

1990 पूर्वी और पश्चिमी जर्मनी आधिकारिक तौर पर द्वितीय विश्व युद्ध के अंत के बाद से पहली पूर्ण संप्रभु एकजुट जर्मन राज्य बनाने में शामिल हो गए।

1990 45 वर्षों के बाद पूर्वी और पश्चिमी जर्मनी के एक होने की औपचारिक रुप से घोषणा की गई।

1993 अमेरिकी सशस्त्र बलों ने मोगादिशु की लड़ाई में सोमालियाई युद्ध के स्वामी मोहम्मद फराह एडिड के संगठन के अधिकारियों को पकड़ने का प्रयास किया।

1995 चीन एवं इंग्लैंड के बीच हांगकांग के सुगम हस्तांतरण पर सहमति हुई।

गांधी, ग्राम स्वराज और भारतीय संविधान बनाम आधुनिक भारत का नेहरू दृष्टिकोण

उमेश चतुर्वेदी

हिमालयी क्षेत्रों के लिए एक कहावत प्रचलित है?कि पहाड़ का पानी और जवानी उसके ही काम नहीं आती। कम से कम जवानी के संदर्भ में यह कहावत देश के ज्यादातर गांवों पर लागू होती है। उत्तर भारत के दिवाली, दशहरा और छठ, जैसे त्योहारों को छोड़ दीजिए, तो गांव वीरान नजर आते हैं। 2011 की जनगणना के अनुसार गांवों में, जहां 68.84 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती थी, वहीं 2022 का अनुमान है कि यह घटकर 56.9 प्रतिशत हो गई है। हालांकि वास्तविकता कुछ और ही है। इसे खेत और जमीन पर मालिकाना हक?का दबाव कहें या लालच, इसकी वजह से जनगणना के रिकॉर्ड में शहरी निवासियों का बड़ा वर्ग अब भी गांवों?में ही रहता है।

गांधी जयंती के मौके पर इन आंकड़ों और ग्रामीण जीवन एवं व्यवस्था में आ रहे बदलावों की ओर ध्यान जाना स्वाभाविक है। गांधी स्वाधीन भारत को गांवों का ही देश बनाए रखने के हिमायती थे। उनके तमाम सपनों को जिस तरह देश ने भुला दिया, उनके ग्राम स्वराज और संस्कृति के सपनों को भी हमने खारिज कर दिया है। सवाल यह उठ सकता है कि क्या विकास की मौजूदा अवधारणा ने देश की ग्रामीण संस्कृति को चोट पहुंचाई है? इस प्रश्न की मीमांसा से पहले हमें ग्रामीण जीवन में आ रहे बदलावों और उनकी समस्याओं की ओर देखना होगा। आज भारत का हर शहर जनसंख्या के भारी दबाव से जूझ रहा है। शहरों को गौर से देखिए तो लगता है, जैसे किसी गुफा में लंबे समय से बंद मनुष्य मौका मिलते ही सबको पीछे छोड़ने की दौड़ में समाहित है। शहरी जीवन में आपाधापी, प्रदूषण, ट्रैफिक जाम, उफनते सीवर, पानी की कमी जैसी समस्याएं रोजाना की जिंदगी का हिस्सा बन चुकी हैं। बिजली गांवों की तुलना में ज्यादा जरूर है, लेकिन दड़बेनुमा मकानों में रहना यहां की बड़ी उपलब्धि बन चुकी है।

राष्ट्रवादी?विचारक गोविंदाचार्य दिल्ली जैसे शहर में रह रहे लोगों के लिए कहते हैं कि यहां की सत्तर फीसदी?आबादी या तो झुग्गियों में रहती है या ऐसे ही हालात में रहने को मजबूर है। इसकी तुलना में गांवों को देखिए। पंचायती राज अधिनियम के बाद वहां पैसे तो जा रहे हैं, लेकिन उस अनुपात में जमीनी बदलाव नहीं दिख रहा है। पंचायती राज का भ्रष्टाचार इसका एक बड़ा कारण है। आज भी नीति निर्माण में शहरी इलाके प्राथमिकता पर हैं, ग्रामीण इलाकों का नंबर उसके बाद आता है। जानकार मानते हैं कि गांवों को शहरों की तुलना में पिछड़ा और प्राथमिकता सूची में दूसरे स्थान पर रखने वाली व्यवस्था की सोच को विकसित करने के पीछे हमारी सांविधानिक व्यवस्था है।

गांधीजी चाहते थे कि भारतीय संविधान की मूल इकाई गांव हों, व्यक्ति नहीं। उनकी यह सोच 10 सितंबर, 1931 को यंग इंडिया में लिखे उनके एक लेख में भी जाहिर होती है। गांधी ने लिखा है, 'मैं ऐसे संविधान की रचना कराने का प्रयास करूंगा, जो भारत को हर तरह की गुलामी और परावलंबन से मुक्त कर दे। मैं ऐसे भारत के लिए कोशिश करूंगा, जिसमें गरीब से गरीब भी यह महसूस करे कि यह उसका देश है, जिसके निर्माण में उसकी आवाज का महत्व है।'

लेकिन उनके ही शिष्य और आधुनिक भारत के निर्माता नेहरू का नजरिया गांवों को लेकर कुछ दूसरा ही था। राजमोहन गांधी ने अपनी पुस्तक मोहनदास में नेहरू के 1946 के एक वक्तव्य का हवाला दिया है। जिसके अनुसार, गांवों को संविधान की मूल इकाई बनाने के गांधी के विचार की खिल्ली उड़ाते हुए नेहरू ने एक चिट्ठी ही उन्हें लिख भेजी थी। नेहरू ने लिखा था, 'जिसे सामान्य तौर पर गांव कहा जाता है, वह सांस्कृतिक और बौद्धिक रूप से पिछड़ा है। और पिछड़े माहौल में कोई प्रगति नहीं हो सकती।' जिसका एक तरह से जवाब देते हुए आजादी के ठीक पहले एक जुलाई, 1947 के यंग इंडिया के अंक में गांधी ने लिखा, 'आजादी नीचे से शुरू होनी चाहिए। हर एक गांव में पंचायत का राज होगा। उसके पास पूरी सत्ता और ताकत होगी। हर एक गांव को अपने पैरों पर खड़ा होना होगा। यहां तक कि वह सारी दुनिया से अपनी रक्षा खुद कर सके।' पर गांधी की इस सोच को संविधान की प्रारूप समिति के कुछ अन्य सदस्यों ने भी स्वीकार नहीं किया।

नतीजा यह हुआ कि गांधी के सपनों के मुताबिक भारत का गांव अपने उस संविधान की पवित्र पुस्तक में शामिल नहीं किया जा सका, जिसकी हम हर अंधेरे वक्त में दुहाई देते नहीं थकते। संविधान को जब नवंबर, 1949 में मंजूरी मिल रही थी, तब संविधान सभा में महावीर त्यागी जैसे कुछ सदस्यों ने यह सवाल भी पूछ लिया था कि संविधान में गांधी कहां हैं? लेकिन इस सवाल का जवाब किसी ने नहीं दिया। चाहे नेहरू हों या अन्य कोई, भारतीय गांवों की अहमियत को भूल गए। भारतीय गांव क्या थे, उनकी ताकत और उपलब्धि क्या थी, इसे जवाहर लाल के एक दौर में करीबी रहे जयप्रकाश नारायण ने सही तरीके से व्याख्यायित किया है। अपने लेख भारतीय राज व्यवस्था का पुनर्निर्माण में?जेपी ने प्राचीन काल से चली आ रही ग्राम व्यवस्था को लेकर बहुत उम्मीद जताई है जेपी ने लिखा है, 'भारत शायद लोकतंत्र की सबसे प्राचीन भूमि रहा है और उसके कुछ गणतंत्र हजार-हजार साल तक जीवित रहे हैं। ग्राम समुदायों का लोकतंत्र इतना सुदृढ़ और सक्षम था कि वह ब्रिटिश काल तक जारी रहा।'

सच तो यह भी है कि राजनीति के साथ आई कई कमियों के बावजूद आज भी गांव इन्सानियत के सबसे बड़े रखवाले हैं। गांव मनुष्य को जगह और खुलापन देने के मामले में भी आगे हैं। इन्सान की मशीनी जिंदगी और इससे उपजी पराधीनता की तुलना में गांवों में स्वाधीनता कहीं ज्यादा है। अवसाद भी वहां कम है। रिश्तों को निभाने का जज्बा अब भी ग्रामीण समाज में कहीं ज्यादा है। आर्थिक संसाधन खत्म होने के बाद शहरी इन्सान को लगता है कि उसकी जिंदगी के सारे रास्ते बंद हो चुके हैं, ऐसी सोच के बाद वह आत्महत्या जैसे कदम उठाने के लिए मजबूर हो जाता है। ऐसे हालात में भी गांव इन्सान को यह बताता है कि उसके लिए राहें अब भी खुल सकती हैं। बेशक वे ऐश्वर्य न दे पाएं, लेकिन पेट की भूख शांत करने में सहायक जरूर होंगे। गांधी जयंती पर गांवों को इस तरह से याद करते हुए क्या हम अपनी सांविधानिक गलतियों को दूर करने की कोशिश कर सकते हैं? प्रबुद्ध और नियंता समाज को इस दिशा में सोचना होगा।

बापू के आदर्शों को पीएम मोदी ने किया मूर्त

सुमित्रा गांधी कुलकर्णी

जब जून 2024 में नरेंद्र मोदी तीसरी बार प्रधानमंत्री बने, तो मुझे बहुत प्रसन्नता हुई। महात्मा गांधी या बापूजी जैसा कि मैं उन्हें बुलाती हूं, वह मेरे दादा थे। मैं उनके साथ 19 वर्ष की आयु तक रही, अब मैं 95 वर्ष की हो गई हूं और मुझे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी की तुलना गांधीजी से करने और अपने विचारों को कलमबद्ध करने की आवश्यकता महसूस हो रही है। मैंने अपने लंबे जीवनकाल में बहुत सारे नेताओं को जाना है, लेकिन नरेंद्र भाई के साथ मेरा जुड़ाव असाधारण है। इसकी शुरुआत वर्ष 1975 के आपातकाल के चुनौतीपूर्ण दौर में हुई थी। हालांकि मुझे वास्तविक रूप से वह क्षण याद नहीं है, लेकिन नरेंद्र भाई उस समय राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के एक युवा और ऊर्जावान प्रचारक थे। 1970 के दशक में अलगाववाद देश के ताने-बाने को खा रहा था। गुजरात से राज्यसभा सदस्य के रूप में पाकिस्तान से भारी घुसपैठ के कारण सीमावर्ती जिलों में हो रहे जनसांख्यिकीय परिवर्तन से मैं बहुत चिंतित थी। असम में यह घुसपैठ बहुत ज्यादा थी। उस समय मेरी पार्टी कांग्रेस ने इस मुद्दे को गंभीरता से नहीं लिया था। लेकिन मुझे अच्छी तरह याद है कि किस प्रकार नरेंद्र भाई उस समय कम उम्र में भी ऐसे मामलों को गंभीरता से लेते थे। वह उन दिनों भी ग्रामीण महिलाओं के सामने आने वाली चुनौतियों-व्यक्तिगत स्वच्छता; स्वच्छ पेयजल; प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल आदि से पूरी तरह परिचित थे। उन्होंने प्रधानमंत्री बनने के तुरंत बाद अनुकरणीय साहस का परिचय दिया और स्वतंत्रता दिवस के अपने संबोधन में राष्ट्रीय स्वच्छता की आवश्यकता को स्पष्ट किया। उन्होंने स्वच्छ भारत अभियान की नींव रखी, जिससे स्वच्छता में काफी सुधार हुआ और इसके साथ ही पूरे देश में महिलाओं की गरिमा और सुरक्षा में भी बढ़ोतरी हुई। मेरे दादाजी 'जन आंदोलन' में विश्वास करते थे, क्योंकि लोगों के इस प्रकार के आंदोलन स्थायी सामाजिक परिवर्तन का आधार हैं। नरेंद्र भाई का 'सबका' शब्द पर अटूट विश्वास है, जैसे कि सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और विकसित भारत। कोविड-19 महामारी के दौरान उनका 'मानवता सर्वप्रथम' युक्त नेतृत्व देश की सीमाओं तक ही सीमित नहीं रहा, बल्कि इसने संपूर्ण विश्व को अपने दायरे में समाहित कर लिया। उन्होंने हमें अनुच्छेद 370 की घुटन भरी स्थिति से मुक्त किया। वह व्यवस्थित रूप से उस एजेंडे को पूरा कर रहे हैं, जिसे आजादी हासिल होने के बाद पूरा किया जाना चाहिए था। नागरिकता संशोधन अधिनियम (सीएए) इसका एक उदाहरण है। बापूजी और नरेंद्र भाई में सबसे बड़ी समानता, दोनों की जड़ों में आध्यात्मिकता है। दोनों में श्रीमद्भगवद्गीता में बताए गए स्थितप्रज्ञ के लक्षण स्पष्ट दिखते हैं। विपक्ष द्वारा किए जाने वाले व्यक्तिगत हमलों पर भी चुप्पी साधे रहना नरेंद्र भाई के राजऋषि होने की निशानी बयां करता है। उन्होंने राजनीतिक लाभ से ऊपर सदैव राष्ट्रीय हितों को रखा है। यदि आज बापूजी जीवित होते, तो वह नरेंद्र मोदी के सबसे बड़े समर्थक होते। और उन लोगों को हिदायत देते, जिन्होंने उनका नाम तो हड़प लिया, पर अपने राजनीतिक लाभों के लिए देश व समाज को विभाजित करना ही उनका उद्देश्य बन गया है। नरेंद्र मोदी ने वास्तव में गांधीजी के आदर्शों को आधुनिक भारत के विकास के एजेंडे में फिर से जीवंत कर दिया है।

क्यों होने जा रहा हरियाणा में सत्ता पलट

योगेन्द्र यादव

हरियाणा विधानसभा चुनाव के तीन संभावित परिणाम हो सकते हैं। पहला- सत्तारूढ़ भाजपा के खिलाफ हवा चलेगी और कांग्रेस स्पष्ट बहुमत से सरकार बनाएगी। दूसरा- यह हवा चुनावी आंधी की शक्ल लेगी और कांग्रेस को भारी बहुमत मिलेगा। तीसरा- कांग्रेस के पक्ष में सुनामी आ जाए और भाजपा सहित बाकी दल इनी-गिनी सीटों पर ही सिमट जाएं। यह कोई चुनावी भविष्यवाणी नहीं है। इन तीनों संभावनाओं में से कौन सी सच होगी और किस पार्टी को कितनी सीटें आएंगी, इसका आकलन करने की यहां कोई कोशिश नहीं की गई है। यह तो मात्र राजनीति का सामान्य ज्ञान है, जो प्रदेश में हर व्यक्ति जानता है। इसमें कोई संदेह नहीं कि यह चुनाव भाजपा और कांग्रेस के बीच सीधा मुकाबला है। पिछले विधानसभा चुनावों की तरह इस बार अभय चौटाला की इनैलो, दुष्यंत चौटाला की जजपा, बसपा या आम आदमी पार्टी और आजाद उम्मीदवारों की बड़ी भूमिका नहीं रहेगी, यह भी हर कोई जानता है कि इस सीधे मुकाबले में कांग्रेस को स्पष्ट बढ़त है।

उपरोक्त तीनों संभावनाओं में जो भी सच हो, यह स्पष्ट है कि तीनों स्थिति में सरकार कांग्रेस की ही बनती दिखाई देती है। हरियाणा का वर्तमान विधानसभा चुनाव उन चुनावों की श्रेणी में आता है, जिनका फैसला चुनाव की घोषणा होने से पहले ही हो चुका होता है। किस पार्टी ने कौन सा उम्मीदवार खड़ा किया, किस पार्टी ने अपने मैनिफेस्टो में क्या कहा और चुनाव प्रचार में क्या रणनीति अपनाई, इससे सीटों की संख्या कुछ ऊपर-नीचे हो सकती है, लेकिन इनसे चुनाव का बुनियादी परिणाम पलटने की संभावना बहुत कम दिखती है। दरअसल इस चुनाव का बुनियादी रुझान कोई एक साल या उससे भी पहले ही तय हो चुका था, जब सत्ता और समाज के बीच खाई बन चुकी थी। सच कहें तो जनता के मोहभंग की शुरुआत भाजपा द्वारा दूसरी सरकार बनाने के साथ ही हो गई थी। भाजपा विरोधी वोट को गोलबंद करने वाली दुष्यंत चौटाला की जननायक जनता पार्टी ने जिस तरह पासा पलट कर भाजपा की सरकार बनवाई, उसी से ही जनता के मन में खटास पैदा हो गई थी।

सत्ता और समाज को जोडने् वाला धागा किसान आंदोलन के दौरान टूट गया। हरियाणा की भाजपा सरकार ने किसान आन्दोलन को रोकने, उसका दमन करने और फिर उसके खिलाफ दुष्प्रचार करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। उधर खेतीहर समाज पूरी तरह से किसान आंदोलन के साथ खड़ा हो गया। अखिर में जब केंद्र सरकार को किसानों के सामने झुकना पड़ा, तो हरियाणा सरकार की इज्जत भी गई और इकबाल भी जाता रहा। यौन शोषण के विरुद्ध महिला पहलवानों के संघर्ष ने सरकार की बची-खुची वैधता भी खत्म कर दी थी। प्रदेश में व्यापक बेरोजगारी तो थी ही, ऊपर से अग्निवीर योजना ने ग्रामीण युवाओं के सपनों पर पानी फेर दिया। यानी किसान, जवान और पहलवान ने मिलकर चुनाव शुरू होने से पहले ही भाजपा को पछाड़ दिया था। इस वर्ष हुए लोकसभा चुनाव में ही प्रदेश के बदले हुई राजनीतिक समीकरण की झलक मिल गई थी। पांच साल पहले हुए लोकसभा चुनाव में भाजपा की कांग्रेस पर 30 प्रतिशत की बढ़त थी, जो इस चुनाव में साफ हो गई। दोनों पार्टियों को 5-5 सीटें मिलीं और कांग्रेस-'आप' गठजोड़ को भाजपा से अधिक वोट आया। फिर भी लोकसभा चुनाव में राष्ट्रीय एजेंडा और प्रधानमंत्री की लोकप्रियता के सहारे भाजपा बुरी हार से बच गई। लेकिन विधानसभा चुनाव में राज्य सरकार की कारगुजारी से बचने का कोई उपाय नहीं है।

मनोहर लाल खट्टर के नेतृत्व में भाजपा की पहली सरकार ने फिर भी भ्रष्टाचार कम करने और नौकरियों को योग्यता के अनुसार देने के मामले में कुछ साख कमाई थी, लेकिन दुष्यंत चौटाला के सहयोग से बनी दूसरी सरकार ने भ्रष्टाचार, अहंकार और असंवेदनशीलता की छवि हासिल की। अंततः भाजपा को मनोहर लाल खट्टर को पदमुक्त करना पड़ा। नए मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने जरूर फुर्ती दिखाई और कई लोकप्रिय घोषणाएं भी कीं, लेकिन तब तक देर हो चुकी थी। जनता अपना मन बना चुकी थी इस पृष्ठभूमि में अपनी कमजोरी को समझते हुए भाजपा नेतृत्व ने टिकट बंटवारे में सख्ती और रणनीति से काम लिया, लेकिन उससे पार्टी में बिखराव बढ़ा है। कांग्रेस के टिकट बंटवारे में भी खूब खींचतान हुई और पार्टी की अंदरूनी गुटबाजी सामने आई। लेकिन इस बार जमीन पर इससे कोई बड़ा फर्क हुआ हो, ऐसा नहीं दिखता।

दोनों बड़ी पार्टियों ने अपने मैनिफैस्टो जारी कर दिए हैं। भाजपा को भी बेरोजगारी, अग्निवीर और किसानों को एम.एस.पी. जैसे मुद्दों को स्वीकार करना पड़ा है। लेकिन जमीन पर किसी भी मैनिफैस्टो की ज्यादा चर्चा सुनाई नहीं देती। अंत में भाजपा के पास हिंदू-मुसलमान या फिर पैंतीस-एक (यानी जाट और गैर जाट का जातीय ध्रुवीकरण) की चाल बची है। इसका कुछ असर चुड्क्षनदा सीटों पर पड़ सकता है। लेकिन इस बार यह ध्रुवीकरण पूरे प्रदेश के फैसले को प्रभावित करता दिखाई नहीं पड़ रहा। चुनाव प्रचार के आखिरी दौर में सबका ध्यान उम्मीदवारों की व्यक्तिगत लोकप्रियता, स्थानीय जाति समीकरणों और चुनाव प्रचार के दाव-पेंच पर है। इससे कुल परिणाम चाहे न बदले, इसका सीटों के आंकड़े पर असर पड़ेगा। आखिरी दौर में जो पार्टी आगे दिखाई देती है, उसे भेड़चाल के वोटों का भी फायदा हो जाता है। अगर भाजपा जाट और गैर जाट ध्रुवीकरण में आंशिक रूप से सफल होती है, तो वह कांग्रेस को सामान्य बहुमत पर रोक सकती है। लेकिन अगर यह रणनीति कामयाब न हो पाए और आखिरी दिनों में कांग्रेस ढील न दिखाए तो वह इस हवा को आंधी या सुनामी में बदल भारी बहुमत भी प्राप्त कर सकती है।

छत्तीसगढ़ी व्यंग्य

कल्लू कुकुर के पावर

डॉ. सुधीर शर्मा

हिन्दी भू-भाग में आंचलिक और राज्य भाषाएं हिन्दी को सामर्थ्य देती हैं। इसका गुरतुरपन और गजब की संप्रेषणीयता इसे हिन्दी के साहित्य की विविध विधाओं में सुपाच्य करती हैं। तुलसी, विद्यापति और कबीर के बाद रेणु, नागार्जुन और धूमिल जैसे लोगों ने जहां अपनी मातृभाषाओं के साथ-साथ हिन्दी को समृद्ध किया, वहीं अनेक लेखकों ने अपनी-अपनी मातृभाषाओं में विविध विधाओं में प्रचुर लेखन किया और इन विधाओं को इन भाषाओं में स्थापित किया है।

छत्तीसगढ़ी में व्यंग्य-लेखन- निबंध लेखन की बात करें तो अनेक नाम सामने आते हैं छत्तीसगढ़ के इतिहासकारों ने शुकलाल पाण्डेय द्वारा कॉमेडी आफ एरर्स के छत्तीसगढ़ी अनुवाद छत्तीसगढ़ी भूल-भूलैया को प्रथम व्यंग्य कहा है। छत्तीसगढ़ में आजादी के बाद की कविताओं में भी व्यंग्य-कविताएं लिखीं गई हैं। द्वारिकाप्रसाद तिवारी विप्र, कोदू राम दलित, भगवती सेन, कुंजबिहारी चौबे,आदि की रचनाएं प्रस्तुत हुई हैं। आधुनिक समय में हिन्दी में छत्तीसगढ़ में प्रचुर व्यंग्य निबंध लिखे गए और व्यंग्य आलोचकों ने छत्तीसगढ़ को व्यंग्यगढ़ के रूप में संबोधित किया।

श्यामलाल चतुर्वेदी, पालेश्वर शर्मा और नारायण लाल परमार के लेखन में व्यंग्य की झलक दिखाई देती है। इधर रामेश्वर वैष्णव, लक्ष्मण मस्तुरिहा,सुशील भोले, कुबेर, सुशील यदु, बीरेन्द्र सरल, संजीव तिवारी, जैसे अनेक नाम हैं जिन्होंने छत्तीसगढ़ी आधुनिक व्यंग्य निबंध लेखन को समृद्ध किया है। रामेश्वर वैष्णव में विशुद्ध व्यंग्य निबंध रचने की गजब क्षमता है और उनके लेखन की संप्रेषणीयता का जवाब नहीं है।

ऐसी गौरवशाली परम्परा को आगे बढ़ाते हुए छत्तीसगढ़ के चर्चित रंगकर्मी, सिनेकर्मी, लेखक, जनसंपर्क विशेषज्ञ और कुशल संचालक जैसे अनेक विधाओं में असीम ऊर्जा के साथ सक्रिय लेखक श्री विजय मिश्रा %अमित% अपने छत्तीसगढ़ी व्यंग्य लेखन में नवीन ताजगी और गजब की संप्रेषणीयता के साथ प्रकट हुए हैं ।

विजय मिश्रा की नव प्रकाशित व्यंग संग्रह कल्लू कुकुर के पावर आज की राजनीति, प्रशासन, व्यवस्था-कुव्यवस्था और बनावटी जीवन-शैली के विविध कथ्यों, प्रसंगों और विसंगतियों पर प्रहार करने का सफल प्रयास है। व्यंग्यकार के पास एक परिपक्व रंग-दृष्टि है। अपने परिवेश के पात्रों को परखने की सूक्ष्म कला है। वे इन पात्रों में विसंगतियों के साथ वैशिष्ट्य का भी मूल्यांकन कर लेते हैं। सामाजिक घटनाओं, तथ्यों,दृश्यों और जीवन-शैली को भी पैनी दृष्टि से वे देखते-समझते हैं, इसीलिए उनके पास अभिव्यक्ति की रचनात्मक कला भी है। प्रस्तुत व्यंग्य संग्रह अपने नाम के अनुरूप हमारे समय के विविध काले पात्रों का पोस्टमार्टम भी करता है।

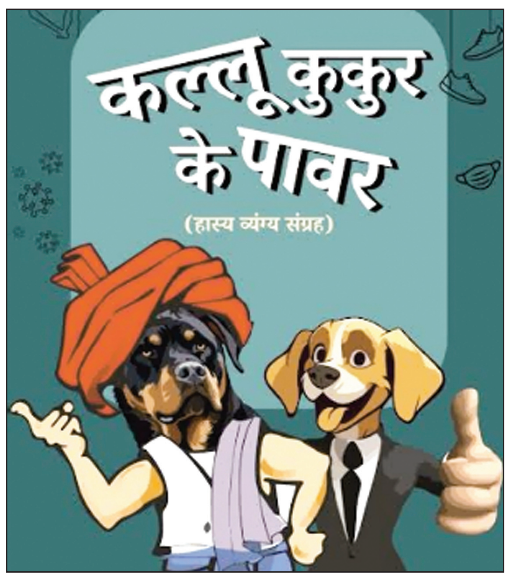

कल्लू कुकुर के पावर व्यंग संग्रह में 33 व्यंग्य-रचनाएं हैं, जो विषय के वैविध्य के साथ अनेक रंगों में रची-बुनी गई हैं। समीक्षक और प्रसिद्ध व्यंग्यकार श्री रामेश्वर वैष्णव ने इस संग्रह में समाहित रचनाओं को ठेठ छत्तीसगढ़ी बताया है। इन व्यंग्य-रचनाओं में संवेदना के पुट ज्यादा हैं। प्रथम व्यंग्य चिखला पुरान शीर्षक से है। जिसके आरंभ में पत्नी व्यंग्य चेतस होकर प्रकट होती हैं और लेखक से कहती हैं- वाह रे कलम के पूजेरी, एक पाव पेड़ा म सरस्वती माई ल ललुवारत हस, थोरको लाज नी लागत हे। कैसे एक लेखक अपनी लेखनी को संवारने और प्रसारित करने विविध जतन करता है, इस पर करारा व्यंग्य है। भैंस की पूंछ किस तरह से चिखला पुरान का ताना-बाना बुनती है, यहां भैंस भी माता है। यह चिखला आज की व्यवस्था पर प्रहार करता है और भ्रष्ट नेताओं पर कालिख की तरह चिपक कर भी पछताता है।

एक अन्य व्यंग्य रचना भगवान गणेश की पीड़ा पर केन्द्रित है। लोग गणेश जी को बैठाकर किस तरह उन पर अत्याचार करते हैं, इस पर करारा व्यंग्य है। हमारे समय का क्रूर काल कोरोना काल भी इस संग्रह में पात्र बनकर उभरा है। यहां मास्क और कोरोना के मरीज की त्रासदी व्यंग्य बनकर कहीं गुदगुदाती है तो कहीं भाव-विभोर कर देती है।एक व्यंग्य रचना में तो गोल्लर रावन के प्रतीक को ही खाकर नए भाव गढ़ता है। घर और दुकानों में टोटका के रूप में टंगा नींबू-मिर्च भी सटीक व्यंग्य का रूप ले लेता है।

विजय मिश्रा अमित की खासियत ही है कि वे इन निबंधों में लोक और लोकभाषा के माध्यम से लालित्य का संचार करते हैं। इतनी लालित्यपूर्ण भाषा-शैली और मारक शब्द कथ्य और पात्र को व्यंग्य का सुंदर प्रतीक बना देते हैं। पुस्तक का शीर्षक व्यंग्य कल्लू कुकुर के पावर में छत्तीसगढ़ के शासन-प्रशासन में दुर्दशा और उपेक्षा पर प्रहार किया गया है। कल्लू कुकुर के बहाने व्यंग्यकार छत्तीसगढ़ी मनुष्य की सहजता और उसके शोषण को इंगित करता है।

छत्तीसगढ़ का इंसान तो इंसान स्वामीभक्त कुकुर भी बाहरी उपेक्षा का शिकार है, वह उदास होकर रो भी लेता है। इस प्रसंग में मुझे रवीन्द्र कंचन याद आते हैं जिन्होंने एक कविता का शीर्षक रखा था मारबो फेर रोवन नइ दन। यह व्यंग्य-संग्रह छत्तीसगढ़ी गद्य को नवीन रस देते हुए समृद्ध करता है तथा एक ओर हास्य पैदा करने में सफल है तो दूसरी और तिलमिलाहट को और बढ़ाता है।

रचनाएं पाठक का पीछा करती हैं और देर तक सोचने को विवश करती हैं कि उनका परिवेश किस तरह संकट में हैं। किस तरह विविध घटनाएं जीवन के सुख-दुख के साथ भविष्य के बनते-बिगड़ते सपनों को प्रभावित करती हैं। रंग-दृष्टि और अभिनेयता की पूंजी होने के कारण लेखक अनेक स्थानों पर प्रहसन जैसे भाव भी पैदा कर लेते हैं। लगता है कि ये व्यंग्य रचनाएं भविष्य में नाटकों का रूप न ले लें और लेखक अपनी प्रतिभा के अन्य जौहर भी हमें दिखाने आतुर हो जाएं। कुल मिलाकर इन व्यंग्य निबंधों के माध्यम से श्री विजय मिश्रा %अमित% ने छत्तीसगढ़ी के परिपक्व लेखन में अपने को स्थापित कर लिया है। उनके लेखक का भविष्य उज्ज्वल है, क्योंकि अभी उनके अनुभव-खजाने में से अनेक प्रसंग, घटनाएं, पात्र और दृश्य निकलने आतुर होंगे ।

अयोध्या : भाजपा से जनता की दूरी क्यों?

शिशु शर्मा शांतल

दिन 22 जनवरी, 2024, अयोध्या नगरी में भव्य राम मंदिर का लोकार्पण। देश भर के लोगों, खास तौर पर राम भक्तों में जबरदस्त उत्साह का ऐसा माहौल कि समूचा देश राममय हो गया। केंद्र में सत्ताधारी भाजपा सरकार के कर्णधारों को लगा कि 6 महीने बाद होने वाले लोकसभा चुनावों में पार्टी का बेड़ा पार होने से चुनावी नैया बेहद आसानी से किनारे लग जाएगी। मगर, यह सब एक ख्वाब ही रहा क्योंकि भारतीय जनता पार्टी को 2019 की तुलना में 2024 के लोकसभा चुनाव में नुकसान उठाना और केंद्र में मजबूरन गठबंधन सरकार बनाने को विवश होना पड़ा। 2024 के लोकसभा चुनाव में देश उस समय आश्चर्यचकित रह गया, जब अयोध्या पर आधारित फैजाबाद लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र से भाजपा उम्मीदवार को भी 'राम लहर' में पराजय का सामना करना पड़ा। यह सब तो आज इतिहास के पन्नों में दर्ज हो चुका है लेकिन अगर आज की बात करें तो भारतीय जनता पार्टी के प्रति लोगों की नाराजगी में एक फीसदी की भी कमी नहीं आई है और यह बदस्तूर कायम है। अयोध्या के स्थानीय निवासी इसके कई कारण गिनाते हैं। अयोध्या में रामपथ के निर्माण में सरकारी मुआवजे की बंदरबांट एक प्रमुख बड़ा मुद्दा न केवल पहले था, बल्कि आज भी लोगों की जुबान पर है। यह मुआवजा अनेक उन लोगों को हासिल हो गया, जोकि एक पैसा पाने के भी पात्र नहीं थे जबकि धक्कमपेल में वास्तविक हकदार पीछे ही छूट गए। यह कहना है स्थानीय लोगों का। इतना ही नहीं, जिन लोगों को फार्चूनर गाड़ी के स्पैलिंग तक नहीं आते थे, आज वही इस फार्चूनर गाड़ी में घूमने का आनंद ले रहे हैं और वास्तविक पात्रों के जले पर नमक छिड़क रहे हैं, यह कहना है अयोध्या में गैस्ट हाऊस चलाने वाले एक व्यक्ति का, जो अपना नाम सार्वजनिक नहीं करना चाहते। वे यहीं नहीं रुके और कहते हैं, ''आज के जमाने में एक लाख का मुआवजा क्या हैसियत रखता है, क्या यह उन स्थानीय लोगों से मजाक नहीं किया गया?'' भाई साहिब, हम कहां अपना कारोबार करें। रामपथ का निर्माण तो कर दिया है अब श्री राम मंदिर के आसपास के इलाके में हमें अपना कारोबार भी नहीं करने दिया जा रहा है। पुलिस हमें हमेशा भगाने पर ही तुली रहती है। हमारी पुरानी दुकानें रामपथ की भेंट चढ़ गईं और अब रेहड़ी लगाने के लिए इधर-उधर भटकना पड़ रहा है, जिससे कारोबार चौपट होकर रह गया है। ये शब्द उन अधिकांश रेहड़ी फड़ी वालों के हैं, जो अपने छोटे कारोबार के माध्यम से अपना पेट पालते हैं। ऐसी स्थिति में उनके सामने परिवार के भरण-पोषण की चिंता आ खड़ी हुई है। श्री राम मंदिर देखने के लिए देश-विदेश से आने वाले भक्तों की भीड़ को देखते हुए अयोध्या धाम में ई-रिक्शा और टैक्सी चालकों की संख्या भी अप्रत्याशित रूप से काफी बढ़ चुकी है। ये लोग अब स्थानीय पुलिस द्वारा उन्हें अक्सर रोके जाने से बेहद परेशान दिखते हैं। ''जब पुलिस की मर्जी होती है तो अचानक नाका लगा दिया जाता है और हमें इधर-उधर के रास्तों पर मोड़ दिया जाता है, जबकि बड़ी-बड़ी बसें तो राम मंदिर के समीप राम पथ पर बिना किसी रोक-टोक के आ जा सकती हैं लेकिन हम ई-रिक्शा और टैक्सी वालों को उधर जाने की मनाही है। आखिर बाल-बच्चों का पेट भरण-पोषण कैसे होगा?'' अयोध्या प्रशासन से यह सवाल सभी ई-रिक्शा और टैक्सी चालकों का है। इसके अलावा अयोध्या को नगर निगम का दर्जा मिलने के बाद से इसमें शामिल अनेक गांवों के लोग निगम का हिस्सा नहीं बनना चाहते और वे सभी पहले की भांति बिना किसी रोक-टोक के स्वच्छन्द रूप से ही रहना चाहते हैं। अयोध्या के बदलते परिवेश में आज स्थिति यह है कि बड़े-बड़े कारोबारी अपना सिक्का जमाने में लगे हैं और छोटे कारोबारी हाथ पर हाथ धरे बैठने को विवश हैं। लोकसभा चुनाव में करारी पराजय के बाद भी अयोध्या में भारतीय जनता पार्टी ने कोई सबक नहीं लिया है और ऐसे लोगों की नाराजगी दूर करने का कोई यत्न नहीं किया गया, जिसके चलते लोग आज भी भगवा पार्टी से मुंह फुलाए हुए हैं। लेकिन इस सब के बावजूद भगवान श्री राम की नगरी में जय श्री राम के उद्घोष दिन-रात लगातार कानों में गूंजते रहते हैं और देश-विदेश से आने वाले लोग भगवान श्री राम के समक्ष नतमस्तक होकर खुद को धन्य मानते हैं।

फाउंडेशन मेकअप का बेस, चमकाए फेस

मेकअप बेस के तौर पर फाउंडेशन का इस्तेमाल किया जाता है। इससे चेहरे पर आए कील-मुंहासे, झांइयां तथा दाग-धब्बे छिप जाते हैं। पर इसका सही इफेक्ट तभी आता है, जब यह सही तरीके से लगाया जाए। आइए समझते हैं फाउंडेशन की एबीसीडी।

मेकअप बेस के रूप में फाउंडेशन का इस्तेमाल किया जाता है। इससे चेहरे की त्वचा चिकनी और समतल बनती है तथा मेकअप को अधिक देर तक रखने के लिए भी फाउंडेशन का इस्तेमाल किया जाता है। यह मेकअप का आधार होने के साथ-साथ त्वचा की रक्षा भी करता है और इसके इस्तेमाल से कील-मुंहासे, झांइयां तथा दाग-धब्बे छिप जाते हैं।

फाउंडेशन लगाने का सही तरीका फाउंडेशन लगाने से पहले चेहरे और गर्दन की त्वचा को क्लींजिंग क्रीम या लोशन से साफ करें। उसके बाद रुई की मदद से चेहरे और गर्दन पर फाउंडेशन लगाना चाहिए। या फिर अपने चेहरे के विभिन्न हिस्सों पर फाउंडेशन को डॉट्स की तरह लगाएं। फिर अपनी अंगुलियों या गीले स्पंज से चेहरे पर अंदर से बाहर की ओर हल्के से मसाज करते हुए फाउंडेशन को मिलाएं। तैलीय त्वचा पर फाउंडेशन लगाने से पहले रुई से एस्ट्रिंजेंट लोशन लगाएं। और फिर कुछ देर बाद फाउंडेशन लगाएं। एस्ट्रिंजेंट लोशन से त्वचा की चिकनाई दूर होती है। इसी तरह ड्राई स्किन पर फाउंडेशन लगाने से पहले ग्लिसरीन या मॉइश्चराइजर पूरे चेहरे पर लगाना चाहिए।

सामान्य त्वचा के लिए कोई भी फाउंडेशन चल सकता है, मगर ऑयली त्वचा के लिए वॉटर बेस्ड और शुष्क त्वचा के लिए मॉइश्चराइजर फाउंडेशन अच्छा होता है। आपकी स्किन ड्राई है, तो फाउंडेशन में दो-तीन बूंद पानी मिलाकर चेहर पर लगाएं। चेहरे पर फाउंडेशन अधिक न लगाकर उचित मात्रा में ही लगाएं।

फाउंडेशन लगाने के बाद टिश्यू पेपर से उसे इकसार कर लें और थोड़ी देर सूखने दें। उसके बाद उस पर फेस पाउडर लगाएं। रात और दिन के हिसाब से फाउंडेशन का चयन करना उचित होता है। इसमें गोल्ड फाउंडेशन नाइट पार्टी के लिए सही होता है।

फाउंडेशन का चुनाव

फाउंडेशन का मतलब सिर्फ त्वचा के रंग को बदलना ही नहीं होता, बल्कि त्वचा के निकटतम रंग से मैच करना होता है। इसलिए फाउंडेशन का चुनाव अपने चेहरे के रंग के अनुसार ही करें। इनका चुनाव आप अपनी स्किन को ध्यान में रखकर कर सकती हैं। बाजार में फाउंडेशन कई रूपों में उपलब्ध हैं, जैसे लिक्विड, क्रीम, स्टिक, पाउडर फॉर्म में। यदि कोई दुविधा हो, तो ब्यूटी एक्सपर्ट से पूछने में जरा भी न हिचकें। गर्मियों में पैनस्टिक या केक फाउंडेशन हार्ड हो जाते हैं। इस स्थिति में फाउंडेशन लगाने से पहले थोड़ा पानी मिलाएं।

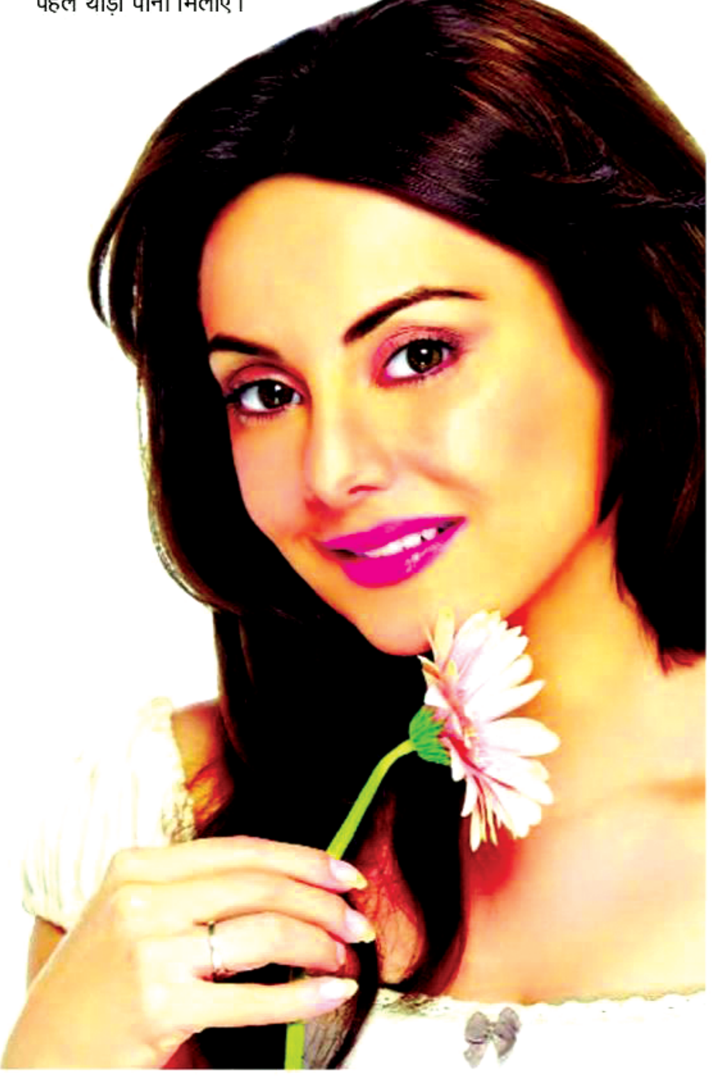

कैसे लगाएं

फाउंडेशन से न सिर्फ चेहरे को आकर्षक बनाया जाता है, बल्कि इससे चेहरे की बनावट में भी बदलाव लाया जा सकता है। मगर यह तभी संभव है, जब आप इसे लगाना जानती हों। फाउंडेशन सिर्फ चेहरे पर ही नहीं, बल्कि गर्दन और कान के हिस्से पर भी एकसार लगाएं। अगर चेहरा गोल हो, तो उस पर गहरे रंग का फाउंडेशन लगाएं। यदि फेस स्क्वायर या डायमंड शेप है, तो जबड़े और ठोड़ी पर गहरे रंग का फाउंडेशन तथा शेष चेहरे पर उससे हल्के रंग का फाउंडेशन लगाएं। यदि आंखों के नीचे की त्वचा का रंग हल्का है, तो यहां गहरे रंग का फाउंडेशन लगाना चाहिए। आंखों के नीचे काले निशान या झांइयां होने की स्थिति में वहां हल्के रंग का फाउंडेशन लगाएं। चौड़ी नाक को पतला दिखाना हो, तो बाकी चेहरे की तुलना में नाक के दोनों ओर गहरे रंग का फाउंडेशन लगाएं। अगर गालों की हड्डियां उभरी हुई हों, तो उसके नीचे गहरे रंग का फाउंडेशन लगाएं।

फाउंडेशन लगाने के बाद चेहरे पर फेस-पाउडर लगाना चाहिए। पाउडर फाउंडेशन के शेड का अथवा उससे एक शेड हल्का लगाना चाहिए। फाउंडेशन की तरह ही फेस पाउडर अनेक रंगों में उपलब्ध है। इसलिए इसका चुनाव त्वचा के रंग और फाउंडेशन के शेड के अनुसार ही करें।

नैचुरल है इसलिए खूबसूरत है

अगर बीते कुछ सालों की बात करें, तो स्वास्थ्य और सौंदर्य के क्षेत्र में हर्बल और ऑर्गेनिक उत्पादों के प्रति लोगों का रुझान काफी बढ़ा है। इसका कारण भी साफ है, ऐसे प्रोडक्ट्स का त्वचा पर किसी तरह का साइड इफेक्ट नहीं होता। इसलिए यह स्किन फ्रेंडली भी है। एक सर्वे के अनुसार महिलाएं एक दिन में लगभग 12 तरह के कॉस्मेटिक्स यूज करती हैं, जिसमें लगभग 175 तरह के केमिकल होते हैं। इनके नियमित इस्तेमाल से त्वचा संबंधी कई समस्याएं होती हैं, क्योंकि जो भी कॉस्मेटिक्स हम इस्तेमाल करते हैं, उनमें से 68 फीसदी हिस्सा हमारी त्वचा सोख लेती है। ऐसे में साइड इफेक्ट्स से बचने के लिए नैचुरल कॉस्मेटिक्स सबसे बेहतर विकल्प हैं। ये त्वचा की खूबसूरती को बढ़ाकर उसे जवां बनाए रखते हैं।

क्या है आर्गेनिक प्रोडक्ट

नैचुरल अथवा ऑर्गेनिक कॉस्मेटिक्स उन्हें कहा जाता है, जिनके निर्माण में किसी भी तरह के केमिकल तत्व या गंध का उपयोग नहीं होता। संवेदनशील त्वचा वालों के लिए इस तरह के कॉस्मेटिक्स सबसे बेहतर हैं। प्राकृतिक चीजों से बने होने के कारण ये कॉस्मेटिक्स प्राकृतिक गुणों और पौष्टिक तत्वों से भरपूर होते हैं।

प्राकृतिक चमक खोने लगी है

उम्र बढ़ने के साथ ही त्वचा अपनी प्राकृतिक चमक खोने लगती है। ऐसे में प्राकृतिक उत्पाद त्वचा के प्राकृतिक तत्वों का क्षरण रोक त्वचा को चमकदार व लचीला बनाते हैं। ऐसे प्रोडक्ट से एलर्जी व रिएक्शन का खतरा कम होता है, क्योंकि प्राकृतिक उत्पादों से हमारी त्वचा और शरीर की केमिस्ट्री के बीच सामंजस्य बना रहता है।

खिचड़ी स्वाद भी, सेहत भी

खिचड़ी शीघ्र पचने वाला खाना है। ज्यादातर खिचड़ी दाल चावल की बनाई जाती है। लेकिन अगर इस खिचड़ी में सब्जियां डालकर बनाएं, तो यह खिचड़ी बड़ी ही जायकेदार हो जाती है और यह पहले से अधिक पौष्टिक भी हो जाती है। बनाना भी बहुत ही आसान। स्वादिष्ट भी और स्वास्थ्यवर्धक भी। तो आइये क्यों न आज तरह-तरह की खिचड़ी बनायें।

साबूदाना खिचड़ी

सामग्री

साबूदाना - 150 ग्राम, तेल या घी - 1।5 टेबल स्पून, हींग - 1 पिंच, जीरा - आधा छोटी चम्मच, हरी मिर्च - 2 (बारीक कतरी हुई), मूंगफली के दाने - 1 टेबल स्पून,पनीर - 70 ग्राम (यदि आप चाहें), आलू - 1 मीडियम आकार का, अदरक - 1 इंच का टुकड़ा (कद्दूकस किया हुआ), नमक - स्वादानुसार,कसा हुआ नारियल - 1 टेबल स्पून (यदि आप चाहें), हरा धनियां - 1 टेबल स्पून (बारीक कतरा हुआ)

बनाने की विधि

साबूदाने को धो कर, 1 घंटे के लिये पानी में भीगने दीजिये। भीगने के बाद अतिरिक्त पानी निकाल दीजिये। यदि आप बड़े साबूदाना प्रयोग कर रहे हैं तो इसे 1 घंटा भिगोने के बजाय लगभग 8 घंटे भिगोये रखें।आलू को छील कर धीइये और छोटे छोटे क्यूब्स में काट लीजिये। पनीर को भी छोटे छोटे क्यूब्स में काट लीजिये। भारी तले की कढ़ाई में घी डाल कर गरम कीजिये। आलू के क्यूब्स गरम घी में डाल कर हल्के ब्राउन होने तक तल कर निकाल कर प्लेट में रख लीजिये। आलू के क्यूब्स तलने के बाद पनीर के क्यूब्स डाल कर हल्के ब्राउन तल कर उसी प्लेट में निकाल कर रखिये। मूंगफली के दाने को मोटा चूरा कर लीजिये इसे दरेरा करें एकदम बारीक चूरा न करें बचे हुये गरम घी में हींग और जीरा डाल दीजिये। जीरा भुनने के बाद, हरी मिर्च और अदरक डाल दीजिये, और चमचे से मसाले को चलाइये, इस मसाले मे मुंगफली का चूरा डाल कर एक मिनिट तक भूनिये। अब साबूदाना, नमक और काली मिर्च डाल कर अच्छी तरह 2 मिनिट चमचे से चला कर भूनिये। 2 टेबल स्पून पानी डाल कर धीमी गैस पर 7-8 मिनिट तक पकाइये, ढक्कन खोलिये और देखिये कि साबूदाने नरम हो गये है। यदि नहीं हुये हैं, और आपको महसूस हो कि अभी साबूदाने पकने के लिए और पानी चाहिये, तब 1 या 2 टेबल स्पून पानी डाल कर 4-5 मिनिट धीमी गैस पर और पकने दीजिये। आलू और पनीर के क्यूब्स मिला दीजिये। और चलाकर कढ़ाई को गैस से उतार लीजिये साबूदाना की खिचड़ी को प्याले या प्लेट में निकालिये। हरा धनियां नारियल ऊपर से डाल कर सजाइये।

वेजिटेविल खिचड़ी

सामग्री

चावल - एक कटोरी, मूंग की दाल - आधा कटोरी, आलू - 2 (छोटे टुकड़ों में कटे हुये), शिमला मिर्च - 1 (छोटे टुकड़ों में कटे हुये), मटर - आधा कटोरी (छिली हुई), हरी मिर्च - 2 (बारीक कटी हुई), अदरक - 1 इंच लम्बा टुकड़ा (कद्दू कस कर लें), देशी घी - 1 या 2 (बड़े चम्मच, आपकी इच्छा के अनुसार), हींग - 1-2 पिंच, जीरा - आधा छोटा चम्मच, काली मिर्च - 4-6 (दरदरी कूट लीजिये), लोंग - 4 (दरदरी कूट लीजिये), हल्दी - 1/6, छोटी चम्मच, नमक - स्वादानुसार, हरा धनियां - एक टेबिल स्पून (कटा हुआ)

बनाने की विधि

चावल ओर दाल को साफ करें, और अच्छी तरह धो कर, 1 घंटे के लिये पानी में भिगो दें। सभी सब्जियां धो कर काट ली गयीं हैं। कुकर में घी डाल कर गरम करें। अब गरम घी में हींग और जीरा डाल दीजिये। जीरा ब्राउन होने के बाद, काली मिर्च, लोंग, हल्दी पाउडर, हरी मिर्च, अदरक डाल दें। 3-4 बार चमचे से चलायें, अब इस मसाले में सारी सब्जियाँ डाल दीजिये। सब्जियों को 2-3 मिनिट चमचे से चला चला कर भूनिये। अब दाल और चावल डाल दें। 2-3 मिनट तक चमचे से चलाते हुये भूनें। जिस कटोरी से आपने दाल चावल नापे हैं, उसी से नाप कर पांच गुना पानी डाल दीजिये। (दाल चावल 1 1/2 कटोरी है, तो पानी 7 1/2 कटोरी डाल दीजिये) साथ ही स्वादानुसार नमक भी डाल दीजिये। कुकर बन्द कर दीजिये। जैसे ही एक सीटी आये, तुरन्त गैस बन्द कर दीजिये। कुकर की सीटी चमचे की सहायता से ऊपर करके, कुकर का प्रेसर आधा निकाल दीजिये। 4 - 5 मिनिट बाद जब कुकर का प्रेशर खतम हो जाय, कुकर खोलिये। आपकी वेजिटेविल खिचड़ी तैयार हो चुकी है। खिचड़ी को बड़े बाउल में निकाल लें। हरा धनियां ऊपर से डालकर सजायें। गरमा गरम वेज खिचड़ी में मक्खन डाल कर परोसे और साथ में दही, अचार या हरे धनिये की चटनी भी रखें।

रवा खिचड़ी

सामग्री

250 ग्राम रवा (सूजी), 1 गाजर, 30 ग्राम फलिया, 50 ग्राम मटर, घी, 1 प्याज, 1 टमाटर, 1 नींबू का रस, नमक स्वादानुसार, 5 हरी मिर्च, 5 ग्राम अदरक, 1 टी स्पून जीरा, 2 टी स्पून हल्दी पाउडर, 1/2 कप हरा धनिया, 1 टी स्पून सरसों के दाने, 10 ग्राम उड़द और चने की दाल।

कितने लोगों के लिए : 5

बनाने की विधि

एक पैन में तेल गरम करें जब तेल गरम हो जाए तो उसमें सरसों के दाने उड़द और चने की दाल डालकर फ्राई करें। जब दाल ब्राउन हो जाए तो उसमें बारीक कटा अदरक, जीरा और करी पत्ता डाल दें। अब इसमें प्याज, हरी मिर्च डाल दें जब प्याज और हरी मिर्च ब्राउन हो जाए तो इसमें टमाटर भी डाल दें। अब इसमें कटी हुई सब्जी डालकर फ्राई करें। रवा भी डाल दें और अच्छी तरह भून लें। नमक और 2 कप गरम पानी डालकर ढक्कन लगाकर पकने दें। 3 मिनट बाद ढक्कन हटाकर चलाये, घी, नींबू का रस और बारीक कटा हरा धनिया डालकर गरमागरम रवा खिचड़ी सर्व करें।

नमकीन खिचड़ी

सामग्री

एक कटोरी सादे चावल, पाव कटोरी मूँग मोगर, 1 बड़ा चम्मच घी, 2-3 हरी मिर्च बारीक कटी, करी पत्ता 4-5, नमक स्वादानुसार,

बनाने की विधि

सर्व प्रथम चावल व मूंग मोगर को साफ करके 3-4 पानी से अच्छी तरह धोकर बनाने के आधे घंटे पूर्व तैयार कर लें। अब प्रेशर कुकर में दाल-चावल और आवश्यकतानुसार पानी डालें तथा नमक डालकर कुकर को बंद करके दो सिटी ले लें। कुकर ठंडा होने के पश?चात एक कटोरी में घी गरम करके जीरे का बघार लगाकर ऊपर से कटी हरी मिर्च और मीठा नीम डालकर तैयार खिचड़ी में बघार डालकर अच्छी तरह मिक्स कर लें। अब इस तैयार खिचड़ी को मकर संक्रांति के दिन खुद भी खाएं और घर आए मेहमानों को भी खिलाएं।

लंबी-लंबी बात स्किन न कर दे खराब

अनचाहे मुंहासों से आपके चेहरे की खूबसूरती छिन जाती है। यही नहीं, ये जाते-जाते आपके चेहरे पर हमेशा के लिए निशान भी छोड़ जाते हैं। नेहा भी पिछले काफी समय से मुंहासों से परेशान थी। औरों की तरह वो भी सजना-संवरना चाहती थी, मगर मुंहासों की वजह से शोभा ऐसा नहीं कर पाती थी। घरेलू दवा से जब कोई फायदा नहीं मिला, तो नेहा ने स्किन के डॉक्टर से संपर्क किया। तब नेहा को पता चला कि उसके मुंहासों की वजह हारमोनल डिस्बैलेंस या खानपान नहीं है, बल्कि सेलफोन है। बेशक यह चौंकाने वाली बात है। पर शोधों की मानें, तो सेलफोन के लगातार इस्तेमाल से त्वचा संबंधी समस्याएं बढ़ रही हैं।

कैसे करता है स्किन को डैमेज

मोबाइल से कृत्रिम इलैक्ट्रो-मैग्नेटिक तरंगें (एईडब्ल्यू) निकलती हैं, जिससे त्वचा के टिश्यू गर्म हो जाते हैं। फिनलैंड के एक अध्ययन के अनुसार इससे त्वचा के प्रोटीन की संरचना खराब हो जाती हैं। इसके चलते त्वचा पर झुर्रियां नजर आने लगती है। जिससे असमय अधिक उम्र भी दिखने का अंदेशा भी जताया जा रहा है।

क्या है मोबाइल फोन डर्मेटाइटिस

सेलफोन के टचस्क्रीन और की-पैड में ढेर सारे बैक्टीरिया होते हैं, जो पहले आपकी अंगुलियों पर, फिर चेहरे पर आ जाते हैं। ये धूलकण त्वचा के रोम छिद्रों को जाम कर देते हैं, जिसकी वजह से त्वचा संबंधी समस्याएं पैदा होती हैं। हालांकि यह समस्या लंबे समय तक मोबाइल फोन पर लगे रहने के कारण ही उत्पन्न होती है। सेलफोन से होने वाली इस समस्या को 'मोबाइल फोन डर्मेटाइटिस' कहते हैं, जो मोबाइल फोन के हैंडसेट में मौजूद निकेल की प्रतिकूल प्रतिक्रिया का परिणाम है।

राष्ट्रीय/अंतरराष्ट्रीय
प्रमुख समाचार

पीएम मोदी ने की रजनीकांत के जल्द ठीक होने की कामना

नईदिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बुधवार (2 अक्तूबर) को तमिल सुपरस्टार रजनीकांत के स्वास्थ्य की जानकारी ली। उन्होंने अभिनेता की पत्नी लता से फोन पर बात कर उनके स्वास्थ्य हाल जाना। साथ ही, पीएम मोदी ने उनके शीघ्र स्वस्थ होने की कामना भी की। इस बात की जानकारी तमिलनाडु भाजपा प्रमुख के अन्नामलाई ने सोशल मीडिया के जरिए दी है। उन्होंने एक्स पर एक पोस्ट के जरिए कहा कि पीएम मोदी ने रजनीकांत के स्वास्थ्य के बारे में जानकारी लेने के लिए आज लता रजनीकांत से बात की। उन्होंने इस पोस्ट में जानकारी दी कि प्रधानमंत्री को सर्जरी के बाद रजनीकांत के स्वास्थ्य के बारे में जानकारी दी गई और पीएम ने उनके शीघ्र स्वस्थ होने की कामना की। 73 वर्षीय अभिनेता वर्तमान में चेन्नई के एक निजी अस्पताल में अपने हृदय की मुख्य रक्त वाहिका में समस्या के बाद से भर्ती हैं। रजनीकांत को कुछ दिनों में अस्पताल से छुट्टी मिलने की उम्मीद है।

अजित पवार ने मुंबई में केंद्रीय मंत्री शाह से मुलाकात की

मुंबई। महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव से पहले राज्य के उपमुख्यमंत्री अजित पवार ने बुधवार को केंद्रीय मंत्री एवं भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के वरिष्ठ नेता अमित शाह से यहां मुलाकात की। हालांकि, बैठक में क्या बात हुई, इस बारे में अभी कोई जानकारी नहीं है। यह बैठक अजित पवार के नेतृत्व वाली राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा) की महाराष्ट्र में सत्तारूढ़ 'महायुति' गठबंधन में मौजूदगी और उनकी पार्टी द्वारा कुछ भाजपा नेताओं के मुस्लिम विरोधी प्रचार का विरोध करने को लेकर उपजे मतभेद की पृष्ठभूमि में हुई है। मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे के नेतृत्व वाली शिवसेना के नेता भी राकांपा को लेकर नुक्ताचीनी करते रहे हैं। महायुति के तीनों सहयोगी दलों ने 228 सदस्यीय विधानसभा चुनाव के लिए सीटों के बंटवारे को अभी अंतिम रूप नहीं दिया है, जिसके अगले महीने होने की उम्मीद है। महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने पिछले हफ्ते स्वीकार किया था कि 2024 के लोकसभा चुनावों में भाजपा को अपने नए सहयोगी राकांपा से शिवसेना की तुलना में कम वोट मिले थे।

केजरीवाल एक-दो दिनों में सीएम आवास खाली कर देंगे

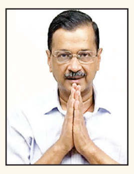

नईदिल्ली। आम आदमी पार्टी (आप) के संयोजक अरविंद केजरीवाल सिविल लाइंस में 'फ्लैगस्टाफ रोड' पर स्थित दिल्ली के मुख्यमंत्री का आधिकारिक आवास अगले एक दो दिनों में खाली कर देंगे क्योंकि उनके लिए नयी दिल्ली क्षेत्र में एक आवास तय हो गया है, जहां वह अपने परिवार के साथ रहने के लिए आएंगे। आप ने बुधवार को यह जानकारी दी। पार्टी सूत्रों ने दावा किया कि केजरीवाल अपने परिवार के साथ मंडी हाउस के पास फिरोज शाह रोड पर आप के राज्यसभा सांसदों को आवंटित दो सरकारी बंगलों में से एक में रहने के लिए जा सकते हैं। उन्होंने बताया कि दोनों बंगले रविशंकर शुक्ला लेन स्थित आप मुख्यालय से कुछ ही मीटर की दूरी पर हैं। इस महीने की शुरुआत में दिल्ली के मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा देने वाले केजरीवाल ने कहा कि वह नवरात्रि के दौरान फ्लैगस्टाफ रोड स्थित सरकारी आवास खाली कर देंगे। हिंदुओं का का यह त्योहार बृहस्पतिवार से शुरू हो रहा है।

एनडीए छोड़ने की अटकलों को चिराग पासवान ने किया खारिज

पटना। केंद्रीय मंत्री चिराग पासवान ने राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन छोड़ने की अटकलों पर बयान दिया है। साथ ही पीएम नरेंद्र मोदी के सात रिश्ते पर भी प्रतिक्रिया दी है। बुधवार को दिल्ली में पत्रकारों से बातचीत करते हुए कहा कि कोई भी व्यक्ति जो मेरे प्रधानमंत्री के साथ मेरे संबंधों से परेशान हैं, उनके लिए मैं शब्दों में स्पष्ट करना चाहता हूं कि भले ही मैंने इसे अपने कार्यों के माध्यम से कई बार व्यक्त किया है। लेकिन, कोई मुझे और मेरे प्रधानमंत्री को अलग नहीं कर सकता है। मोदी के हनुमान कहे जाने वाले चिराग पासवान ने कहा कि मैं एक बार और सभी के लिए यह बहुत स्पष्ट और स्पष्ट रूप से कहना चाहता हूं कि मेरे प्रधानमंत्री के साथ मेरा रिश्ता कभी खत्म नहीं होने वाला है। कयास लगाने वाले लगाते रहे। उन्होंने कहा कि मैंने दो दिन पहले भी कहा था और आज भी यह बात दोहराता हूं कि मेरे पिता की तरह मैं भी कभी सत्ता का भूखा नहीं रहा हूं।

फिर आमने-सामने जूनियर डॉक्टर्स और ममता सरकार

कोलकाता। पश्चिम बंगाल में प्रशिक्षु महिला डॉक्टर की दुष्कर्म के बाद हत्या के मामले को करीब दो महीने बीत चुके हैं। देशभर में अभी भी नाराजगी है। डॉक्टर लगातार विरोध-प्रदर्शन कर रहे हैं। सरकारी अस्पतालों में उचित सुरक्षा सहित विभिन्न मांगों को लेकर जूनियर डॉक्टरों ने आज भी हड़ताल जारी रखी। इस वजह से राज्य में स्वास्थ्य सेवाएं प्रभावित हुईं। आरजी कर मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल में एक महिला डॉक्टर की दुष्कर्म-हत्या की घटना के बाद देशभर के डॉक्टर सड़कों पर उतर आए थे। उन्होंने काम करना बंद कर दिया था। इससे मरीजों को दिक्कत होने लगी। इस पर नौ सितंबर को सुप्रीम कोर्ट ने सभी डॉक्टरों से काम पर लौटने का आग्रह किया था। बाद में डॉक्टर आंशिक रूप से 42 दिनों के बाद 21 सितंबर को काम पर लौट आए। उन्होंने सरकार द्वारा उनकी अधिकतर परेशानियों को दूर करने का वादा करने के बाद आवश्यक सेवाओं को फिर से शुरू किया था। हालांकि, सरकार पर अपने वादों को पूरा नहीं करने का आरोप लगाते हुए डॉक्टरों ने मंगलवार को काम बंद कर दिया।

गांधीजी के स्वच्छता के आह्वान को पीएम मोदी ने जन आंदोलन में बदला: नड्डा

नईदिल्ली। केंद्रीय मंत्री एवं भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के अध्यक्ष जे पी नड्डा ने बुधवार को कहा कि राष्ट्रपिता महात्मा गांधी द्वारा किए गए स्वच्छता के आह्वान को पिछले एक दशक में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने ''जन आंदोलन'' में बदल दिया है

भाजपा की दिल्ली इकाई के अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा और सांसद बांसुरी स्वराज सहित पार्टी के अन्य नेताओं के साथ नड्डा ने राष्ट्रीय राजधानी के लोधी कॉलोनी इलाकेमें 'स्वच्छता अभियान' में हिस्सालिया। नड्डा ने पत्रकारों से कहा कि भाजपा का 'सेवा पखवाड़ा' 17 सितंबर से शुरू हुआ था और यह आज गांधी जयंती के अवसर पर स्वच्छता अभियान के साथ संपन्न हो रहा है। उन्होंने कहा, ''प्रधानमंत्री बनने के बाद मोदी ने स्वच्छता को अपनाया और यह एक जन आंदोलन बन गया। हम जानते हैं कि स्वच्छता का आह्वान राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने किया था, लेकिन प्रधानमंत्री मोदी ने इसे एक जन आंदोलन में बदल दिया है।''

नड्डा ने कहा कि लोगों में व्यक्तिगत स्वच्छता की भावना बनाए रखने और कूड़ा-कचरा फैलाने से बचने के लिए जागरूकता पैदा करने तथा समाज को स्वच्छता के प्रति प्रोत्साहित करने का यह जन आंदोलन मोदी के नेतृत्व में पिछले 10 वर्षों से जारी है। उन्होंने कहा कि भाजपा भविष्य में इस अभियान में तेजी लाने की दिशा में सक्रिय रूप से शामिल रहेगी। उन्होंने कहा कि स्वच्छता एक दिन का मामला नहीं है बल्कि इसे पूरे वर्ष प्रतिदिन बनाए रखना चाहिए। नड्डा ने देश की जनता और पार्टी कार्यकर्ताओं से आह्वान किया कि वे जब भी संभव हो, इस अभियान में शामिल हों। उन्होंने कहा कि भाजपा हर साल गांधी जयंती पर लोगों को स्वच्छता अभियान में शामिल करते हुए 'सेवा पखवाड़ा' मनाती है।

भारतीयों ने स्वच्छ भारत मिशन को अपना निजी लक्ष्य बना लिया : मोदी

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि आज के इस महत्वपूर्ण पड़ाव पर आज स्वच्छता से जुड़े करीब 10 हजार करोड़ रुपए के प्रोजेक्ट्स की भी शुरुआत हुई है। मिशन अमृत के तहत देश के अनेक शहरों में वॉटर और

सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट बनाए जाएंगे। नमामि गंगे से जुड़ा काम हो या फिर कचरे से बायोगैस पैदा करने वाले गोबरधन प्लांट, ये काम स्वच्छ भारत मिशन को एक नई ऊंचाई पर ले जाएगा। स्वच्छ भारत मिशन जितना सफल होगा, उतना ही हमारा देश ज्यादा चमकेगा। आज से 1 हजार साल बाद भी जब 21वीं सदी के भारत का अध्ययन होगा, तो उसमें स्वच्छ भारत अभियान को जरूर याद किया जाएगा। स्वच्छ भारत मिशन इस सदी में दुनिया का सबसे बड़ा और सबसे सफल जनभागीदारी वाला, जन नेतृत्व वाला जन आंदोलन है।

स्वच्छ भारत अभियान सिर्फ साफ सफाई का कार्यक्रम ही नहीं है, इसका दायरा व्यापक रूप से बढ़ रहा है। अब स्वच्छता संपन्नता का नया रास्ता बन रही है। स्वच्छ भारत अभियान से देश में बड़े पैमाने पर रोजगार भी बन रहे हैं। स्वच्छता ही सेवा 2024 कार्यक्रम में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा, जिस भारत का सपना गांधी जी और देश की महान विभूतियों ने देखा था, वो सपना हम सब मिलकर पूरा करें, आज का दिन हमें ये प्रेरणा देता है। आज 2 अक्टूबर के दिन मैं कर्तव्यबोध से भी भरा हुआ हूं और उतना ही भावुक भी हूं।

आज स्वच्छ भारत मिशन की यात्रा 10 साल के मुकाम पर पहुंच चुकी है। स्वच्छता ही सेवा 2024 कार्यक्रम में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा, बीते पखवाड़े में देश भर में करोड़ों लोगों ने स्वच्छता ही सेवा कार्यक्रमों में हिस्सा लिया है। मुझे जानकारी दी गई है कि सेवा पखवाड़ा के 15 दिनों में देशभर में 27 लाख से ज्यादा कार्यक्रम हुए। जिनमें 28 करोड़ से ज्यादा लोगों ने हिस्सा लिया। निरंतर प्रयास करके ही हम अपने भारत को स्वच्छ बना सकते हैं। मैं प्रत्येक भारतीय का आभार व्यक्त करता हूं।

आदिवासियों के विकास से ही देश मजबूत होगा: मोदी

रांची। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने झारखंड के हजारीबाग में 83,700 करोड़ रुपये से अधिक की विकास परियोजनाओं की शुरुआत की। उन्होंने कहा कि आज मुझे एक बार फिर झारखंड की विकास यात्रा में सहभागी बनने का सौभाग्य मिल रहा है। कुछ ही दिन पहले मैं जमशेदपुर आया था। जमशेदपुर से मैंने झारखंड के लिए सैकड़ों करोड़ की विकास परियोजनाओं का शुभारंभ किया था।आज पूज्य बापू की जन्म जयंती है। आदिवासी विकास के लिए उनका विजन, उनके विचार हमारी पूंजी है। गांधी जी का मानना था कि भारत का विकास तभी हो सकता है, जब जनजातीय समाज का तेज विकास हो। मुझे संतोष है कि आज हमारी सरकार आदिवासी उत्थान पर सबसे ज्यादा ध्यान दे रही है। झारखंड के हजारों गरीबों को पीएम आवास योजना के तहत अपना पक्का घर मिला था। और अब कुछ ही दिनों के भीतर आज झारखंड में 80 हजार करोड़ रुपये से ज्यादा की विकास परियोजनाओं का शिलान्यास और लोकार्पण हुआ है। ये योजनाएं आदिवासी समाज के कल्याण और उत्थान से जुड़ी हैं।

पीएम मोदी ने कहा कि इसका लाभ देश के 5 करोड़ से ज्यादा आदिवासी भाई-बहनों को मिलेगा। झारखंड के आदिवासी समाज को भी इसका बहुत बड़ा फायदा होगा। मुझे खुशी है कि धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान की शुरुआत भगवान बिरसा मुंडा की धरती से हो रही है। भगवान बिरसा मुंडा की जन्म जयंती के दिन यहां झारखंड से ही पीएम-जनमन योजना भी लॉन्च हुई थी। अगले महीने 15 नवंबर को

जनजातीय गौरव दिवस पर हम पीएम-जनमन योजना की पहली वर्षगांठ मनाएंगे। इस योजना के जरिए आज देश के उन आदिवासी इलाकों में भी विकास पहुंच रहा है, जो सबसे पीछे छूट गए थे। आज यहां पीएम-जनमन योजना के तहत भी करीब साढ़े 1,300 करोड़ रुपये के विकास कार्यों का शिलान्यास हुआ है। अभी मैंने यहां धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान कार्यक्रम का शुभारंभ किया है। इस योजना पर करीब 80 हजार करोड़ रुपये खर्च किए जाएंगे। धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान के तहत करीब 550 जिलों में 65,000 आदिवासी बहुल गांवों का विकास करने का अभियान चलाया जाएगा। कांग्रेस ने केंद्र सरकार पर झारखंड के साथ सौतेले व्यवहार का आरोप लगाया और कहा कि प्रधानमंत्री को यह बताना चाहिए कि राज्य की बकाया 1.36 लाख करोड़ रुपये की राशि क्यों नहीं जारी की जा रही है। जयराम रमेश ने पोस्ट करते हुए पूछा कि आज जब प्रधानमंत्री झारखंड में हैं तब उन्हें इन सवालों के जवाब ज़रूर देने चाहिए। वह झारखंड का बकाया 1.36 लाख करोड़ क्यों नहीं जारी कर रहे हैं? प्रधानमंत्री झारखंड के 8 लाख लोगों को घर देने के अपने वादे को पूरा क्यों नहीं कर रहे हैं? वे इंजीनियरिंग कॉलेज कहां हैं जिनका प्रधानमंत्री ने 2014 में वादा किया था?

राहुल की चुनावी यात्रा संकल्प कम और डैमेज कंट्रोल अधिक लग रही

नईदिल्ली। हरियाणा विधानसभा चुनाव के मद्देनजर कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने 30 सितंबर (सोमवार) से 3 अक्टूबर (गुरुवार) तक हरियाणा विजय संकल्प यात्रा शुरू की है। कांग्रेस सांसद की यह यात्रा चार दिनों में राज्य के विभिन्न जिलों से होकर गुजरने वाली है। इसका उद्देश्य स्पष्ट है, विधानसभा चुनावों में कांग्रेस पार्टी की स्थिति मजबूत किया जाए, लेकिन, यात्रा को लेकर किए जा रहे प्रचार और उसकी जमीनी हकीकत में बहुत अंतर है।

ऐसा लगता है कि हरियाणा में चुनाव प्रचार के लिए कांग्रेस के पास कोई ठोस रणनीति नहीं बची है। मतदाताओं को क्या बताना है, इस बारे में पार्टी की दुविधा दो बार चुनावी घोषणापत्र जारी करने की मजबूरी से जाहिर हो गई है। सबसे पहले कांग्रेस ने दिल्ली से घोषणापत्र जारी किया।

फिर जब कांग्रेस के रणनीतिकारों को यह अहसास होने लगा कि भाजपा का घोषणापत्र पहले से ही मतदाताओं को आकर्षित कर रहा है और मतदाता इसमें काफी रुचि ले रहे हैं, तो उन्हें चंडीगढ़ से दूसरा घोषणापत्र जारी करने पर मजबूर होना पड़ा। ऐसी कमजोर रणनीति से ऐसा लगता है कि कांग्रेस पार्टी ने चुनाव से पहले ही आत्मसमर्पण करना शुरू कर दिया है। जिस तरह कांग्रेस घोषणापत्र को लेकर असमंजस में है, उसी तरह लगता है कि राहुल गांधी के दौरे का मकसद भी वह नहीं है जो सतह पर दिखाने की कोशिश की जा रही है। दरअसल, ऐसा लगता है कि इसके जरिए पार्टी आम जनता का ध्यान अपनी कार्रवाइयों से भटकाने की कोशिश कर रही है।

क्योंकि, ऐसा लगता है कि अमेरिका में राहुल गांधी के आरक्षण खत्म करने और दलित नेता कुमारी शैलजा को हाशिए पर धकेलने संबंधी बयान को लेकर पार्टी में घमासान मचा हुआ है और पार्टी को लगता है कि संकल्प यात्रा निकालकर वह मतदाताओं की नजरों में अपने राजनीतिक पाप धो सकती है।

सच तो यह है कि राहुल गांधी ने अपनी हालिया अमेरिका यात्रा के दौरान अपने बयानों से इतने विवाद पैदा कर दिए हैं कि कांग्रेस को उन दागों को धोने में दशकों लग जाएंगे। इसी कारण राहुल के सभी सेनापति अब इस बात की तलाश में जुट गए हैं कि किसी तरह कांग्रेस पार्टी को इस चुनावी भंवर से बाहर निकाला जाए। राहुल के बयानों ने समाज के विभिन्न वर्गों को गहरी ठेस पहुंचाई है। इसी तरह हरियाणा में कांग्रेस की सबसे बड़ी दलित नेता को पहले अपमानित किया गया और जब वह प्रचार से गायब हो गईं तो कांग्रेसियों को चिंता सताने लगी। शैलजा अभी भी हाशिए पर हैं और यह बात प्रदेश के समझदार मतदाताओं से छिपी नहीं है। इसलिए पार्टी संकल्प यात्रा के जरिए लोगों का ध्यान इस हकीकत से हटाने के लिए उनकी आंखों में धूल झोंकने की कोशिशों से बाज नहीं आ रही है। तीसरी बात यह है कि जिन राज्यों में कांग्रेस ने आकर्षक वादे और गारंटी दिखाकर सरकारें बनाईं, लेकिन उन्हें लागू करने में बुरी तरह विफल रही।

खेल
प्रमुख समाचार

बांग्लादेश के खिलाफ टी20 सीरीज नहीं खेलेंगे ऋतुराज

नई दिल्ली। बांग्लादेश के खिलाफ दो मैचों की टेस्ट सीरीज के बाद अब भारतीय टीम की नजर टी20 सीरीज पर है। छह अक्तूबर से शुरू होने वाली तीन मैचों की इस सीरीज के लिए भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) ने हाल ही में टीम की घोषणा भी की थी। हैरानी की बात यह है कि इस टीम में ऋतुराज गायकवाड़ को नहीं चुना गया है। अब एक रिपोर्ट में उनके बोर्ड द्वारा नहीं चुने जाने की वजह का खुलासा हुआ है।

भारत और बांग्लादेश के बीच रविवार से शुरू होने जा रही तीन मैचों की टी20 सीरीज के लिए सूर्यकुमार यादव को कप्तान नियुक्त किया गया है। इस टीम में सीनियर खिलाड़ियों को आराम दिया गया है जबकि युवाओं को मौका मिला है। जिम्बाब्वे दौरे पर दमदार प्रदर्शन करने वाले ऋतुराज गायकवाड़ को इस टीम का हिस्सा नहीं बनाया गया है। वह फिलहाल ईरानी कप में खेलते नजर आ रहे हैं। टाइम्स ऑफ इंडिया की रिपोर्ट के मुताबिक, युवा बल्लेबाज को आगामी टी20 सीरीज के लिए नहीं चुनने के पीछे भारतीय चयनकर्ताओं की एक रणनीति है। एक सूत्र के अनुसार, भारत को इस साल के अंत में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ पांच मैचों की टेस्ट सीरीज खेलनी है। इस दौरान रोहित और जायसवाल भारत के सलामी बल्लेबाज होंगे। उनके बैकअप के तौर पर गायकवाड़ को चुना जा सकता है। सूत्र ने कहा- नियमित टी20 सलामी बल्लेबाज यशस्वी जायसवाल और शुभमन गिल को आराम दिए जाने के बावजूद बांग्लादेश के खिलाफ टी20 मैचों के लिए गायकवाड़ को नहीं चुने जाने पर काफी हंगामा हुआ। चयनकर्ता और टीम प्रबंधन उन्हें ऑस्ट्रेलिया में तीसरे सलामी बल्लेबाज के रूप में चाहते हैं। आपको वहां तीसरे सलामी बल्लेबाज की जरूरत पड़ सकती है, क्योंकि पांच टेस्ट मैचों की लंबी सीरीज के दौरान किसी भी बल्लेबाज को चोट लग सकती है। तीसरे ओपनर के लिए गायकवाड़ से बेहतर कोई और उम्मीदवार नहीं है।

आर्थिक/वाणिज्य/विज्ञान/
प्रमुख समाचार

मोदी ने असम में चार बायो-गैस संयंत्र की आधारशिला रखी

नईदिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने असम में 'ऑयल इंडिया लिमिटेड' द्वारा चार संपीड़ित बायो-गैस (सीबीजी) संयंत्र के निर्माण के लिए बुधवार को आधारशिला रखी। यह कार्यक्रम देशभर में सीबीजी के कई संयंत्रों के लिए नींव रखने के समारोह का हिस्सा था, जिसकी अध्यक्षता प्रधानमंत्री मोदी ने नयी दिल्ली से डिजिटल माध्यम से की। इस कार्यक्रम का उद्देश्य स्वच्छ भारत दिवस के मौके पर एक सतत और पर्यावरण अनुकूल ऊर्जा परिदृश्य को बढ़ावा देना है। असम में ये संयंत्र गुवाहाटी, जोरहाट, शिवसागर और तिनसुकिया में बनाए जाएंगे। मोदी ने परियोजनाओं की शुरुआत करने के बाद अपने भाषण में कहा, ''गाय का गोबर हमारे गांवों में बदलाव ला रहा है। भारत के गांवों में अब सैकड़ों बायोगैस संयंत्र बनाए जा रहे हैं।'' उन्होंने कहा कि पहले गाय के गोबर का प्रबंधन करना ग्रामीणों के लिए परेशानी का सबब था।

47 कंपनियों ने आईपीओ से 16,000 करोड़ रुपए जुटाए

नईदिल्ली। भारत के सेकेंडरी मार्केट में उत्साह लगातार बना हुआ है और बेंचमार्क इंडेक्स रोजाना नई ऊंचाइयों को छू रहे हैं। प्राइमरी मार्केट में भी माहौल गुलजार हैं और गतिविधि में तेजी देखी जा रही है। भारत के प्राइमेरी मार्केट में अब रिटेल भागीदारी में वृद्धि का अनुभव हो रहा है। इसके पीछे का कारण हाई रिटर्न की संभावना और वित्तीय बाजारों तक अब लोगों की आसान पहुंच है। लाइवमिंट की रिपोर्ट के अनुसार, सितंबर में 47 कंपनियों ने सेकेंडरी मार्केट में डेब्यू किया और सामूहिक रूप से 16,152 करोड़ रुपये जुटाए। इनमें से 13 आईपीओ मेनबोर्ड श्रेणी के थे, जिसमें बजाज हाउसिंग फाइनेंस सबसे बड़ा था। इसका आईपीओ आकार 6,560 करोड़ रुपये था। इसके बाद प्रीमियर एनर्जीज़ का स्थान रहा, जिसका इश्यू साइज़ 2,830.4 करोड़ रुपये था। बाकी 34 कंपनियां एसएमई श्रेणी की थीं।

रियल एस्टेट क्षेत्र में इंस्टीट्यूशनल निवेश 1.15 अरब डॉलर पर

नईदिल्ली। जुलाई-सितंबर तिमाही में रियल एस्टेट क्षेत्र में संस्थागत निवेश 45 प्रतिशत बढ़कर लगभग 1.15 अरब डॉलर हो गया है। रियल एस्टेट सलाहकार कंपनी कोलियर्स इंडिया द्वारा हाल ही में जारी आंकड़ों के अनुसार, निवेशक प्रीमियम घरों और कार्यालयों की मजबूत मांग को भुनाने की कोशिश कर रहे हैं। आंकड़ों के अनुसार, जुलाई-सितंबर के दौरान रियल एस्टेट में संस्थागत निवेश 114.87 करोड़ डॉलर रहा, जबकि एक साल पहले इसी अवधि में यह 79.34 करोड़ डॉलर था। कंपनी ने बताया कि कुल रियल एस्टेट बाजार में विभिन्न परिसंपत्ति वर्गों में से कार्यालय खंड ने इस साल की तीसरी तिमाही के दौरान 61.63 करोड़ डॉलर का कारोबार आकर्षित किया, जो कि एक वर्ष पूर्व की समान तिमाही के 7.91 करोड़ डॉलर से सात गुना अधिक है। आवासीय क्षेत्र में कोविड महामारी के बाद मांग में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई है।

रॉयल एनफील्ड ने सितंबर में बेचीं 86,978 गाड़ियां

नईदिल्ली। मोटरसाइकिल बनाने वाली कंपनी रॉयल एनफील्ड ने सितंबर में 86,978 गाड़ियां बेचीं, जो सालाना आधार पर 11 प्रतिशत वृद्धि है। पिछले साल सितंबर में कंपनी ने 78,580 गाड़ियां बेची थीं। रॉयल एनफील्ड ने बयान में कहा कि समीक्षाधीन अवधि में घरेलू बाजार में वाहन बिक्री सात प्रतिशत बढ़कर 79,326 इकाई रही, जो पिछले साल समान माह में 74,261 इकाई थी। कंपनी ने बताया कि निर्यात सितंबर, 2024 में बढ़कर 7,652 इकाई हो गया, जो पिछले साल समान माह में 4,319 इकाई था। रॉयल एनफील्ड के मुख्य कार्यपालक अधिकारी बी गोविंदराजन ने कहा, हमने अपने हालिया पेशकश के कारण सितंबर के महीने में लगातार वृद्धि दर्ज की है। इस साल क्लासिक 350 ने चालकों के बीच अपनी प्रतिष्ठित स्थिति और लोकप्रियता को मजबूत करना जारी रखा है और अच्छा प्रदर्शन कर रही है।

मशीनरी सेफ्टी स्टैंडर्ड्स: छोटे कारोबारियों पर नए नियम का बोझ

डा. अमृत सागर मित्तल

पहले से ही नियमों के जटिल जाल से जूझ रही मैन्युफैक्चरिंग इंडस्ट्री पर केंद्रीय हैवी इंडस्ट्री मिनिस्टरी ने हाल ही में 'मशीनरी एंड इलैक्ट्रिकल इक्विपमैंट सेफ्टी रैगुलेशन 2024' जैसा एक और नया सख्त नियम थोप दिया है। भले ही नए सेफ्टी स्टैंडर्ड का उद्देश्य कारखानों में वैश्विक स्तर की सुरक्षा व्यवस्था लागू करना है, पर पहले से ही ऐसे कई कड़े नियम जमीनी स्तर पर कारगर ढंग से लागू होने की बजाय इंस्पैक्टरी राज को बढ़ावा देते हैं। ऐसे नियम देश के मैन्युफैक्चरिंग सैक्टर, खास तौर पर माइक्रो, स्माल और मीडियम एन्ट्रप्राइजेज (एम.एस.एम.ईज) पर बड़ा बोझ हैं, जिन पर पहले से ही आई.एस.ओ. 9001 स्टैंडर्ड समेत 400 से अधिक नियमों के पालन का दबाव है।

नया नियम मैन्युफैक्चरिंग सैक्टर की 50,000 से अधिक तरह की मशीनरी पर लागू होगा, जिनमें पंप, कंप्रैसर, क्रेन व ट्रांसफार्मर और स्विचगियर जैसे औद्योगिक उपकरण शामिल हैं। इन मशीनरी के निर्माताओं को ब्यूरो ऑफ इंडियन स्टैंडर्ड (बी.आई.एस.) द्वारा निर्धारित कठोर नियम का पालन करना होगा। अगले एक साल (अगस्त 2025) में इस नियम के तय स्टैंडर्ड को पूरा करने में ज्यादातर छोटे कारोबारी असमर्थ हैं क्योंकि पहले से ही वे सीमित संसाधनों में काम करते हैं। नए मशीनरी सेफ्टी स्टैंडर्ड के तहत सभी मशीनरी और बिजली उपकरण निर्माताओं को बी. आई. एस. रजिस्टर्ड स्टैंडर्ड मार्क सर्टिफिकेट लेना होगा, जो तीन सेफ्टी स्टैंडर्ड टाइप ए, बी व सी द्वारा नियंत्रित होगा। टाइप ए स्टैंडर्ड में सभी मशीनरी के लिए सामान्य सुरक्षा दिशा-निर्देश हैं, वहीं टाइप बी में सुरक्षा जरूरतें शामिल की गई हैं, जबकि टाइप सी स्टैंडर्ड

मशीन-संबंधी विशेष सुरक्षा दिशा-निर्देश हैं।

हालांकि यह नियम एक्सपोर्ट के लिए बनाई जाने वाली मशीनरी पर लागू नहीं होता लेकिन ज्यादातर कंपनियां डोमैस्टिक व एक्सपोर्ट बाजार के लिए मशीनें बनाती हैं, इसलिए उनके सभी मशीनरी उत्पादन पर बी.आई.एस. सर्टिफिकेशन लागू होगा। इस नियम से डोमैस्टिक प्रोडक्शन व इंपोर्ट दोनों के लिए बी.आई.एस. की अनुमति अनिवार्य किए जाने से मशीनरी व बिजली उपकरणों की सप्लाई पर असर पड़ सकता है।

भारत में करीब 1.5 लाख मशीनरी उत्पादकों में 90 प्रतिशत छोटे कारोबारी हैं, जिन्हें नए मशीनरी सेफ्टी स्टैंडर्ड से उत्पादन लागत में बढ़ौतरी का सामना करना होगा। इससे मैन्युफैक्चरिंग सैक्टर की एक छोटी इकाई पर भी 50 हजार से लेकर 50 लाख रुपए का अतिरिक्त बोझ पडऩा तय है। इसमें सर्टिफिकेशन, सेफ्टी अपग्रेड, जोखिम मूल्यांकन, कर्मचारी प्रशिक्षण और मशीनरी को तय मानकों के मुताबिक बनाने के लिए तकनीकी जरूरतें शामिल हैं। आर्थिक चुनौतियों के अलावा कई छोटी फर्मों को टैक्नोलॉजी में मदद की जरूरत है, क्योंकि उन्हें नए सेफ्टी स्टैंडर्ड के मुताबिक उन्नत मशीनरी व टैक्नोलॉजी अपनाने के लिए उन्हें बड़े निवेश की जरूरत होगी।

देश के मैन्युफैक्चरिंग सैक्टर के लिए वित्त वर्ष 2023-24 में 25 बिलियन अमरीकी डॉलर की मशीनरी व बिजली उपकरणों में 39 प्रतिशत चीन से इंपोर्ट हुआ। नए नियम के तहत अब मशीनरी व बिजली उपकरणों के इंपोर्ट से पहले ब्यूरो ऑफ इंडियन स्टैंडर्ड की मंजूरी जरूरी होगी। मंजूरी के इंतजार में इंपोर्टेड मशीनरी सप्लाई चेन प्रभावित होने से औद्योगिक उत्पादन ठप्प हो सकता है। अगले एक साल के भीतर नए नियम का पालन करना कारोबारियों के लिए कड़ी चुनौती है। खासकर छोटे कारोबारियों को फंड व तकनीकी संसाधनों की कमी है। टाइप ए सेफ्टी स्टैंडर्ड लागू करने के लिए 3 साल, टाइप बी व सी स्टैंडर्ड के पालन के लिए 5 साल का समय दिया जाए। यूरोपीय व अन्य विकसित देशों में उद्योगों को सेफ्टी स्टैंडर्ड में बदलाव के लिए 5 से 7 साल का समय दिया जाता है। भारत में भी चिकित्सा उपकरणों पर सेफ्टी स्टैंडर्ड की स्वैच्छिक पंजीकरण से हुई शुरुआत बाद में उपकरणों के जोखिम के आधार पर जरूरी सेफ्टी स्टैंडर्ड के तौर पर लागू हुई।

आर.एन.आई.रजि. क्र. CHHHIN/2021/80529, स्वत्वाधिकारी, मुद्रक एवं प्रकाशक- शशांक शर्मा द्वारा मिशन मीडिया प्रा. लि., प्रेस कॉम्प्लेक्स, रजबंधा मैदान, रायपुर (छ.ग.) 492001 से मुद्रित एवं 29/1110, सेवती स्मृति, आजाद चौक, रायपुर (छ.ग.) 492001 से प्रकाशित। संपादक-शशांक शर्मा, मो. 94255-20531.